श्रीः ।

बड़ा भाई।

एक अपूर्व गार्हस्थ्य उपन्यास ।

बाबू गोपालराम गहमरनिवासी

लिखित ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालयमें

छापकर प्रसिद्ध किया।

शाके १८२०, संवत् १९५५

शङ्कर बालक के आग्रह से बहुत दुखी हुआ हठात् एक बात ले मनमें स्मरण होने से चौंक उठा। फिर एक लम्बीसाँस लेकर कहा—"आज साँझ को लेने जावेंगे।"

बालक—"साँझको काहे ! अभी काहे नहीं जाने को कहते।"

शङ्कर ने न जाने क्या कुछ सोचकर कहा—"तुम्हीं काहे नहीं कहते ?"

बालक—"मैं माके वास्ते कुछ कहताहूँ तो बाबा रोने लगते हैं।"

बालक की इस बात से शङ्कर बहुत ही व्यथित हुआ बालक का मुँह चूमकर अपना शोकोपशमन किया। वृद्ध को यह बात बहुत बुरी लगी। बात फेरने के वास्ते वृद्धनेकहा "काहे बाबू ! तुम अपना वह पहरन काहे नहीं पहनते ?"

बालक—"मा नहीं आयेगी तब तक मैं नहीं पहनूँगा"

शङ्कर—"तुम अपना वह पहरन हम को दोगे ?"

बालक—"देंगे। सब पहरन देंगे, लेकिन मा कब आवेगी बता दो"

शङ्कर—"आज तुम्हारे बाबू जायँगे और कल सबेरे लेकर आ जावेंगे."

विश्व०—"तो आज हम किसके पास सोवेंगे?"

शङ्कर—"काहे मैया के पास सोना."

बा०वि०—"बाबाके पास सोये बिना तो हमारा सोना नहीं होगा तुम काहे नहीं माको लाने जाते तुमसे क्या नहीं आवेगी!"

शङ्करकी आँखो का आँसू न थम्हसका रोते रोते कहा—"हमारे जाने से तुम्हारी मा नहीं आवेगी"

शङ्कर को रोते देखकर बालक भी रोने लगा। रोते २ शङ्कर से —"नहीं तुम कहना कि मा तुम्हारे वास्ते हमारा मन कैसा तो है। जबकहोगे जब मा दौड़ी चली आवेगी."

बुड्ढा अब भोंकार पारकर रोने लगा। उसका रोना सुनकर

बालक का रोना थम्ह गया, बालकने झट पट आँसू पोंछकर कहा– "शङ्कर बाबा तुम मत रोवो अब हम मा को बुलाने के वास्ते तुमको जानेको नहीं कहेंगे। तुम को और बाबा को देखकर हम को भी रोआई आती है।

बालकके सन्तोषार्थ शंकर चट शान्त हुआ और मनही मन कहा– "मेरे जाने से अगर वह फिर आवें तो हँसजाने को तैयार हैं। हमारा तो जाने का समय हई है, लेकिन हमारी मालकिन ही बेसमय चली गयी हैं।"

विश्वम्भर ने इस समय कहा–" मा की बात जब हम बाबा से कहते हैं तब वह रोने लगते हैं। इसीसे हम नहीं कहते जब तुमभी रोते होतो तुमसे भी नहीं कहेंगे और जब माकी बात याद आवेगी तब चुप चाप अकेले बैठ के रोलें गे."

अब शंकर को सब्र किसी तरह नहीं आया बालक की बात सुनकर बहुत अकचकाया और बालक विश्वम्भर का मुँह ताकने लगा पाँच बरस के लड़के की ऐसी बुद्धि और यह साहिष्णुता देखकर कौन नहीं अकचकायगा. जबतक शंकर वहाँ था माता के लिये दुःखी होने पर भी बालक उस की बात न कह सका.

सन्ध्या को एक एक करके जगन्नाथ के अनेकन आत्मीय बन्धु और पड़ोसी आजुटे. वह लोग एक से एक बढ़कर धराऊँ पहने हुए हैं. हमारे देशमें बारात करने और पर्व्व त्यौहार लिये एक एक (जोड़ा नहीं Single) कपड़े रहते हैं. बनिये रात तेल में डुबाया हुआ कांकट लगा कपड़ा पहनते हैं, ले बारात के लिये एक (जोड़ी नहीं) किनारी दार कल या धोती और जामदानी का एक कुरता न हुआ तो कोरे धोए नयनसुख की एक मिरज़ई जरूर सन्दूक में बन्द कर रक्ख चाहे बूताम धोबी के घर से टूट गया हो बन्द उखड़ गयी हो, ले जब लग्न आवेगी तभी वह सन्दूक खुलेगी. और लालाजी मिरजई

और बाबूजी कुरता लेकर घर में कोई सीनेवाली न हुई तो टोल महाल की कसीदा काढ़नेवालियों के पास दौड़ेंगे और दाँत निकाल कर कहेंगे, "मनतोरनी! तनी बटन तो लगा देना, मखतुलिया जरा टाँक दे, सिमिरखी! बगल फट गया है छोटा सा पेवन लगा देना." जब वन्द वटन दुरुस्त हुए तो छाते जूते की पड़ती है. कितने छाता कागज के सात तह में लपेटकर ले जावेंगे. जूते का कहीं तल्ला उखड़ा है तो बुधुआ और छितनियाँका घर खुला है.यह सब तर तैयारियाँ कर के जगन्नाथ के घर में बाराती आजुटे हैं. साथ में कुछ कोट पटलून वाले बाबू भी हैं. फर्शपर बैठने से पतलून के चिटकने का डर है. तो कुरसी बेञ्च डँटाये बैठे हैं.आमोद प्रमोद हो रहे हैं. हँसी दिल्लगी के गुलछर्रे उड़ रहे हैं. इस आनन्दाम्बुधि में जगन्नाथ ही निरानन्द बैठे हैं. दूल्हे का पहनाव पहनकर जगन्नाथ आज खुशी की हाट में विषन्न मुख बैठे हैं. यह वेढब विषन्न मुख जगन्नाथ के आत्मीय ठठोल छेदीलाल को अच्छा न लगा. आप बोल उठे— "काहे भाई आप का शरीर आज अच्छा नहीं है क्या? आप तो दूल्हा हो जाना ही पड़ेगा लेकिन् आप न जावँ तौ भी हरज नहीं होगा हम आप के प्रतिनिधि होकर चले जायँगे."

बारातीमिरज़ाजी ने हँसते २ कहा—"तो अब देर काहे की जो कायम मुकाम होकर जावे उसके लिये विधान या लग्न मुहूर्त उपाध्या जीसे विचारवालो."

मिरज़ाजी भी जगन्नाथ के स्नेहियों में से थे मशहूर इतने कि मिरज़ा जी कहते ही सारा शहर दाढ़ी मोंछों में खिजाब लगाने वाले मिरज़ा जी को पहचान लेता था. लेकिन् नाम अभी तक शहर के दो चार बढ़ेबूढ़ों को मालूम हो तो हो. मुरदे को भी एक [illegible] हँसा देने वाले उसी मिरजा जी ने जब दाढ़ी कँपाकर यह [illegible] बात तो मजलिस की मजलिस हँस पड़ी.

ठाकुर उपाध्या पास ही बैठे थे. टुमरी सी सूरत इसवक्त माफ

उँगलियों पर कुछ गिन रहे थे उन के कुछ कहने के पहले ही छेदीलाल आलाप उठे—"भई ! हम पुरोहित उरोहित से लग्न साइत या राय लेने नहीं जावेंगे. गुड़ का फैसला चींटा क्या करेगा." हमारी जगह पर वह आप प्रतिनिधि हो बैठेंगे तब तो हम दोनों दीन से गये. एक तो वह पुरोहित हैं दूसरे घर भर उन्हें मानते हैं फिर उन की तो गोटी लाल हो जायगी. ऐसा हमें नहीं चाहिये.

पुरोहित जी कुछ अन्य मनस्क हुए इन के मन में एक पुरानी बात याद आयी. इतने में मिरजा जी फिर उचक बैठे और तपाक से पूछा—"क्यों पाधाजी! इस में कायम मुकामी चल सकती है?"

छेदी ने कहा—"काहे नहीं चलेगी? इन के यहाँ तो कोई बात अचल है ही नहीं, व्यवस्था के अनुसार इन को दक्षिणा दी बस छुटी हुई यह तो दक्षिणा के भूखे हैं"

पुरोहितजीने कहा—हरे कृष्ण ! हरे नर्मदे ! भला इस बात में प्रतीनिधि व्यवस्था कौन पण्डित देगा?"

छेदीलाल ने कहा—"उपाध्या ! हम भी एक रुपये की बात नहीं कहते दो चार सौ की व्यवस्था को कहते हैं." दड़बे का दड़बा ठठा उठा उपाध्याजी ने जगन्नाथ से कहा—"भैया! अब तुम देर मत करो जल्दी घर में जाकर जामाजोरा पहन आवो.

जग०—"उपाध्याजी जामा जोरा का क्या काम है जैसे सब [illegible] वैसे मैं भी चलूँगा. इस उमर में दूलहा बन के हम से जाते नहीं बनेगा."

उपाध्याजी ने कहा—"नहीं भैयाजी ! यह एक पुरानी रीति चली आती है. यह कोई शास्त्र की विधि नहीं है तौ भी बरका कोई चिह्न बिना रक्खे कैसे बनेगा."

[illegible]लाल—"उपाध्याजी चिह्न टिह्न का क्या काम है हम लोग या [illegible]कर बैठ जायँगे और कन्या आकर अपना चुन लेगी. आप [illegible] व्यवस्था कीजिये दक्षिणाकी कुछ चिन्ता मत करना सन्त[illegible] चाहे [illegible]शकर दिया जायगा."

उपाध्याजी ने हँसकर कहा—"तो क्या दमयन्ती का स्वंवम्बरै होगा, हा हा हा हा !!!"

इतने में कन्या वालों के घर से ठाकुरप्रसाद ने आकर हाँफते २ कहा—"आप लोग अब देर क्यों कर रहे हैं।"

छेदीलाल ने हाथ जोडकर कहा-"अगुआजी को जय गोपालजीकी" ठाकुरप्रसाद उस समय चञ्चल से थे उन की तरफ देख कर कहा—"अरे भाई छेदीलाल! जय गोपालजी की विदूषकजी."

फिर जल्दी से जगन्नाथ को अलग ले गये, अब यहाँ हम को छेदीलाल का कुछ परिचय देना आवश्यक बोध होता है. बातों से तो इन का भाँड़पना पाठक समझही गये होंगे. यह जगन्नाथ के ममेरे भाई थे, इस कारण टोल महाल के लोगभी उन को भैया २ कहके पुकारा करते थे. अवस्था में जगन्नाथ के समान ही थे. बड़ा होकर भी छोटे भाई से ऐसी दिल्लगी करने वाले छेदीलाल बड़े हँसोड़ थे जब देखो तब हँसता चेहरा. शहरभर में यह बात फैल गयी थी कि छेदीलाल को किसी ने कभी चिन्तित वा दुःखी नहीं देखा.

जब जगन्नाथ पालकी पर चढ़े तब छेदीलाल ने कहा—"हमको भी चढ़ा लो हम सहबाला होकर चलेंगे."

ठाकुरप्रसाद जो पास ही खडे थे चट बोल उठे—"छेदी भैया, सहबाला होने वालों को कनेठी खाना होता है जानते हो?"

छेदीलाल ने कड़क कर कहा—"कोमलाङ्गियों की कनेठी की हँसी से सहलेंगे अगर एक छोटीसी उनमें से पाजायँ."

द्वितीय परिच्छेद.

बेटीवाले दीन दयालसाहु एक धनी आदमी हैं। एकलौती पुत्री गुलाब के व्याहोत्सवमें उनका घर से सजा गया है. निमंत्रण में बहुत से भद्र पुरुषों क है. सूर्य्यास्त होते ही दूल्हे सहित बारात पहुँच गयी

नमें पहले एकाधबूँद कुछ भी हो! बर बात इसवक्त माफ

चेपड़ गयी "आइये, बैठिये, नौरङ्गवा तम्बाकू भर लारे. रमटहला ! नये घरसे गुड़ठा लाकर अहरा लगा दे. अरे भोला ! चाभी लेआ कोठरी में से सब गुड़गुड़ी लाकर रख दे."

इत्यादि वाक्यों से चहुँओर शोर होने लगा. दूल्हा निर्दिष्ट स्थान में बैठा. हमारे सहबाला हँसोड़ छेदीलाल भी "हम सहबाला हैं" कहते हुए कूद कर जा बैठे हैं. इतने बड़े को सहबाला होते देखकर कन्या पक्ष की बालक मण्डली में हास्यध्वनि गूँज उठी. उन्हों ने बारात में किसी बालक को न देख कर छेदीलालही को घेर लिया उन में से एक ने हँसते हँसते कहा—"काहे सहबालाजी तुम्हारी उमर कै बरस की है ?"

छेदीलाल ने बर के पाकिट से घड़ी निकाल कर कहा—"उमरमेरी आठ बरस नव महीना सात दिन छ घंटा और तेरह मिनट की है."

बालक मण्डली से फिर ठहाका हुआ. छेदीलालने पूछने वाले से कहा "तुम कितने बरस के आये हो यार. ?"

उस ने हँसते हँसते कहा—"क्यों हम तो दश बरस के हैं. तुम हम से भी छोटे हो क्या?"

छेदीला०—"अच्छा भाई पहले तुम अपना दाँत दिखावो तो हम जानेंगे इसी से अंदाज़ा हो जायगा कि कितने बरस के हो?"

वैस बमेगा," कुमति बालक ने दाँत दिखाया. दोनों दल के लोगों पर उपाधी के कपकपी आगयी आदि से अन्ततक दाँत निकाल कर आती है. लगे। लड़का बहुतही लज्जित हुआ। इतने में कन्या पक्षीय चिह्न बिने बालक ने आगे सरक कर कहा—"ओह उमर पूछके क्या बोलि कुछ पढ़ने लिखने की बात करो तब देखो कौन हारता है" या धाकर कहा—" ठीक कहते हो भाई उमर पूछके क्या धोए नवस्थोंको तुम्हें लड़की देनाहै नहीं कि उमर पूछते हो, चाहे [शकर पढ़ने ही की बात चले कहो तुम क्या पढ़ते हो?"

जब ... कहा—"हम तो अङ्गरेजी पढ़ते हैं रायलरीडर नम्बर

थर्ड, यङ्ग चाइल्डूग्रामर और ब्लाकमेंन जागरफी जल्दी खतम होने वाली है। तुम क्या पढ़तेहो?"

छेदीलाल ने तड़ाक से कहा—"हम तो प्रेम नम्बर का रीडर दिल्लगी का रायल ग्रामर, और खचाखचीकी जागरफी पढ़ते हैं"

छेदी के जबाव से फिर सब के दाँत निकल आये। अब की हँसी से बालक मण्डलीमें सन्नाटा खींच गया। इस अधेड़ बालक छेदीलाल ने सब लड़कों को परास्त किया, लेकिन हमारे छेदीलाल को चुप चाप बैठना तो कैदखाने से बढ़कर है भला उन्हें कब यह सन्नाटा सहा जाता है। आपने फिर छेड़कर कहा—"क्यों भाई! अब पढ़ने लिखने की बात न छिड़ेगी?"

इतना सुनकर कन्यापक्षयि एक युवक ने कहा—"जब आप सींग उखाड़कर बछड़ोंमें, मिलने आये हो तब यह आपसे कैसे पार पावेंगे.?"

छेदी—"अरे तुम लोग तो तबेलेहीमें लतहाव करने लगे देखो लड़के यह तुमको बछड़ा कहकर गाली देते हैं."

छेदीलाल के जबाव से वह युवा भी लज्जित हुआ। अब वह और कुछ नहीं कहसका। लेकिन छेदीलाल तो चुप रहनेवाले पात्र नहीं हैं, चट वर से बोल उठे—"ए भैयावर! अब आवो हमी तुम लिखने पढ़नेकी बात करें."

जगन्नाथ चुप चाप बैठे चिन्ता कर रहे थे। छेदी लाल की हँसी दिल्लगी उन्हें आकर्षित न करसकी। इस समय उनके मनमें पहले व्याहकी बातें एक २ करके आरही थीं वह रह रह कर एकाधबूँद आँसू के भी पोंछ रहेथे। छेदी लाल की बात का उन्हों ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। फिर छेदीलाल की दीदी ने—"जानते हो! वर बात नहीं करता तो कनेठी खाता है. उस युवती

जगन्नाथ ने धीरे से हाथ जोड़कर कहा—"भाई इसवक्त माफ करो हाथ जोड़ते हैं."

छेदीलाल ने भी धीरे से कहा—"अजी! हमको हाथ मत जोड़ो जिसको हाथ जोडना चाहिये वह तुम्हें थोडी देर में मिलेंगी. उन्हीं के हाथ पैर पड़ना. मैं इस वक्त चुप नहीं रह सकता इसकी कोई तदबीर करो नहीं तो पेट फूलने से मर जाऊँगा."

इतने में ठाकुरप्रसाद पहुँचे, उन्हों ने कहा—"काहे भैया छेदीलाल! अब तो कुछ चाल चलबल नहीं मिलता."

छेदीलाल ने लम्बी साँस लेकर कहा—"भई! मन लायक आदमी नहीं पाते."

इस बात से ठाकुरप्रसाद को भी बड़ा आनन्द हुआ था वह आनन्द स्रोत अच्छी तरह चलता लेकिन इतने में शरबत पानी और छोटी हाजिरी का सामान पहुँचा सब लोग इस में तखड़ बखड़ होगये. हठात बाँध तोड़कर मानो नदी मर्य्यादा से बाहर हुई. छेदीलाल की जीभ ने भी दूसरा काम पाया.

तृतीय परिच्छेद।

बलिदान का पशु जैसे इच्छा न होने पर भी बलिः स्थान को लाया जाता है. जगन्नाथ भी उसी तरह मण्डप में लाये गये.

देखते देखते व्याह का काम होने लगा. सब गोत्रोच्चारादि क्रिया समाप्त हुई पाणिग्रहण शुभ मुहूर्त में हुआ या अशुभ लग्न में परमेश्वर जाने आगे का फल आगे कहेंगे.

वर जब कोहबरमें लाया गया तब और ही गुल खिला. स्त्री मण्डली में आनन्द की धूम पड़ गयी बहुत सी युवतियाँ बहुमूल्य वस्त्रालङ्कार विभूषिता होकर सामने आयीं. वर देखते ही सब के हिये की कली खिल ठीक कहस आनन्द धूम में केवल वर ही निरानन्दथा. हें लड़की दे

कोहबर आज युवती, मा. और वृद्धाओंसे परिपूर्ण है. तरुणी गण जगन्नाथ को घेरे बैठी हैं. पास में दो एक बालक बालिका नींद

में पड़ी हैं. उन के बाद मौढ़ा और सब के पीछे वृद्धा गण का स्थान है. युवतियोंमें जो सुन्दर और नानाविधि भूषण वस्त्र विभूषिता हैं उन्हीं को इस थियेटरमें फर्स्ट क्लास की कुरसी मिली है. और यहाँ उन्हीं की विशेष मानमर्य्यादा है वह मुसकुराती हुई पान खाकर ब-हादुरी ले रही हैं. मौढ़ा बात ही करने में नाकसिकोड़ रही हैं वहाँ वृद्धाको कौन पूछता है वह दो नाव पर पाँव रखकर टँगफटाव में पड़ी हैं. हाथमें जप की माला और मन में जीने की इच्छा दोनों तैयार हैं.

युवतियों का यौवन उतार पर है इसी कारण वह गर्विता बनी बैठी हैं मौढ़ाओंमें भी किसी किसी को ज्वार की खिंचावट बाकी है, लेकिन वह बहुत स्फीता और गर्व्विता नहीं हैं । जेठ की सूखी सरिता के समान धीरे २ बह रही हैं। और वृद्धागण का तो ज्वार न भाटा सब समतल है काहे बर के सुख दर्शनकी लालसा रोकना स्त्रियों की सामर्थ्य से बाहर हो पड़ता है इसीसे आज वह सब बुढ़ियाभी जिनके बगल के बाल तक स्याह नहीं हैं घूँघट लटकाई कर तीसरे दरजे में जा बैठी हैं। छोड़ो

बातें कोहबरमें कैसी होरही हैं इस का हम परिचय देते एक मौढ़ा ने वहाँ पहुँचतेही कहा—"अरे मर बौरही का कर रूरैं तो देखो न बर चुप चाप बैठा है ऐसे ही कोहबर गुलजार हो:

एक युवती ने उस का उत्तर दिया—"का करें बहिन हम लों! तुम बहुत कह चुकीं बर एक बातका भी जबाब नहीं देते।" कोह-

उसी मौढ़ा ने कहा—" जब बर से बात नहीं कहला सकती सब घेरे बैठी काहे हो!" बर

दूसरी युवतीने कहा हम सब तो रेखा दीदी हार गयीं अब तुम ही से बने तो बुलावो-" अब रेखा दीदी ने मौढा होनेपर भी फर्स्ट क्लास में जगह पाया; लेकिन वह उस युवती की कुरसी के योग्य है वा अयोग्य इसकी मीमांसा हम नहीं करना चाहते. क्योंकि थोड़ासी बात चीत पर ही रेखा दीदी को लोग अच्छी तरह से पहचान जायँगे.

रेखा ने बर के पास की पाँती में बैठते ही छेड़ा "कहो बबु- आवर! भला कन्या तो पसन्दकी मिली है न!"

बर के मुँह से कुछ जबाब नहीं वह चुपचाप सिर झुकाये बैठे हैं. मन में बहुत सी बीती बातें एक एक कर के याद आरही हैं. एक बार और इसी तरह उन को युवतियों के घेरे में कोहबर बास करना पड़ा था यह बात स्मरण होकर उनको व्याकुल कर रही है. किन्तु रेखा दीदी तो बर के मन की बात जानती नहीं उन्हों ने अपने पहले सवाल का जबाब नपाकर फिर कहा—"ऐसा गम सुम बैठने से काम नहीं चलेगा. एक बार कन्या को गोद में लेकर तो बैठो बर बबुआ!"

इतना कहकर रेखा कन्या को उठाने चली जिस युवती ने रेखा सी अपनी मण्डली में जगह दी थी उसने नाक भौं चढ़ाकर कहा रेखा दीदी छिः यह कैसी भलमनसतकी बात है?"

रेखा ने उस के उत्तर में उलट कर कहा—"अरे बस रहे दे रहे दे भलेमानसिन बन के बैठी है. कोहबर में बरसे हँसी ठट्ठा करने जाता है और भलमनसी का बाना बाँधे फिरती है. यहाँ कैसी हँसी दे री होती है यह बात तुम गँवार सब क्या जानो."

समाए कहते २ रेखिया ने बलात कन्या को उठाकर बर की गोद मेश्य बैठा दिया। सारी मण्डली खिलखिला उठी। साथही कन्या के मल अङ्ग स्पर्श से बरका हृदय भी काँप उठा। बहुत देर तक म.गन्नाथ दूल्हन को गोद में न रख सके। थोड़ेही समय में धीरे २ नीचे उतार कर कहा—" अच्छा होचुका बस करो".

यही छोटा सा वाक्य बर की पहली बात थी। बर की बात का सुननाही आज इस स्त्री समाज को इस समय दुर्लभ था वह बात अब रेखा के बल से सहज ही प्राप्त हुई। मानो सिकते में से तेल निकला, गधे के सींग फूटी, सूरज से सुधावृष्टि हुई। चकोर

ने बरफ उगला। अरे आनन्द हँसी के विद्युत रेखा की भेरा रमणी मण्डल के आकाश में इधर उधर खेलने लगी .

रेखा विजय पाकर प्रसन्नता के मारे दूने उत्साह से बोल उठी— " न जाने उस जन्म में कितनी तपस्या करके ऐसी पार्वती सी कन्या पाये हो। ठीक जोड़ तोड़ परमेश्वर ने मिलाया है । अब मुँह खुला आवो कुछ खुशी मनाकर कोहबर गुलजार करो बबुआ, बड़ी देर से तुम्हारी बात सुनने को सब बैठी हैं ".

जगन्नाथने नम्रता पूर्व्वक कहा—"आप लोग खुशी मनाइये लेकिन मुझे मुआफ़ करना होगा मैं बड़ा अभागा हूँ कि आप लोगों को खुश नहीं कर सका." उसी रेखा की आश्रय दायिनी ने कहा—"आप की बात सुनकर हम लोगों की छाती जुड़ गयी। अब दया करके हमको यह बतलावें कि अभागा क्यों होरहे हैं साफ २ कहिये"

फिर एक हँसी की ध्वनि उठी बर ने लजाकर शिर नीचे कर लिया । फिर रेखाने कहा—" अरे! यह सब बातों की सफाई और चिकनाहट दूर करो कहिये सुनिये और आप मैं की बात छोड़ो ऐसी बातोंसे कोहबर गुलजार न होगी."

बर ने कहा—"आप लोगों को आप कहकर आदर न करैं तो क्या कहें?"

तब एक नोकदार कटाक्ष छोड़कर उसी युवतीने कहा—"भई! तुम दुधपिहुआ बच्चा तो नहीं हो कि तुम्हें हम यह सिखलावें कि कोहबरमें कैसे बात करोगे."

रेखा दीदीसे अब न रहा गया फिर एक अश्लील बात कहकर आप अखाड़ेमें उतरीं उनकी सब बातें कहते सभ्यता लेखनी पकड़ लेती है नहीं सब साफ खोलकर बता देते। फिर रेखादीदीने कहा— "अच्छा कुछ नहीं तो एक गीत गावो."

जग०—हमारी तबीअत अच्छी नहीं है। बात करके आपलोगोंको खुश नहीं करसका तो भला गीत गानेकी कहाँताब है?"

रेखा—"गीत नहीं गावोगे तो हम कहे देती हैं कनेठी खावोगे."

इतनेमें एक बारह बरसकी उठती बालिका ने कहा—"हाँ रेखा दीदी कनेठी दो तो बर सूर से बोलेंगे नहीं तो बेसुरे हुए जाते हैं."

इस बालिका की बात सुनकर जगन्नाथ ने एक बार उसकी ओर देखा ! बालिका भी आँखे चार होते ही हँस पड़ी। दूसरी युवती ने कहा—तूतो जोड़की है रेखा काहेको कनेठी देगी। तेरे कोमल हाथों की कनेठी तो बरको अच्छी और मीठी भी मालूम होगी."

उस प्रथम वक्ता युवती ने कहा—"अपना कनेठी मनेठी अभी रहने दो पहले वर का जीव अच्छा नहीं, उनसे हाल पूछने दे। अच्छा तो भला आज इस हँसी खुशीके दिन तुम्हारा शरीर अच्छा काहे नहीं सो तो कहो."

ज०—"देखो सच्च बात तो यह कि मैं अपनी पहली स्त्री को अब [illegible] नहीं भूल सका हूँ उसकी बातें आज याद आ रही हैं."

जगन्नाथ [illegible] और कुछ न कह सके. इतनाही कहते २ आँसू रोक लिया. रेखा ने क[illegible]हा—"तो अब वह मरगयी उसकी फिकर करने से लौट थोड़े आवेगी. उ[illegible]सके वास्ते आज की खुशी का दिन मिट्टी करना अकलमन्दी नहीं है. [illegible]एक मरी है उस से हजार गुना बढिया दूसरी पाये हो तुम मर्द आद[illegible]पी स्त्री का मरना और जूतेका फटना दोनों बराबर है आज मरी [illegible]ण्कान पर जाकर नयी जोड़ी पहन आये. तुम कुछ स्त्री थोड़े हो कि पुरुष मरा तो फिर होने का नहीं."

हमारी परिचिता उसी युवती ने कहा—सुनो सुनो रेखादीदी ठहरो. वह पहली स्त्री थी पाँच बरसतक उसके साथ घर गृहस्थी चली है फिर याद काहे नहीं आवेगी, हजार हुआ तो क्या स्त्री थी, तुम्हीं मरजाव और तुम्हारे बाद भूलकर काका दूसरी शादी करें तो तुम्हें अच्छा लगेगा?"

रेखादीदीने कृत्रिम क्रोध दिखाकर कहा—"अरे मैं काहे को

मरूँ तेरी सौत मरे. और मेरे मरने पर तेरे काका का व्याह होगा अरे उस बुढ़वा को भला कौन पूँछेगा?"

युवती ने हँसकर कहा—"काकाजी हमारे कुलीन हैं उन के वास्ते कन्या बहुत मिलेंगी। मैं उन्हीं के जोड़ की खोज दूँगी!"

रेखाने वास्तविक क्रोध प्रगट करके कहा—"अरे तब तो मैं पिशाचनी होकर उसी के कपारपर बैठ जाऊँगी।"

रेखा दीदी की यह बात सुनकर सब हँस पड़ीं, किन्तु जगन्नाथ के मन में बड़ी शङ्का हुई। स्त्रियों में सौत का ऐसा विद्वेष देखकर जगन्नाथ व्याकुल हो उठे. मन में सोचने लगे—स्त्रियोंमें मरनेपर भी इस तरह सौत का वैमनस्य प्रबल रहता है!"

इधर ऐसीही बातों में सबेरा होते देख कर गाना जाननेवाली स्त्रियाँ अधीर हो पड़ीं। उनका बडी श्रद्धा औ परिश्रम का चुना और याद किया हुआ गीत आजामिट्टी होने चला। निदान उनमें काना फुसी कर के यह प्रस्ताव पास होगया कि बरके गाने की अपेक्षा न कर के रमणी मण्डल से ही गीत प्रारम्भ हो। अब क्या देखतेही-देखते कोहबर मानो नॉवेल्टी थिएटर का रङ्गमञ्च हो उठा, गान-तान और उनका थिरकना देखकर जगन्नाथ अबाक होगये। उन थिएटरों में दर्शक और दर्शिका गण नाटक देखने जाकर और का नृत्य देखते हैं यहाँ दर्शक और दर्शिकाही बर के आगे थिरक थिरक अपना गुण दिखाने लगीं। रात बीत गयी, सबेरा हुआ, किन्तु इन गान प्रिय रमणियों की तृप्ति नहीं हुई.

चतुर्थ परिच्छेद।

दूसरे दिन सबेरे आठ बजे नव परिणीता स्त्री सहित जगन्नाथ अपने घर को चले और उचित समयपर आ पहुँचे बालक विश्वम्भर बैठे २ मा की प्रतीक्षा कर रहाथा.पिता का आना सुन दौड़कर बाहर दरवाजे पर आ खड़ा हुआ. पिता को सवारीपर देखकर आप भी उसपर जा पहुँचा और कहने लगा—"बाबा मा कहाँ है."

जगन्नाथ ने सैन से एक अवगुण्ठनवती रमणी को दिखा दिया. बालक विस्मित नेत्र से पिता की ओर देखने लगा. प्रभो! क्या यही विश्वम्भर की मा है? विश्वम्भर की मा होती तो प्राण से भी प्यारे विश्वम्भर को सामने अकबकाते देखकर निश्चिन्त बैठी रहती? तौ भी बालक ने कातर स्वर से पुकारा–मा, मा–मा!

कुछ भी उत्तर नहीं मिला, अब बालक को पूरा विश्वास हो गया कि वह अवगुण्ठनवती उस की मा नहीं है. फिर निराश और विस्मित नेत्र से पिता की ओर देखकर कहा–बाबा! यह तो मा नहीं है! मा को नहीं लाये?"

इतना कहकर बालक रोने लगा. जगन्नाथ से अब नहीं रहा गया. बालक को गोद लेकर आँसू पोंछते हुए सवारी से उतर पड़े. पिता को रोते देखकर बालक विश्वम्भर के रोने की मात्रा भी बढ़ गयी. जगन्नाथ पुत्र को छाती से लगाकर रोते हुए अपने शयनागर को चले गये.

आयी हुए आत्मीया स्त्रीगण हर्ष से कन्या उतारने चलीं जगन्नाथ की माता भी आँसू पोंछती हुई नयी पतोहू को डोली से उतारा ने आपी किन्तु वर पुत्र को न पाकर उद्विग्न हुई बर कन्या के साथ उतार कर ले जाने की चिर प्रचलित लौकिक प्रथा टूटते देखकर स्त्रियोंमें बड़ा कोलाहल हुआ लेकिन उस समय जब जगन्नाथ आँसू बहाते हुए भीतर चले गयेथे उन से कन्या के साथ होने को कहने का साहस किसी को नहीं हुआ। इतने में छेदीलाल आँगन में पहुँचे और बर का मौर पहन. कर स्त्रियोंके पास आखड़े हुए.

सब स्त्रियों को पुकारकर कहा–"कुछ हरज नहीं कन्या को लावो वर के बदले में हम साथ चलकर देवता बाबा के पाँव पड़ेंगे."

ऐसे दुःख के समय भी छेदीलाल की बात सुनकर जगन्नाथ की मा की हँसी नहीं रुकसकी। और स्त्रियाँ भी हँस पड़ीं। एक युवतीने कहा काहे छेदीभैया कन्या के साथ गठ बन्धन करके पाँव पड़नेही की साध है या कन्याकी भी इच्छा है?"

छेदीलालने हँसते २ कहा—"गठ बन्धन करने की बहुत और कन्या की भी है श्रद्धा क्या हमतेरे दादा का वेगार आये हैं मा की लौंड़ा!"

वह स्त्री जगन्नाथ की वहन लगती थी, उसने कहा "भैया व्याह कर लाये हैं। खाली यहाँ गठबन्धन करके कन्याका दावा करनेसे क्या होगा। भैया थोरू छोड़ देगे."

छेदीलाल—"अरे चाहे पूरा हक नहीं कुछ तो दावा बहाल होगा सोरह आना नहीं तो आठे आना सही । हिस्सा लगाके रक्खेंगे"

स्त्रियाँ—"अरे कहीं कन्या भी हिस्सेमें रक्खी जातीहै."

छेदी—" काहे जब सब में हिस्सा लगता है तो कन्या में हिस्सा काहे नहीं लगेगा। मा में हिस्सा होता है, बहन में होता है। तो बीबी में काहे नहीं होगा। नहीं होगा तो मैं दावा करके सोलह आना मालिक बन बैठूँगा, नदिया शांतिपुर और काशी से पण्डितों का विधान बटोर लाऊँगा। कैसे हमारा हक नहीं मिलेगा?"

छेदी की बात सुनकर सब स्त्रियाँ ठठाकर हँस पड़ीं जिस छेदी लाल के आगमन से चिता पर का मुरदा ठठा उठता है उस छेदी की बात से इन विषादमयी रमणियों का प्रसन्न होना कौन आश्चर्य की बात है इनके पधारतेही सब दुःख दुर्दिन और सोच बिषाद न जाने कहाँ चला गया। सब की सब आनन्द समुद्र में हिल्लोरे लेने लगीं। जगन्नाथ की उसी भगिनी सम्पर्किया स्त्रीने हँसते २ कहा—" छेदी भैया! लेकिन् जब कन्या पसन्द करे तब तो!"

छेदी ने भी हँसते २ कहा—"हाँ बहन बात तो ठीक कहती हो। अब कन्या के पसन्द की बात पूछना चाहिये".

इतना कहकर वही वर की पाग धरे छेदीलाल हिलते डूमते कन्या के पास आये। कन्या लज्जा के मारे थथम गयी थी। छेदीलाल ने कहा—" देखो सुन्दरी! तुम्हारा अधम बर तो न जाने तुम्हें छोड़कर कहाँ चलागया है. मैं उसी की पाग शिरपर रखकर आयाहूँ.

जगह्‌ बास्ते ही ऐसी तकलीफ उठाकर तुम्हारे पास खड़ा हुआ हूँ बालका सब किया है अब एक छोटीसी बात बाकी है वह यह कि विवाह करना यह एक तुम्हारी जौ भर जीभा हिलाने से हो सकता है। अगर ऐसा नहो तो कहो स्वयंवर नेवत दें। अगर जीभा हिलाने में लज्जा जान पड़े तो गन्धर्व विवाह ही सही। अगर इतने पर भी राजी नहीं तो राक्षस विवाह तो धराधराया ही है। अगर कहो तो उसकी क्रिया अभी से शुरू कर दें।"

इतना कहकर छेदीलाल कन्या की चादर का कोना पकड़ने को हाथ बढा चुके थे कि शङ्कर पहुँचा उस ने झिड़ककर कहा—"अरे! छेदी भैया यह क्या करते हो हर घड़ी हँसी दिल्लगी अच्छी नहीं होती.'

छेदी—"अरे! तू कहाँ से आया रास्ते में तुझपर दीवार क्यों न गिर गयी। मैं व्याह करने आया था यहाँ द्रौपदी का चीर हरण होने लगा तो लो अब जाते हैं."

इतना कहकर पगड़ी पटक दी और छेदीलाल जल्दी जल्दी चलते हुए! स्त्रियों ने शङ्कर से कहा—"जगन्नाथ भैया को भेज दो बहुत देर हुई यहाँ हम लोग उनके वास्ते कबतक खड़ी रहेंगी."

शङ्कर उनके कहे अनुसार जगन्नाथ को लेने चले आँसू धीरे से पोंछा लेकिन पोंछने से वह दुःख का झरना कहाँ बन्द होता है पोंछता जाताहै और धारा बहती जाती है किसी तरह रोककर शयनागार में पहुँचा तो देखा वहाँ भी जगन्नाथ आँसू से अबतक छाती भिगो रहेहैं। बालक बिश्वम्भर का रोना न जाने क्यों थम्ह गया था। वह शंकर को देखते ही यह कहकर चिल्ला उठा—"शङ्कर पाँड़े! हमारी मा कहाँ है? मा क्यों नहीं आयी? मेरी बात क्या तुमने मासे नहीं कही?"

शङ्कर बालक की बात का क्या जबाब देगा सो स्थिर न कर सका। और उसवक्त कुछ कहने की उसे क्षमता भी नहीं थी। उसने

उस समय विश्वम्भर को गोद में लिया और जगन्नाथ को बहुत कुछ आग्रह कर के लोकरीति पालन के लिये आँगन में भेजा.

रोते हुए बालक को भुलाने के लिये शङ्कर ने बहुत सी तदबीरें कीं किन्तु एक भी न चलीं बालक हरबार यही कहता रहा—"मा काहे नहीं आई शङ्कर !"

शङ्करसे और कुछ तो जवाब देते न बना इतना कहा—"तुम्हारी नयी मा तो आयी है बीसू"—"नयी मा" बालक के हियेको भी धका देनेवाला हुआ। विश्वम्भर ने उसी समय कहा—"हम नयी मा नहीं चाहते हमको अपनी मा चाहिये."

बालक विश्वम्भर यह कह कर मचल गया। शङ्कर उस का मचलना देखकर अवाक हुआ अबोध बालक की इतनी समझ देखकर कौन अवाक नहीं होगा.

पञ्चमपरिच्छेद ।

आज जगन्नाथ की सुहाग रात्रि है. शयनागार इन्द्रमहल हो रहा है. रोशनी जगमगा रही है.पुष्प गन्धि और लवेण्डर तथा देशी इत्र फुलेलसे घर महमह हो रहा है.सजी सजायी सुख की कोठरीमें दश बजते२ जगन्नाथ ने आकर सुख शय्या पर शयन किया. आज के दिन और लोग जैसे आनन्द में डूबते उतराते हैं जगन्नाथ की गति वैसी नहीं है. आज भी उन के मुहँ पर विषाद की छाप लगी हुई है। पास में नव परिणीता भार्य्या लेटी है.

जगन्नाथ सुखसेजपर चुप चाप पड़े हैं,नींद नहीं आती सारा घर सुनसान है. हवा भी डर के मारे सनसनाकर नहीं आती ढिठाई का पहाड़ सिर पर रक्खे घडी टक टक कर रही है.

जगन्नाथ का उधर कुछ भी ध्यान नहीं है क्योंकि वह इस समय गम्भीर चिन्तामें निमग्न हैं. इतने मे घड़ी घन घनाने लगी टन टन कर के शब्द होने लगा जगन्नाथ ने गिनकर कहा "अरे बारह बज गये"

अब वह आगें चिन्ता न कर सके, नयी दूल्हन के साथ पड़े पड़े चुप चाप रात बिता देना अच्छा नहीं है, यह उनके चित्त में आया फिर धीरे से कहा "क्यों नींद आ गयी !"

गुलाब ने उत्तर नहीं दिया लेकिन अङ्ग सञ्चालन से यह जाना गया कि अभी वह सो नहीं गयी है जगन्नाथ ने फिर पुकारा "काहे नींद आती है क्या !"

इस बार अस्पष्टस्वरमें उत्तर मिला "काहे !"

जगन्नाथ—"ऐसे ही पूछता हूँ कि सो तो नहीं गयी !"

गुलाब—"नहीं"

जगन्नाथ ने बहुत सोच समझकर जो दो प्रश्न किये थे उस का दो ही शब्द में गुलाब ने उत्तर देकर निबटेराकर दिया, अब जगन्नाथ क्या पूछें जिस से कुछ बात चीत देरतक हो, सोचने पर भी ठीक सवाल नहीं मिला थोड़ीही देर बाद जगन्नाथ ने एक लम्बा सवाल सोचा और कहा—"काहे तुम को यहाँ आनेसे मायके के किन२ लोगों के वास्ते मन उदास हो रहा है?"

"सब के वास्ते" कहकर गुलाब ने इस लम्बे सवाल को भी किनारे किया अब तो जगन्नाथ चकराये इस तरह गुलाब जब सवालों को सफाई के साथ काटती है तो जगन्नाथ बेचारे अब सवाल कहाँ से लावेंगे, उन की इच्छा है कि नवपारिणीता भार्य्या से कुछ मीठी २ बातें कर के रात बितावें, लेकिन गुलाब यह सब तन्नीतागा फुःसे काट देती है, ढूँढते ढूँढते जगन्नाथ ने एक और सवाल सोचकर कहा "अच्छा, यहाँ से जब मायके जावोगी तो यहाँ के किन किन लोगों के लिये मन कैसा २ करेगा?"

इस बार कुछ सोचकर गुलाब ने कहा—"यहाँसे वहाँ गये बिना इस का जवाब मैं कैसे दूँगी?"

गुलाब का चतुराई भरा उत्तर सुनकर जगन्नाथ मुसकुराये और उसी क्षण कहा—"हम को तो इस के जवाब की जल्द जरूरत थी

लेकिन अब बहुत देर मालूम होती है." गुलाबने भी तुरत उत्तर दिया—"अगर इसके जानने की बड़ी जल्दी है तो जब मैं घर जाऊँगी तब उसके दूसरे दिन वहाँ चले आनेपर मालूम हो जायगा."

इस उत्तर के सुनने पर जगन्नाथ के आनन्द की सीमा न रही। दो हृदय के बीचमानो एक बाँध था वह अकस्मात् टूट गया और दोनों में बातें होने लगी.

जगन्नाथने कहा—"नहीं बिना गवने हम कैसे जा सकते हैं?"

गु०—"जब जरूरत पड़ती है तब इसका विचार नहीं होता और गवना तो होही चुका जब मैं ब्याह में ही बिदा होकर यहाँ आगयी तो गवनाका रस्म अब बाकी क्या है."

ज०—"अच्छा वह बात उस वक्त देखी जायगी."

गु०—"वह क्या दूर है,कल तो मैं मायके जाऊँगी। आजही उसका ठीक होजाय तो अच्छा है.

ज०—"अच्छा जो जाने का ही अवसर होगा तो हम आजावेंगे। अगर न आवें तो क्या तुम दुखी होगी?"

गु०—"दुखी काहे को तुम्हारे न आनेसे तो हमको सुख होगा भला दुःख काहेका?"

जगन्नाथ ने इस व्यङ्ग का अर्थ समझ लिया और कहा—"अच्छा मैं आऊँगा तुम तो खुश हो न?"

गुलाबने कुछ उसका उत्तर नहीं दिया, किन्तु उसे बहलाकर कहा—"हम ने आपके वास्ते पान बनाया है लीजियेगा?"

यह पान देनाही गुलाब के सन्तोष का चिह्नथा। जगन्नाथ ने कहाँ "हाँ लावो दो?"

गुलाब ने हाथ बढ़ाकर पान देना चाहा। जगन्नाथ ने कहा "तुम अपने हाथ से खिलादो। बिना खिलाये मैं नहीं खाऊँगा"

गुलाब अभीतक जगन्नाथ की ओर पीठ करके सोयी थी विरुद्ध मुख किये हुए ही जो उसने पान जगन्नाथ के मुँहमें खिलाना चाहा

तो बीड़ा मुँहके बदले आँख में खोंस दिया। जगन्नाथ आँख खुदनेसे सिहर उठे। गुलाब अब स्थिर न रह सकी। उठकर जगन्नाथ की चक्षु शुश्रूषा करने लगी दोचार बार फूँक देने पर जगन्नाथ स्थिर हुए और गुलाबकी चक्षुलज्जा भी इसीमें दूर हुई। इसी प्रकार जगन्नाथ की वह सुहागरात्रि व्यतीत हुई.

दोनों को नींद गिरती रातको आयी थी, इस कारण दोनोंके उठने में भी सबेरे विलम्ब हुआथा। जगन्नाथ ने नींद से उठकर देखा तो सात बज गये हैं। उठकर गुलाब को उठाने के लिये उस की ओर देखा देखते क्या हैं गुलाब के आब से घर गुलजार होरहाहै। तो यह सब गुलाबके चन्द्रानन की ज्योतिहै! अभी सूर्य्योदय नहीं हुआ है? जगन्नाथ ने सुप्तावस्थामें गुलाबकी छबि बिखरे केशोंकी लुनाई गुलाब से गालों की आभा भरपेट देख ली। गुलाबके सौन्दर्य्य में एक दम मोहित हो गये। उस समय यह न समझ सके कि उनके घरमें जो प्रकाश आया है वह सूर्य्यरश्मिका है अथवा गुलाब के आब का.

षष्ठ परिच्छेद।

आज जगन्नाथ गुलाब के बाद सुसराल को आये हैं। गुलाब के छोटे भाई का व्याह था, उसी निमंत्रण में गुलाब को पहले मायके विदा करके उन्हें आप भी आना पड़ा है। व्याह कार्य्य समाप्त होचुका है। बहुत सी स्त्रियाँ नये दामाद को पाकर खुशी मनाने बैठी हैं।उनमें हमारी वह कोहबर वाली पूर्व्व परिचिता युवती और रेखादीदी भी हैं वहाँ एक ओर ए चन्द्रविनिन्दिनी बैठी है जिस का परिचय दिये बिना हम नहीं रह सकते।यह सुन्दरी गुलाब के बड़े चाचा की लड़की नाम मनोहरी है। मनोहरी जो वास्तविक मनोहरी है यह उस के देखने ही से प्रगट होता है। मनोहरी है तो पच्चीस बरस की लेकिन लड़का बच्चा अब तक न होने से युवतियों में भरती की गयी है। उस ने ही सब से पहले छेड़ा--"कहो बर! हम को पहचानते हो या नहीं?" एक बार उस दिन भेट हुई थी और एक बार आज".

जगन्नाथ ने हँसकर कहा--" आज भी मैं वरही हूँ क्या ?"

मनो-"हाँ वर की महक अभी तुम्हारे बदन से गयी थोड़े है ?"

रेखादीदी ने कहा-" नहीं मनोहरी देखो न मनसेधुआ चिकना कैसा गया है लेकिन उस दिन कैसा चेहरामोहरा नहीं है आखिर तो हमारी गुलाबन है न ! कैसी बहादुर निकली !"

जग०-" फिर बहादुरी में क्या कहना है । लुगाई तो बहादुर होतीही हैं ".

रेखादीदी "ए ल्लो ! सुनरे मनोहरी सुन ! सब कहती थीं कि दमाद बड़ा सीधा सादा बेचारा है कैसी गँसाह बोल रहे हैं कहीं शिकारी बिलार की मोंछ थोड़े छिपती है । मैं तो उसी दिन पह-चान गयी थी ।"

मनोहरी-"रेखादीदी ! आज मैं किवाँड बन्द कर आयी हूँ मरद मानुष तो कोई आवेगा नहीं। आज हम लोग यहीं कोहवरकरें."

जगन्नाथ-"आज आप लोग जो चाहो करो लेकिन कल हमको छुट्टी देना होगी."

जगन्नाथ की बात शेष होते ही रेखादीदी चौंक उठी। उसने कहा-"अरे बाप रे ससुरार में नेवते आये हो आठ दिन तो रहना चाहिये. जो बड़ा कम तो तीन दिन तो किसी तरह नहीं जा सकते."

जगन्नाथ-"नहीं अब की हमको इसके वास्ते क्षमा करना होगा."

मनोहरी-"अरे हम तो क्षमा कर देंगी लेकिन जिस से बँधे पल्ले होकर वह जब छोड़े तब तो ! तीन दिन तो तुम्हें रहना तीन ही बात है।"

जगन्नाथ-"नहीं यह कोई बन्धन थोडे है कि तीन दिन रहना ही पड़ेगा."

मनोहरी-"अब उसी घडी मालूम होगा कि बन्धनहै या नहीं?"

जगन्नाथ ने मुसकुरा कर कहा-"तो यह बन्धन भला कैसा है?"

रेखा-"यह बन्धन लोहे का है जिसको कोई तोड नहीं सकता."

जगन्नाथ–"ऐसे बहुत से हाथी हैं जो लोहेका बन्धन तोड देते हैं। तुम्हारी उपमा ठीक नहीं हुई । यह बन्धन मनको मनसे और प्राणको प्राणसे है."

रेखादीदी ने सुरसे कहा–"ओ हो ! लोग कहतेथे फलाना का दामाद बड़ा सीधा भोला मिला है कुछ जानता नहीं यहाँ बात २ में अतालपाताल बाँधते हैं ऐसा रसिया दामाद बाप रे बाप सीधाहै!"

आज जनन्नाथ के बोरे का मुँह खुला है। रेखाके जबाब में उन्होंने तुरंत कहा–"नहीं नहीं रसिया हम कितनाही होंगे तो तुम्हारे तले। तुम्हारा रस मरजानेसे गाढ़ा होगा और हमारा कौन हमारा तो अभी साधारण है."

रेखा इस बातको सुनकर नाच उठी गाते २ कहा–"तूतो दहि जरू नान्हें खेलाडी तोहार मरम हम जानी लाँ"

रेखादीदी अबतक आसन पर नहीं बैठीथीं खड़े खड़े रस की नदी बहारही थीं। अब जगन्नाथ ने उनका स्वागत किया और कहा–"बैठ तो जाव पहले."

रेखादीदी अब रेखन दीदा होकर अकड़के बैठीं । पावँपर पावँ रखकर पौरुषभाव से नचाने लगी और पुकार कर कहा– "तम्बाकू ला रे."

इतने में घर की नोकरानी हुक्का भरकर लायी और जगन्नाथ को देने लगी। जगन्नाथने रेखाको बता कर कहा–"आपहकी हैं."
रेखानें पाँव पीछे नहीं किया, तम्बाकू पीने का बहाना किये बिन क फूँक खींचना चाहा सो सचमुच खिंच गया. हुक्का गुड़गुड़की नाभा, धूँआ कलेजेतक पहुँचा. खों खों करते २ रेखा का लाल्नाथ के देख्यो. आसन से उठकर जमीनपर गिरने लगी. घर में जितनी स्त्रियाँ वहाँ थीं ठहाका मारकर हँसने लगीं.

खाँसी से रेखा का बुरा हाल था. उधर हँसीसे घर गूँजता था. होते २ ऐसी दशा हुई कि मारे अधिकता के रेखा अब खाँस नहीं

सकती. हँसते २ स्त्रियाँ इस तरह वेबाहर हुईं कि उन से हँसा नहीं जाता. जगन्नाथ का भी हँसते २ पेट फूल गया. बहुतसी स्त्रियाँ लोटते पोटते बाहर तक चली गयीं.

इस तरहकी एक अभावनीय घटना पर हँसी का सीन समाप्त हुआ.

सावधान जगन्नाथ! सावधान! तुम्हारा इतना हँसना अच्छा नहीं तुम इतना मत हँसो. तुम वही जगन्नाथ हो न? सँभालो जामे में आवो बहुत खुशी में डूबना ठीक नहीं है.

सप्तम परिच्छेद ।

जगन्नाथ ज्यों त्यों करके तीन दिन सुसराल से छुट्टी न पा सके। वह तीन दिन कैसे बीते उसका नमूना हम दे चुके हैं. अब यहाँ जगन्नाथ के वेटे विश्वम्भर के तीन दिन कैसे बीते उसका भी कुछ परिचय देते हैं.

विश्वम्भर कभी मा बाप से अलग नहीं हुआ. दुर्भाग्य वश माता जन्म भर के लिये छोड़कर चलबसी. अब माता के बाद पिताही विश्वम्भर के आश्रय स्थल हैं. पत्नी वियोगकातर जगन्नाथ का भी अब विश्वम्भर ही एकमात्र अवलम्ब था. उस दुर्घटना के बाद से ही जगन्नाथ का पुत्र स्नेह मानो दूना बढ़ गया था. अनिच्छा होते भी जगन्नाथ ने व्याह किया है अब उसका विषैला फल फलना प्रारम्भ हुआ। मनुष्य अपनी इच्छा से विष पान करे या किसी के अनुरोधसे बाध्य होकर करे, किन्तु उस का असर एक साही होगा। सती की बात टालकर जगन्नाथने जो काम किया है उसका फल भी शीघ्र ही मिलेगा.

हम पहले ही कह चुके हैं बालक विश्वम्भर पिताके साथ रात को सोता था। जिस दिन जगन्नाथ का व्याह हुआथा उसी दिन रात्रिको पितासे वियोग होने की पहली बारी थी, किन्तु उस दिन उस को यह आशाथी कि पिता उस की मा को लाने गये हैं। जब दुसरे दिन उस

आशासे निराशहुआ तब उस के पिता ने दिनभर बड़े लाड़ प्यार से गोद में रक्खा इस कारण उसके हृदय का शोक जाता रहा । फिर सुहाग रात्रि को भी बालक पिता के साथ सोने नहीं पाया. उसका स्थान उसकी नयीमाने ग्रहण किया था.

बालक उस दिन विषन्न मन हो अपनी आजी के साथ सोया था. रात को तीन चार बार "बाबा, बाबा" कर के चिल्ला उठता था, इसी तरह दो दिन कट गये जब नयी मा बिदा हुई फिर उसको सन्तोष आया. अब वैसाही प्रेम हो गया था उसने समझा कि नयी मा बनकर जिस ने उसका स्थान ग्रस लिया था वह अब चली गयी' किन्तु थोड़े ही दिन पीछे उस नयी मा के जाने पर बापको भी गायब होते देख बालकको बड़ा क्रोध हुआ. उस बालक के मन में यह पितृ वियोगका दूसरा धक्का लगा.

संध्यासमय आफिस का कार्य्यशेष कर के जगन्नाथ के घर आने की बात थी विश्वम्भर भी यही बात जानता था. जगन्नाथ प्रतिदिन जिस समय आफिस से घर आते उसी समय की प्रतीक्षा में बालक बाहर भीतर एक करने लगा जब संध्या होजाने परभी जगन्नाथ आफिस से नहीं आये और सब लोग उन के न आने का कारण समझ गये लेकिन बालक बिश्वम्भर ने कुछ नहीं समझा बिशेषतः उस ने प्रातःकाल नवीन मा के साथ पिता को जाते हुए देखा था इसी कारण से मातृहीन बालक पिता के न देखने से बहुतही व्याकुल हुआ संध्या को विश्वम्भर रोता हुआ शङ्कर के पास गया और पूछा " बाबा कहाँ हैं? उन के लिये हमारा मन न जाने कैसा हो रहा है."

उस ने बालक को समझा कर कहा " बाबा आफिस गये हैं."

विश्वम्भर ने फिर रोते रोते कहा आफिस से बाबा अबतक नहीं आये शङ्कर ने भुलाने के लिये कहा " हम समझते हैं आज आफिस में बहुत काम है इसी से देर हुई है. क्या आफिस चलोगे?"

विषन्न मन बालक ने कहा "मैं बाबाके साथ आफिस जाऊँगा. बाबा कहाँ हैं बताओ" शङ्करने बालकको भुलाने के और उपाय सोचकर कहा "तुम एक किस्सा सुनोगे? मैं आज एक राजा की कहानी कहूँगा."

बालक पट्टी में नहीं आया और फिर कहा "बाबा के आये बिना मैं कहानी नहीं सुनूँगा"

शङ्कर ने कहा "आज बाबा को आफिस से आने में देर होगी. तुम इस समय सोने चलो. उन के आने पर तुम्हें जगा देंगे" बालक ने अपने हाथ से आँसू पोंछकर कहा "बाबा के न आनेसे मुझे नींद न आयगी. मुझे बाबा के पास ले चलो उन्हीं के पास सोऊँगा"

"अच्छा तो चलो अपनी आजी के यहाँ से कपड़ा पहन आवो." ऐसा कहकर शङ्कर विश्वम्भर को गोदमें लेकर महल में चलागया.

जगन्नाथ जिस समय सुसरालमें सारी सरहजों के साथ आमोद प्रमोद करते थे, उस समय उनका जीवन सर्वस्व एकलौता पुत्र उनके लिये इस तरह व्याकुल हुआ था. जगन्नाथके हृदय में इस व्याकुलता का कुछ प्रतिघात हम लोगों ने क्यों नहीं देखा? तो क्या अभी से जगन्नाथ के पुत्र स्नेह का ह्रास हुआ है? हम लोग इस समय भी इस बात को स्वीकार नहीं करसके. जगन्नाथ का पुत्रस्नेह इस समय भी पूर्णरूप से था इसमें कोई संदेह नहीं, तौ भी वह स्नेह इस समय भूल गयाथा इसी से जगन्नाथ जी खोलकर आमोद प्रमोद करने में सक्षम हुए थे.

जगन्नाथ ने इसी प्रकार नई सुसराल में आमोद आह्लाद करके तीन दिन बिताये सुतरां बालक विश्वम्भर की अस्थिरता किस प्रकार वृद्धि प्राप्त हुई थी यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है. तौभी कोई कष्ट समान भावसे चिरकाल तक नहीं रहता. आज जो असह्य बोध होता है, दो दिन बाद वही अभ्यस्थ हो जाता है। एक और बात है, इसी समय से विश्वम्भर की आजी ने उस की मा का स्थानाधिकार किया और वही नौकर शङ्कर धीरे धीरे उसके पिताके स्थान का अधिकारी हुआ। आश्रयहीन का आश्रयी परमेश्वर क्या इस क्षुद्र बालक को निराश्रय करेगा?

बड़ाभाई–द्वितीयखण्ड समाप्त।

तृतीयखण्ड।

प्रथम परिच्छेद।

छेदीलाल पटने से घर आयेहैं। गाजीपुर के निकट कामदेव पुर में उन का घर है। घर में उन की, मा, स्त्री एवम् तीन वर्ष के एक पुत्र के सिवाय और कोई परिवार न था। छेदी के पिता कुछ विषय सम्पति छोड़कर परलोक वासी हुए हैं उन्हीं की आय से उनका संसार चलता है। छेदीलाल संसार के किसी संश्रवमें नहीं रहते उन की माता भी संसार की सर्व्व मालकिन थीं किन्तु वह बड़ी ही कृपण थीं, किसी प्रकार का व्यय होने से उन को वज्राघातसा मालूम पड़ता था। उनकी कृपणता का चर्चा गाँवभरमें था मगर उन के सामने कहने में किसी का साहस नहीं पड़ता। वे सब से अपनी दीनावस्था ही की बात कहतीं यहाँतक कि अपने ज्ञाति वर्ग के निकट भिक्षा माँगने में भी कुण्ठित नहीं होतीं। पुत्र की सांसारिक वैराग्य कथा सबसे कह के अपनी दीनदशा प्रसिद्ध करने की सर्व्वदा चेष्टा करतीं।

छेदीलाल की स्त्री का नाम अनूपमा था। अनूपमा की प्रकृति भिन्न रूप की थी। धन रहते सांसारिक असच्छलता किसी प्रकार भी सह्य नहीं करसकती। इसी हेतु सर्व्वदा असन्तुष्ट रहती थी इधर छेदीलाल हमेशा आमोद में रहते,गाँव के ज़मीदार चौधरी महाशय का बैठक खानाही उन का प्रधान अड्डा था.

छेदीलाल के घर आने पर उन की माताने पूँछा"क्यों बेटा! इतने दिन पटने में थे एकाध नौकरी वोकरी की तदबीर नहीं की?,

छेदीलाल ने तुरंत उत्तर दिया "मा! किसके लिये नौकरी करें मरने बाद तुम्हारे सिरपर तो कुछ लाद नहीं देंगे."

इस बार माता क्रुद्ध होकर बोली "मैं अपनाही शिर नेके लिये तुझे नौकरी को कहतीहूँ? चाकरी नहीं करो, खावोगे क्या?"

छेदीलाल—"दाल भात और परवर की तरकारी.

माता—"अरे मुँह झौंसहा! बेटा बेटी और मेहर को क्या खिलावेगा."

छेदीलाल—"तुम्हारे रहते वह सब खाने थोड़े पावेंगे चाकरी करूँ या न करूँ."

माता—"क्यों क्या मैं उन को खाने नहीं देती तू कैसा चाण्डाल है?"

छेदी०—"खाने क्यों नहीं दोगी लेकिन बहुत खानेसे पीछे गड़ बड़ होगा, इसीसे आधा पेट खिलातीहो."

माता—"तो मैं आधा पेट खाने को देती हूँ! अच्छा तू अपना हिसाब पत्र कर डाल?"

छेदी०"मुझसे यह काम नहीं होगा। इसके करते ही मैं पागल हो जाऊँगा."

माता—"अच्छा तो अब वही सब खरच बरच करेगी."

छेदी०—"ऐसा करनेसे थोडे दिनतक तो खाना पीना मजेमें चलेगा. उसके बाद एक दम बन्द कर देना पड़ेगा मा! जिस दिन तुम एक रुपया भँजाकर बाजार करने को दोगी उसी दिन जानूँगा कि भर पेट खानेमें तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है. मा! भला बताओतो रुपये की पूँजी करते हैं संचित करनेके लिये या खर्च करने के लिये? इस बात का जवाब जब ठीक दे सकोगी तो मैं समझूँगी कि तुम ब्राह्मण की लड़की हो नहीं तो तुम्हारे जन्म में भी मुझे सन्देह होगा"

माता—"मैं रुपया नहीं भँजाती तो खर्च कहाँ से चलता है?"

छेदी०—"घर का उपजाधान है भात खाते हैं। फूलबाड़ी में सेम और पोय लगा है बैंगन फले हैं उन की तरकारी खाते हैं. मा! अब पोय का साग नहीं मिलेगा? जब मैं घर रहता हूँ तो भोजन का नाम सुनतेही भाजी का ध्यान होता है और भूख दूर भाग जाती है। रात को सोते समय भी मैं भाजी का स्वप्न देखता रहता हूँ."

माता—"इसी लिये तो नौकरी करने को कहती हूँ। नौकरी कर के रुपया ला तो रुचिकर भोजन खिलाऊँगी."

छेदी०—"तो नोकरी के रुपये बिना क्या रुचिकर भोजन नहीं मिलेगा. जमींदारी के रुपये से पकवान की सामग्री लेने से क्या पाप होगा?"

माता—"क्या तुझे कभी स्वादिष्ठ भोजन नहीं देती?"

छेदी०—"दोगी क्यों नहीं? लेकिन गाँवमें किसीके यहाँ भोजन होतो तुम भिक्षा माँग के खिलाती हो। कभी घरके पैसे से खिलाती तो अलबत्ते!"

छेदीलाल की माताको उनके श्लेष समझने की क्षमता न थी सुतरां पुत्र की इन सब बातोंपर क्रुद्ध न हुई। उन्हों ने कहा "तो अब रोज रोज स्वादिष्ठ भोजन खिलानेको कहाँ पाऊँ बेटा?"

"मैं अब स्वादिष्ठ भोजन नहीं चाहता मुझ से अब बहुत न बोलो। मैं चौधरी मुहल्ले को जाताहूँ। बिना गये आज मुझे भूख नहीं लगेगी' यह कहकर छेदीलाल घर से बाहर होना चाहते थे कि माने कहा "घर में क्या घड़ीभर भी मन नहीं लगता? कितने दिनों के बाद घर आये हो, आते ही चौधरी के घर जाने का क्या प्रयोजन है?"

छेदीलाल ने तत्क्षण उत्तर दिया "बहुत दिन हुए मैं वहाँ नहीं गया एक बार मुलाकात कर आऊँ."

यह कहते हुए छेदीलाल घर से बहार हुए आगे ही अनूपमा का दर्शन मिला। अनूपमा ने उन को चौधरी के घर नहीं जाने दिया हाथपकड़ कर एक दूसरे घरमें लेगयी.

द्वितीय परिच्छेद।

छेदीलाल ने घर में प्रवेश करते ही कहा "इतना खींचा खीचीं क्यों करती हो? कहो तो मतलब क्याहै! जराबात भी तो सुनें' यह कहकर छेदीलाल ने एकबार अनूपमा के मुख की ओर आँ"

उठाकर देखा उस के आकर्ण विस्तृत युगल नयनों से अविश्रान्त आँसू बहतेथे । यह दृश्य देखकर छेदीलाल चीत्कार करके बोले "हमें डुबा देने का मतलब है क्या दादा! इसतरह धर पकड़ करके मत डुबाओ हम आप ही डूबे जाते हैं तुम हमारा हाथ छोड़ो।"

अनूपमा ने आँख का जल पोंछकर कहा "तुम्हें सदा तमाशा ही अच्छा लगता है"

छेदी० "सदा तमाशा कैसे अच्छा लगेगा? तुम्हारा रोना अलबत्ते मुझे अच्छा लगता है"

अनूपमा–"मैं तुमको डुबाती कैसे हूँ?"

छेदी०–"जो तुम्हारी अश्रुधारा है उस में क्या हम ठहर सकते हैं?"

अनूपमा–"तुम ने ऐसे सुख में हमें रक्खा है फिर कैसे न रोऊँ?"

छेदी०–"क्यों, रोने में जो परिश्रम है वही परिश्रम हँसने में भी है तो रोनेके बदले एक बार अनुग्रह पूर्व्वक हँसने में क्या हानि है?

अनूपमा–"तुम हँसी अच्छी समझते हो मैं भी हँसनाही अच्छा जानती हूँ किन्तु तुम ने जिस सुखमें रक्खा है उसमें तो चेष्टा करने पर भी हँसी नहीं आती."

छेदी०–"ओः–स्त्री के मुखमें हँसी थोड़ेहै कि चेष्टाकरतेही आवेगी?" बोध होताहै कि रोने के समय तुझे कोई चेष्टा नहीं करनी पड़ती जब चाहती हो तब रुलाई आजाती है.

छेदीलाल की इन सब बातों से अनूपमा की आँखों का जल कहाँ चलागया. अनूपमा नीरव होकर क्या सोचने लगी. उस समय छेदीलाल ने कहा "कहते हैं कि एक बार भूलके भी स्त्रीके मुहपर हँसी नहीं आती? जो नहीं आती तो तुम अपना रोना लिये रहो. इस वक्त मैं एक बार चौधरीजी के बैठक खाने में जाकर हँस आऊँ मुझे छोड़ दो."

अनूपमा–"क्यों, इतने दिनों के बाद घर आये आज एक दण्ड भी घर में नहीं रह सकते?"

छेदी०—"तो इतने दिनों के बाद आया हूँ वहाँ एकबार न जाऊँ?"

अनूपमा—"वहाँ जाने का क्या प्रयोजन है?"

छेदी०—"यहाँही रहने से क्या निबूआनून मिलेगा?"

अनूपमा—"अपने घर रहना अच्छा है कि दूसरे के घर रहना अच्छा है?"

छेदी०—"रोने के यहाँ रहना अच्छा है कि हँसने के यहाँ रहना अच्छा है?"

अनूपमा ने अब क्रुद्ध होकर छेदीलाल का हाथ छोड़ दिया और कहा " जाव तुम्हारी जहाँ खुशी हो जाव"

यह कहकर अनूपमा ने रोने की मात्रा दूनी करदी,छेदीलाल तत्क्षणात् वहाँ से दौड़कर भागे जाते समय कहगये "तुम इस वक्त जितना चाहो रोवो, हम अभी चौधरीजी के घर से घूम के आते हैं तुम्हारी आँख का जल जिस में शीघ्र शेष हो जाय"

छेदीलाल एक दौड़ में चौधरीके बैठकखाने में पहुँचे। वहाँ घिनहू और धुरहू सिंह प्रभृति उनके तीन चार बन्धु उपस्थित थे. उन्होंने छेदीलालको देखकर एक आनन्दध्वानि की। अब छेदी के हृदय में भी आनन्द की सीमा न रही। इधर उधर की एकाध बात होनेपर एक ने कहा—"तो भैया! हम लोगों को भूलकर इतने दिन क्या करते थे?"

छेदीलालने उत्तर दिया—"तुम लोगों को भूल जानेपर क्या फिर लौटता? भूल नहीं गया यही कहने के लिये तो हाजिर हुआ हूँ."

दूसरेने कहा—"काका! तुम हम लोगों के पास से अलग होते ही हम लोगों को भूल नहीं जाते तो एकाध चिट्ठी तो लिखते"

छेदी०—"चिट्ठी किस तरह लिखें बेटा? तुम लोगों को छोड़कर मैं जहाँ रहता हूँ वहाँ होश में थोड़े रहता हूँ कि चिट्ठी लिखूँ?"

घिनहू—"तुम जहाँ रहो वहाँही आनन्द करो तुमपास रहने पर तो मरे हुए को भी हँसा देते हो"

छेदी०—"किन्तु अबतक एक जीते हुए मनुष्य को कितनी चेष्टा करनेपर भी नहीं हँसा सका। इस समय उस को रोती हुई छोड़कर तुम लोगों के पास आया हूँ उस ने बड़ा दुखी किया है रात दिन उस का भों भों मुझे अच्छा नहीं लगता। हमारे ऐसे आदमी को एक बारगी डाँवाडोल कर के छोड़ दिया है"

घुरहू—"भैया! तो बड़ी भौजी के नाम एक डाँवाडोल की नालिश कर दो"

छेदी०—"भैया! यदि प्राण के डाँवाडोल की नालिश करने का न्यायालय होता तो मैं निश्चय करचुका होता। मैं सर्व्व सह सकता हूँ केवल सिसकता हुआ मुँह नहीं देख सकता."

रामबाबू—"ईश्वर बड़ा विलक्षण है ऐसा मिलान कहीं नहीं देखा इसमें भगवान ने बड़ी बहादुरी की है."

छेदी०—"इस मिलान में भगवान की बात नहीं इस में अगुवा की बहादुरी है। भगवान की विचित्रता इस में होगी कि कमलनेत्र में जल आवे। बाबा! दार्जिलिंग घूमते समय अनेकोंन झरने देखे हैं वे भी शीतकाल में सूख जाते हैं किन्तु इस कमलनेत्र का झरना क्या शीत क्या वर्षा सब काल में समान चलता है। इधर आकाश में जल है कृषक हाहाकार कर रहे हैं किन्तु भैया! यदि बुद्धि से कोई मेरी चन्द्रमुखी को एक बार खड़ा कर दे तो अच्छी तरह अन्न हो सकता है.

सभों ने एक ठहाका दिया। हँसी खतम होने पर हरिदास ने कहा, "अच्छा बाबा! तुम तो बड़ी माकी इतनी निन्दा कर रहे हो लेकिन बड़ी मा तुम्हारी बड़ी प्यारी है यह बात तुम कई बार अपने मुँह से स्वीकार कर चुके हो."

छेदीलाल ने बात काटकर कहा "बापरे! मैं क्या उस की निन्दा कर सकता हूँ! गुरू निन्दा करने से बड़ा पाप होगा विशेषतः तुम्हारे ऐसे के निकट! पहलेही तो कहा है विधुमुखी विधाता की अपूर्व्व सृष्टि है."

रामबाबू–"अच्छा सुनो भावज क्या पहले की तरह तुम्हें अच्छी नहीं लगती?"

छेदी०–"अच्छी क्यों नहीं लगती, अच्छी तो है ही मगर एक बात का बासन कहा है "अमृतसे किसी को अरुचि होती है तौ भी विधाता की यह अपूर्व्व सृष्टि है, लोगों ने आँख में अँगुली देकर दिखाने के लिये इस समय छदी से अरुचि करा दी है"

हरिदास–"क्या ! छेदी सरीखे अमृत में अरुचि है !

छेदी०–"इधर भी विधाता की अपूर्व्व सृष्टि है"

रामबाबू ने दाढ़ी पकड़ के कहा "भाई ! ऐसे अमृत से भी कभी अरुचि होती है"

छेदी–"जब अरुचि हुई है तब उपाय ही क्या है कहो? किन्तु यह अरुचि भी एक गर्भ लक्षण धर लेगी । और जल्द एक फल प्रसव करेगी."

हरिदास–"क्या फल प्रसव करेगी?

अमृत–"लड़का, नहीं तो लड़की अगर यह भी न हो तो गर्भश्राव तो निश्चयही है । जैसा लक्षण देखा है उस से तो बोध होता है कि गर्भश्राव ही होगा."

तत्क्षणात् एक उच्चहास्य ध्वनि से बैठकखाना कम्पित हुआ । इसी समय छेदीलाल के एक सेवक ने आकर कहा "आप को आहार के लिये माजी बुलाती हैं शीघ्र आइये छेदीलाल ने सब से प्रार्थना कर के कहा " हमें दशमिनट की छुट्टी दो हम एक बार भाजी लिये आते हैं"

पुनः एक हास्य ध्वनि हुई उस के समाप्त रोते २ छेदीलाल घर को गये.

तृतीय परिच्छेद ।

आधीरात के समय छेदीलाल ने शयन गृह में प्रवेशकिया। आहार करने के वाद चौधरी के बैठक खाने में उन का शुभागमन हुआ था

वहाँही आधीरात करके घर आये थे । उन्होंने सोचा कि अनूपमा इस समय सोगयी होगी सुतरां दुर्भावना का कोई कारण नहीं है । इधर अनूपमा शय्यापर छटपटा रही थी । स्वामी की आहट पाकर कृत्रिमनिन्द्रा में चुप चाप होके आँखें बन्द करली । अनूपमा ने अनेक क्षण चुप्पी साधी किन्तु इससे कोई फल होते न देखकर बहुत विरक्ता हुई । इस अवस्था में उस से चुप नहीं रहा जाता अनूपमा इस समय हृदय के विरक्त भाव को प्रकाश करने का अवसर ढूँढ़नेलगी । हठात् छेदीलाल के अङ्गसे अनूपमा का अङ्ग स्पर्श हुआ । अब तो अभिमानिनी गरज उठी और छेदीलाल को धक्का देकर ठेलदिया ! उन्होंने ठेलने का अर्थ समझा । तुरत फिर अपने अङ्गसे स्त्रीका अङ्ग स्पर्श कर फिर ठेला ठेली आरम्भ हुई । इसी तरह घात प्रतिघातके बाद अनूपमा ने कहा "हटके सोवो खबरदार तुम हमारे शरीर से अपना शरीर स्पर्श नहीं करसकते."

छेदीलाल की मनोवाञ्छा पूर्ण हुई । कथा आरम्भ हुई उन्होंने कहा "क्या ! हमसे तुमसे अङ्ग स्पर्शका सम्पर्क नहीं है?"

अनूपमा गरज कर बोली "तुम उस सम्पर्क से क्या वास्तार खते हो?"

छेदीलाल—"तो एक नया सम्पर्क, न होगा? इस पतिपत्नी का सम्पर्क छोड़ने पर एक नया सम्पर्क करनेसे क्या अच्छा नहीं होगा?"

अनूपमा—"तुम्हारे साथ और क्या सम्पर्क होगा."

छेदीलाल—"क्यों, हम तो तुम्हारे भग्नीपति तक होनेको राजीहैं."

अनूपमा—"मेरी बहिन तो तुम्हारे मुँहमें...."

छेदीलाल—"बस, बस यथेष्ट हुआ पेट भरगया; इस समय एकबार हमारी ओर मुँह करके सोओ जरा चन्द्रमुख देखें."

अनूपमा तत्क्षणात् दो हाथ दूर शय्याकी शेष सीमा पर एक दूसरा विस्तर बिछाकर सोयी । शय्याके उधर और जगह नहीं है अनूपमाके गिरजाने की विलक्षण सम्भावना है.

छेदीलाल ने ऐसा देखकर कहा—"तो अब इधर मुँह करके नसोना थोड़ा और हटके सोवो मुझे सोनेमें कष्ट होताहै।"

छेदीलाल जितना मना करने लगे, अभिमानिनी अनूपमा उतना ही और निकट आने लगी । अखीर में उनके अङ्गसे सटगया । छेदी ने तब फिर अस्त्र छोड़ा—"अहा ? पीठ बड़ी मुलायमहै इस से बड़ा आराम मिलता है "

अनूपमा तीन हाथ दूर भाग गयी । तब छेदीलाल हँसते २ बोले "हम भरसक तुम्हें विधाता की अपूर्व्व सृष्टि कहते हैं ! हम जो कहें ठीक उसके विपरीत तुम कर बैठोगी । ऐसा न होनेसे क्या स्त्री पुरुष का मिलाप हो सकता था ? "

अनूपमा—"मिलाप होगा कहाँ से ! तुम क्या मेरा मान अभिमान समझते हो ? "

छेदी०—"तो क्या इस समय तुम अभिमान नहीं करती हो तो हम करते हैं ? तुम अपनी बात नहीं कहोगी तो कैसे समझेंगे कि तुम्हें अभिमान हुआ है "

अनूपमा—"तुम हमारे मनकी बात बूझते होते तो क्या मेरी ऐसी दशा होती ? "

छेदी०—"तो तुम उससे दुःख मत करो, देखो कि स्त्री लोगों के मन की बात देवता नहीं जानसकते तो हम किधर के हैं."

अब अभिमानिनी का मान दूर हुआ।अनूपमा रोते२ बोली—"क्या हमें सुख में रखते हो, हमें क्या कुछ सरधाया खुशी नहीं है ?

छेदीलाल बोल उठे—"कौन कहता है कि तुम्हें साध नहीं ? तुम्हें अच्छे२ गहने की सरधा है,बढ़िया२ कपड़े की साध है अच्छे२ खाने की साध है । किन्तु तुम्हारी खुशी तो कभी इस बायीं आँख से भी नहीं देखी ! "

तुम क्या हमारा भला देख सकते हो?" यही कहते २ अनूपमाका रोना दूना हुआ । यह देख छेदीलाल ने हाथ जोड़कर कहा दुहाई

तुम्हारी खुशी की ! हम तुम्हारा मान अभिमान सब सह्य कर सकते हैं किन्तु तुम्हारी यह वृष्टि नहीं सह सकते इस यात्रा में हमें क्षमाकरो । बल्कि जन्मान्तर के लिये छोड़ दो मुझ से इतना वर्षण नहीं सह्य होगा ”

अनूपमा ने आँख का जल पोंछ कर कहा–“भला जलाना ही सीखे हो । या और कुछ परमेश्वर ! मर जाती तो अच्छा होता ! ”

छेदीलाल बोले–“चन्द्रमुखी ! मरण होनेसे क्या कोई बच सकता है मरन होनेसे तत्क्षणात् मरजाता है । और अगर तुम मरन होनेहीसे बचो, तो मुझे भी प्राण का मोह नहीं है उसके साथ जिसमें हमारा भी मरन होजाय.”

यह बात कहते २ छेदीलालने अनूपमाको गाढ़ आलिङ्गन करके उसका मुख चुम्बन किया । चुम्बा के साथ ही साथ स्त्री पुरुष के बीच का सब झगड़ा टण्टा मिटगया । अब इस विधाताकी अपूर्व्व सृष्टि के साथ छेदीलाल के इस अपूर्व्व प्रणय सम्भाषण का मर्म्म आप लोगों ने समझा होगा !

चतुर्थ परिच्छेद ।

इस तरह हँसी खुशी में छेदीलालने घर में पाँच छः महीने बिताये एक दिन प्रातःकालको उन की माता ने उन से कहा“बेटा तालाब में मछली मारी जाती है, वहाँ जाव नहीं, कुछ मछली मिले तो देखना.”

छेदीलाल आश्चर्य्यित होकर बोले–“क्यों मा ! तुम्हारी ऐसी मति गति क्यों हुई जाती है ? मुझे बड़ा भय होताहै बोध होताहै कि अब तुम अधिक दिन न जीओगी.”

इस अवस्थामें भी छेदीलाल की माको प्राण का बहुत मोह है अतएव पुत्रके मुँहसे यह बात सुनकर बहुत डरीं और. कहा–“बेटा जीऊँगी नहीं क्यों ? बहुत दिन हुए मांस नहीं खाया इसीसे जानेको कहतीहूँ इससे जीऊँगी नहीं, कसे समझा!”

छेदीलाल ने कहा "मछलीतो, केवल अन्न प्राशनके दिन खाई थी सो जो हो, और मछली खाना मैं नहीं चाहता। एक दिन मांस खाके दश दिन हविष्यका पथ्य करूँ तब न !"

माता—"तुम्हारी कोई बात मैं नहीं समझती."

छेदी०—"तुम अगर मछली खरीदके खिलाओगी तो निश्चय करके कहताहूँ कि तुम अब अधिक दिन नहीं बँचोगी.

इतना अत्याचार तुम से सहन नहीं होगा बस एक दिन मछली खानेसे दश दिन तक हविष्य का बंदोबस्तकरना पड़ेगा."

माता—"मैं क्या तुम्हें मछली खरीदनेको कहतीहूँ?"

छेदी०—"तो वहाँ किस लिये जानेको कहतीहो?"

माता—"तुम वहाँ जाके खडा होना वहाँ जाने ही से लोग तुम्हें मछली देंगे !"

छेदी—-"मैं बँचा मा ! मातृहीन होनेका डर दूर हुआ। मैं भी वही कहता था कि ऐसा कब होनेवाला है ! मा ! हमारी भूल है तुम अभी बहुत दिनतक जीओगी."

माता—"अच्छा एक बार जाव तो हो आवो."

छेदी०—"जाकर क्या कहूँगा ? ओजी हमने बहुत दिनोंतक मछली नहीं खायी हमें थोड़ीसी मछली भीखदो !"

छेदीलालने जिस तरह मुँह बनाकरके यह बातें कहीं उससे उनकी मा बहुत रंज हुई प्रकाश्य रूपसे बोली इसे क्या मांस भिक्षा कहते हैं! तालाबमें मछली मारते वक्त गाँवके चार पाँच बड़े लोग वहाँ जाकर खड़े होते हैं तो उन्हें भी थोडी २ मछली दीजाती है."

छेदीलाल सदा प्रफुल्लचित्त रहतेथे, माता के साथ भी कौतुक करने से कुण्ठित नहींहोते। एक बारगी बात कर कहा—"तो क्या कहके खड़ा हूँगा, मैं तो जानता नहीं मुझे सिखलादो."

माता—"कुछ कहना नहीं होगा। केवल वहाँ जाके खड़ाही होना होगा."

छेदी०—"और अगर वे लोग कहें कि हम लोगों का तालाब है हम-लोग मछली पकड़ते हैं तुम क्या करने आये हो."

माता विरक्त होके बोली—"तुमसे कोई बात नहीं पूँछेगा."

छेदीलाल हँसते २ बोले—"अगर वह पूछें तो क्या कहूँगा मुझे सिखला तो दो."

माता—"तो कह देना कि देखने आयेहैं."

छेदीलाल—"यहाँ! यह भी देखने की एक चीज है! तो देखो मा! मैं बल्कि हविष्य करने को राजी हूँ मगर ऐसी भिक्षा कर के मांस खाना नहीं चाहता। तुम घरका कोहड़ा साग इत्यादि बेंचाकरो तुम्हारी सन्दूक रुपये से भरी है,तुम्हारी सूद-कीतहबलसे अगर कभी एकाध पैसा गिर पड़े तो देना उसीकी मछली लाके खाऊँगा; नहीं तो जैसे खाता हूँ वैसे ही खाऊँगा; लेकिन् मछली भिक्षा करने नहीं जाऊँगा?"

यही कहकर छेदीलाल घर से बाहर हुए रास्ते में देखा कि लड़कों का एक झुण्ड शोरगुल मचाता हुआ जारहा है। छेदीलाल उसी ओर चले। निकट जाके देखा कि एक लड़के के स्कूलमें गैर हाज़िर होने से मास्टर की आज्ञा लेकर बालक दल उसे पकड़े लिये जाताहै गैर हाज़िर लड़के का नाम सुधीर है। सुधीर छेदीलालके किसी जाति भाई का बेटा है। सुधीर जैसा धीर और शान्त लड़का है उसके परिचय देने की आवश्यकता इस समय नहीं है। बालक उसके दोनों हाथ और दोनों पैर पकड़ के झुलाते हुए लिये जारहे हैं और सुधीर भरसक हाथ पाँव छुड़ाने की चेष्टा करता है हाथ पाँव बद्ध होने पर भी चेष्टा करने में नहीं चूकता बालकों को कभी २ गालीभी दे देता है। छेदीलाल उसके पास जाकर कहने लगे—"हमारे सुधीर को अधीर क्यों कर रहे हो?" यह सुनकर एक लड़के ने कहा—"सुधीर आज चार पाँच दिन से स्कूलमें नहीं जाता है इसीलिये आज उसे पकड़े लिये जाते हैं."

छेदीलालने कहा "तुम लोग क्या करते हो ! ऐसे शान्त लड़के को इस तरह पकड़ के ले जाना होता है ?"

उस समय सुधीरने कहा "काका ! हम को बचाओ नहीं तो हम जल में डूब मरेंगे" !

छेदीने कहा "अरे बेटा ! ऐसी बात क्यों कहते हो ? भला तुम मरोगे क्यों ? तुम्हारे मरने पर देशके लोग क्या गोबर बटोरने को रहेंगे ? अगर सचमुच वही मतलब है तो एकबार पीपल के पेड़तक घूम आवो पीछे जो मन आवे सो करना । लड़के तुम लोग इस समय इसे छोड़ दो"

छेदीलाल की बात सुनकर बालकोंने उच्चहास्य किया और सुधीर को छोड़ दिया । सुधीर नेः छेदीलाल को कचकचाकर पकड़ा और कहा "मैं पाठशाला नहीं जाऊँगा"

छेदीलाल ने कहा "तुम क्यों पाठशाला जावोगे बेटा ? पाठशाला में क्या तुम्हारे ऐसे सुशील लड़के जाते हैं ? वहाँ तो छोटों के लड़के जाते हैं आजकल आमफला है तुम्हें वहाँ चलना चाहिये नहीं चलो बुलबुल का बच्चा पकड़ें." सुधीर के अह्लाद की सीमा नरही। वह ठठाकर हँसा इसी समय दो एक और लड़के भी बोल उठे " हम भी बुलबुल का बच्चा लेंगे"

छेदीलाल ने कहा तो तुम भी हमारे साथ आवो" !

अब तो सब बालक प्रसन्न हुए पाठशाला छोड़ कर छेदीलाल के साथ होलिये । एक छोटा लड़का सब के साथ जल्दी २ नहीं चलता था उसे छेदीने गोद में ले लिया खुशी से बालक ने एक चीत्कार सा किया. इसी तरह कुछ दूर जाकर छेदी रास्ते की बाईं ओर फिरे. यह देख सुधीर बोला "उधर मैं नहीं जाऊँगा उधर ही तो पाठशाला है" छेदीलालने कहा तो इस से क्या ? तुम्हारे गुरु भी हमसे डरते हैं जानते नहीं ! हम आज पाठशाला से सब को छुट्टी दिला देंगे" !

बालकों ने फिर एक हास्य ध्वनि की. सुधीर को उनलोगोंके साथ जाने में कुछ आपत्ति नहीं हुई। फिर सब कोई पाठशाला में उपस्थित हुए छेदीलाल ने गुरुजी से कहा "आज तुम सुधीर को कुछ नहीं कर सकोगे ऐसा सीधा लड़का इस गाँव भर में नहीं है."

गुरु महाशय हँसकर बोले—"ऐसा सीधा लड़का इस ग्राम में क्या किसी ग्राम में नहीं हो तो यह सब लड़के क्या बिना शासन किये चल सक्ते हैं?"

इसी समय छेदीलाल ने गुरु के हाथ में एक बेत देखकर कहा "गुरुजी! तुम्हारा बेत मैं ने लिया अगर कोई लड़का पाठशाला में न आवे तो इस का भार हमारे ऊपर है बेत के देखते ही लड़कों का खून सूख जाता है तो फिर पाठशाला में कैसे आवें?"

यह कहकर छेदीलाल ने गुरुजी के हाथ से बेत ले लिया और सुधीर को कहा "बेटा सुधीर! तुम अब कुछ डर न करना अपने मन से लिखना पढना करो; हम तुम्हारा बाग देखने जाते हैं और बुलबुल का बच्चा भी लेते आवेंगे तुम पाठशाला से छुट्टी होने पर हमारे घर आना."

यह कह के छेदीलाल वहाँसे चले गये। उसी दिन से सुधीर प्रति-दिन लिखने पढने लगा; और इस घटना से गुरुजी को भी एक विल-क्षण शिक्षालाभ हुआ.

पञ्चम परिच्छेद।

उस मातृहीन विश्वम्भर का अनेक दिन से सम्बाद नहीं मिला। छेदीलाल के मध्य में रहनेसे भी हमारा जी घबरा रहा है, इस बार अपने प्यारे विश्वम्भरका सम्वाद लेंगे.

जगन्नाथ की नवपरिणीता स्त्री गुलाब इस समय जगन्नाथ के घर है। अब जगन्नाथ गुलाब का विरह नहीं सह सकते। और गुलाब

की तो कोई बातही नहीं ! वह इस समय नितान्तबालिका भी नहीं है तिसपर स्वामीवश मंत्र की विशेष दीक्षिता है । सुतरां गुलाब क्या स्वामी को कभी छोड सकती है? तो जो कुछ कष्ट है, उसी मातृहीन बालक विश्वंभरनाथ को है. जगन्नाथ विश्वम्भरका पहले ही की तरह आदर प्यार करते हैं, इस ममय भी कोई त्रुटि नहीं करते तौ भी अब विश्वम्भर को पिता के प्यार से परितृप्ति नहीं, उस का क्षुद्र हृदय उस प्यार से पूर्ण नहीं होता, उस के हृदय का अधिकांश मानो शून्य पड़ा रहता है । बालक को ऐसी बोधशक्ति कहाँ से आयी? विश्वम्भर पिताकेसाथ रात को एक साथ नहीं सोनेपाता यही उस को मर्म्मतक दुःख हुआ है । और एक दुःख का कारण यह है कि विश्वम्भर ने अपने दुःख की बात पिता से एक रोज कही थी किन्तु उस से भी न मालूम क्यों विश्वम्भर की मनोवाञ्छा पूर्ण नहीं हुई । इसके बाद और किसी से विश्वम्भर अपना दुःख नहीं कहता और कहने की इच्छाभी उसे न थी.

इसी दुःख से वह चञ्चल बालक मानो गम्भीर होने लगा इसी उमर से बालक्रीडा में उस का उत्साह घटने लगा,अनेक समय निर्ज्जन स्थान में किस के लिये सोचता और उस के बाद आकाश की ओर देखकर नयन जल से अपना वक्षःस्थल डुबाता है बड़े आश्चर्य्य का विषय है कि बालक के ऐसे आचरण की ओर आजतक किसी की दृष्टि नहीं पड़ी.

किन्तु एक दिन इसी तरह विश्वम्भर सोचते २ रो रहा है. इसी समय शङ्कर वहाँ उपस्थित हुआ । उस ने विश्वम्भर को इस तरह निर्ज्जन स्थान में रोते देख व्यग्र होकर कहा "बिसू! तुम यहाँ वैठकर रोते क्यों हो?"

पहले विश्वम्भर ने किसी बातका उत्तर न दिया वरन् शङ्कर के प्रश्न से उस का रोना और बढ़ा. उस ने विश्वम्भर को गोद में लेकर

उस के नेत्र का जल पोंछ डाला फिर सान्त्वना कर के पूछा—"क्यों से तुम को किसी ने कुछ कहा है?

तव विसू वावू सुस्थिर होकर आँखपोंछते पोंछते वोले "हमें किसी ने कुछ नहीं कहा"

शङ्कर—"तो फिर रोते क्यों हो?"

विसू—"रुलाई आ जाती है"

शङ्कर—"क्यों रुलाई आती है ?"

विश्वम्भर इस प्रश्न का और कुछ उत्तर न दे सका, केवल शङ्कर की ओर टकटकी लगाये देखता रहा । इस वालक के इस निर्ज्जन स्थान में रोने का यथेष्ट कारण है, शङ्कर यह जानता था । किन्तु छः वर्ष-का लड़का उन सव कारणों का अनुभव कर सकता है इसे वह किसी तरह विश्वास न कर सका । इसी से कहा "तुम्हें क्या भूख लगी है?"

वालक ने तुरंत उत्तर दिया—"हम भूख लगनेपर कभी नहीं रोते. भूख लगने पर मैया हमें खाने को देती है."

शङ्कर वालक के मुँह से ऐसी वात सुनकर विस्मित हुआ और विसू की ओर देखने लगा. वालक ने फिर कहा "हम क्यों रोते हैं जानते हो वावा अव हम को प्यार नहीं करते."

शङ्कर इस वात को हँसी में उड़ा देने की चेष्टा से वोला "तुम्हारा रोना इसी लिये है ! अच्छा आवो अपने वावा के पास चलो हम तुम्हारे सामने उन को खूव कहेंगे."

किन्तु जिस वालक की इतनी प्रखर वुद्धि है वह वालक इस लड़िक भुलौअल में क्यों भूलेगा! शङ्कर के हँस कर वोलनेपर वालक विषन्न वदन शिरनीचे किये वैठा रहा । यह दृश्य देखकर शङ्कर का प्राण मानो व्याकुल हो उठा। इसी समय स्वर्गीया भाग्यवती की वात शङ्कर के मनमें आयी । जगन्नाथकी इस नयी शादीका क्या भयङ्कर परिणाम ?सम इसे सोचकर शङ्कर सिहर उठा । उस समय वह क्रुद्ध दुग्धपोष्य वसका. विश्वम्भर के विषन्न वदन को देखते २ रोने

की। उसे रोते देख तीक्षणबुद्धि बालक भी पुनः रोते २ व्याकुल हुआ जब अनेक क्षण के बाद दोनों कुछ सुस्थिर हुए। तब शङ्कर विश्वम्भर को जगन्नाथ की माता के पास लेगया और सब बातें कहीं। गृहिणीने चुपचाप बालक की मर्म्मान्तक कथा शङ्कर से सुनी। मगर मुँहसे कुछ न कहा जगन्नाथके यथा समय आफिस चले जानेपर गृहिणी उसी स्वर्गीया पुत्र वधूके उद्देश्यसे चीत्कार करके रोने लगी थीं। उसी समय से उन्होंने कुछ खाया भी नहीं; वह धरातल शायी हुई शङ्कर बहुत समझा करनेपर भी उनको भोजन नहीं करासका। शङ्कर आपही अप्रस्तुत है, क्योंकि उसीके मुँहसे विश्वम्भर की बात सुनकर गृहिणी धराशायिनी हुई हैं। किन्तु इस बातसे हठात् क्यों उनका पूर्व्व शोक इतना जग उठा उसे शङ्करने नहीं समझा ऐसा समझता तो वह विश्वम्भर की बात उनसे कभी न कहता। एक सामान्य फुःकारसे बुझी हुई शोकाग्नि एक बारगी प्रज्वलित हो उठेगी वृद्ध शङ्कर ऐसा नहीं जानता था.

संध्या समय जगन्नाथ आफिससे आये हाथ मुँह धोकर बैठे हैं, इसी समय गुलाब ने उनके जल पीनेकी सामग्री लाकर सामने रक्खी आफिस से आनेपर उनकी माता ही प्रति दिन जलपीने का बंदोबस्त करती थीं आज माता को न देखकर जगन्नाथ बोले "क्यों आज माकहीं गयी है!"

गुलाब ने हँसकर कहा! "मा कहीं गयी नहीं हैं घरहीमें हैं."

जगन्नाथ भी हँसकर बोले—"तो आज तुम क्यों जल खाने को लायी हो ?"

गुलाब—"मैं क्या नहीं ला सकती !"

जगन्नाथ—"ला क्यों नहीं सकती लेकिन आज जानपड़ता है मा ने तुम्हीं को जल खिलाने के लिये भेजा है. . लगा . . शङ्कर

गुलाबने कहा—"नहीं ! आज . स्थिर न करो गोद में लेकै

इसी से दिन भर कुछ खाया भी नहीं, उन को दुःख क्यों दूँ! इसीसे आज मैं ही तैयारी करके लायी हूँ."

जगन्नाथ गुलाबकी बात सुनकर बहुत सन्तुष्ट हुए; और मनही मन उसके गुण की प्रशंसा करने लगे.

षष्ठ परिच्छेद ।

संध्या समय जब जगन्नाथ बैठक में आये, उस समय शङ्कर भी वहाँ आ बैठा । इन दोनों के सिवाय वहाँ और कोई न था शङ्कर ने सुयोग पाकर कहना आरम्भ किया,—मैं एक बात आपसे कहताहूँ माताजी ने आज इस समय तक जलपान नहीं किया है । विश्वम्भर के मुहँ से एक बात सुन के बड़ी मा का शोक जग उठा है । वह दिन भर रोती रही हैं; मैं उन को कुछ नहीं खिला सका." जगन्नाथ ने आश्चर्य्यित हो कर कहा "क्यों! मैं तो इस का कुछ हाल नहीं जानता! और विश्वम्भर ने ऐसी कौन सी बात कही है जिस से माता के मन में इतना दुःख हुआ है? "

शङ्कर ने कहा "विश्वम्भर की बात से मा को क्या शोक होग बड़ी बहू का शोक उन के मन में जग उठा है इसी से उन्हों ने आज अबतक कुछ खाया नहीं है. "

शङ्कर की इस बात से जगन्नाथ कुछ स्तम्भित हुए । मानो बहुत दिनों की पूर्व्व स्मृति कहाँ से जाग उठी । एक अपराधी के मन की अवस्था जैसी होती है जगन्नाथ की अवस्था हठात वैसी ही हुई । सुनील निर्म्मल आकाश मानो हठात् घनघटासे आच्छन्न हो गया । अनेक क्षण के पश्चात् जगन्नाथ ने एक दीर्घ निश्वास छोड़ साथही साथ दोबिन्दु अश्रुजल उन की छाती पर गिर पड़ा । जगन्नाथ ने आँसू पोंछ कर कहा—"देखो शङ्कर मैं ऐसा नराधम हूँ कि इतने समय में सती लक्ष्मी को एक दम भूल गया हूँ । लेकिन् यह दुग्धपोष्य बालक अभी तक उस को नहीं भूला है. "

शङ्कर के नेत्र में भी जल आया,वह सजल नयन और मुग्ध कण्ठ हो बोला–"विसू बाबू तो माता के लिये नहीं रोते, उनको यही कष्ट है कि पहले की तरह वे प्यार नहीं किये जाते."

जगन्नाथ उन को पहले की तरह प्यार नहीं करते यह बात उस ने स्पष्ट नहीं कही क्योंकि उसे साहस नहीं हुआ किन्तु जगन्नाथ वह बात समझ गये और अनेक क्षण मन में न जाने क्या सोचते रहे।उस के बाद घर में जाकर माता को खाने का अनुरोध किया पुत्र का अनुरोध माता टाल न सकीं । सुतरां सब गड़बड़ मानो एक प्रकार मिटगया। जगन्नाथ विश्वम्भर को गोद में ले प्यार करने लगे और आदर पाकर विश्वम्भर उन्हीं की गोद में सो गया.

रात को दस बजे जगन्नाथ सोने के लिये घर में गये. उस समय जगन्नाथ को एक बात याद आयी । गुलाब ने जगन्नाथ से जो माता की अस्वस्थता की बात कही थी; तो क्या वह सत्य नहीं है? अपने मन से गुलाब ने ऐसा झूठ कहा था? वह कभी झूठ नहीं कह सकती जगन्नाथ का यही स्थिर विश्वास था; सुतरां सरला संसारानभिज्ञ बालिकाने माता की प्रकृति नहीं समझी थी शेष में जगन्नाथ ने यही स्थिर किया । उस के बाद कुछ सोच के गुलाब से कहा "आज तुम्हें एक बात कहूँगा तुम बालिका हो इस लिये कुछ शिक्षा दूँगा"

गुलाब ने कुछ नहीं कहा केवल उदास मन से जगन्नाथ की ओर एक बार देखा । जगन्नाथ भी उसी सरलतापूर्ण मुँह की ओर देखकर बोले "देखो विश्वम्भर को अपने गर्भजात पुत्र की तरह देखना तुम विश्वम्भर को प्यार न करने से हमारी प्यारी नहीं हो सकोगी । हमें इतना प्यार करने की कोई जरूरत नहीं है विश्वम्भर को प्यार करनेही से हमारी प्यारी होवोगी"

गुलाव छल छल नेत्र कर के बोली–"क्या मैं विश्वम्भर को प्यार नहीं करती? मैं तो विश्वम्भर को अपनेही पेट का लड़का जानतीहूँ

मैं ने बिना गर्भ धारण किये ही ऐसा सीधा लड़का पाया है फिर क्यों नहीं प्यार करूँगी?"

इतनी वात कहते २ गुलाव रोने लगी जगन्नाथ बड़े धीर होकर बोले—"अरे! हम उस भावसे तो नहीं कहते तुमको बालिका जानकर कुछ उपदेश देते थे तुम्हारे मन में इतना कष्ट होगा यदि ऐसा जानते तो ऐसी वात कभी मुँहपर न लाते."

गुलावने कहा—"मा होकर लड़के को प्यारकरना चाहिये यह बात क्या उपदेश देने की है?"

जगन्नाथ बोले—"तुमतो अभीतक गर्भधारिणी नहीं हुई. विश्वम्भर को भी तुम ने नहीं प्रसव किया इसी से कहता था."

गुलाव नेत्रका जल पोंछकर बोली "गर्भ में नहीं धरा तो क्या मैं तो सम्बध में उसकी माहूँ । मैं भैमा नहीं हूँ कि मुझे उपदेश दोगे."

क्याही उच्च भाव की वात है। जगन्नाथ ने इस बालिका के निकट पराभव स्वीकार किया, और मनही मन उस के असाधारण गुण की प्रशंसा करने लगे । उसके वाद और एक वात उससे पूछने के लिये जगन्नाथ बड़े उत्सुक हुए। जगन्नाथ बोले—"जब अपने गर्भसे पुत्र प्रसवकरोगी तव भी विश्वम्भर को इसी तरह प्यार करोगी."

गुलावने तुरंत कहा—"उस समय विश्वम्भर हमारा बड़ा लड़का, और जो जन्मेगावहछोटा कहलावेगा । पहले विश्वम्भर इसके वाद वह !"

वाह गुलाव ! तुम्हारी बुद्धिकी बलिहारी है ! इसी उमर में जब तुम इतनी बुद्धिमती हो तो युवावस्थामें कैसी होगी.

जगन्नाथ के आनन्द की सीमा नहीं है। उन्हों ने जन्म जन्मान्तर में न जाने कितना पुण्य किया था कि उस से इस जन्म की दूसरी शादी मे उन्हें स्त्रीरत्न प्राप्त हुआ है ! जगन्नाथ मनही मन सोचने लगे गुलाव देवी है या मानवी " !

लेकिन् हम जानते हैं गुलाबदेवी नहीं है मानवी भी नहीं है वह मानवी वेष में राक्षसी है । मायाविनी राक्षसी स्नेह प्रकाशित करती है किन्तु जगन्नाथ के मन में यह बात नहीं धसती.

सप्तम परिच्छेद ।

पूर्व्व वर्णित घटना के एक ही वर्ष, पीछे गुलाब ने एक पुत्र रत्न प्रसव किया । जगन्नाथ के घर में आनन्द व उत्सव की एक धूम पड़ गयी । जगन्नाथ ने आनन्द में अधीर होकर इस उपलक्षमें बहुत रुपया व्यय किया.

गुलाबके आनन्द की सीमा न थी । पहले गर्भ में पुत्र प्रसव कर के मन में विशेष गर्व्विता हुई । देखते २ छ महीने बीत गये । उसके बाद बड़े समारोह के साथ जगन्नाथ ने पुत्र का अन्न प्राशन किया. इस में अनेक कुटुम्ब कुटुम्बिनी निमंत्रित थे उन में अधिकांश गुलाब के पितृकुल के आत्मीय जन थे. निमंत्रण करने में गृहिणी का कोई मत नहीं लिया गया था एवम् उनके दामाद् छेदीलाल तक भी निमंत्रण के भागी नहीं हुए थे. लेकिन इस के पहले सामान्य कार्य्यों में भी उनको निमंत्रण दिया जाता था.

गृहिणी बड़ी बुद्धिमती थीं उन्हों ने पुत्रके इस व्यवहार का एक बार भी उल्लेख नहीं किया; बल्कि गुलाब के मायके के लोगों का विशेष सन्मान किया था. विश्वम्भर इस अल्पावस्था से ही पढ़ने लिखने में विशेष मनोयोगी हुआ था. उसकी जैसी बुद्धि है उससे वह लिखने पढ़ने में भविष्यत्में उन्नति कर सकेगा इस बात को इसी समय सब ने एक वाक्य से स्वीकार किया था.

किन्तु गुलाब को पुत्र जन्मते ही विश्वम्भर उसकी आँख का काँटा हुआ तौ भी जगन्नाथ को उसका प्यार करते देखकर गुलाब ऊपर से ऐसी प्रीति दिखलाती कि जिसे देख जगन्नाथ के आनन्द नहीं की सीमा नहीं रहती और वे मनही मन कहते "ऐसा रमणी रत्न

चराचर में सब को नहीं मिलता" प्रतिदिन इसी तरह एक न एक घटना ऐसी घटती कि जिसे सोचकर जगन्नाथ अपने भाग्य को बिन धन्यवाद दिये नहीं रहते। गुलाब ऐसा कौशल दिखाती कि जगन्नाथ उस के बाह्य सौन्दर्य्य में मोहित हो जाते और उस के हृदय के भीषण नरक सदृश दृश्य को नहीं देखने पाते। फलतः जगन्नाथ गुलाब को प्राण के साथ प्यार करते सुतरां उस का सब काम ही अच्छा देखते थे। इसी तरह पाँच वर्ष बीत गये.

गुलाब के पुत्र का नाम ललितकुमार रक्खा गया है. विश्वम्भर ललित को प्राण से भी अधिक जानता और गुलाब के प्रति जो उस का कुछ विद्वेष भावथा ज्ञान वृद्धि के साथ साथ वह भी कम हो गया था.

विश्वम्भर अपनी गर्भधारिणी माता की तरह गुलाब की भक्ति और सन्मान करता। फलतः बारह वर्ष का बालक अपना सब कर्तव्य पालन करता; इस सम्बन्ध में उस की कोई त्रुटि नहीं पायी जाती.

ऐसे अल्प वय के पुत्र को ऐसा गुणवान देखकर जगन्नाथ के आनन्द की सीमा नहीं रहती लेकिन् जगन्नाथ के भाग्य में वह आनन्द नहीं घटता क्योंकि जब गुलाब ने पुत्र प्रसव कियाहै तभी से जगन्नाथ, विश्वम्भर के गुण का परिचय न पाकर सब दोषही का परिचय पातेहैं। जगन्नाथ और किस से दोष का परिचय पावेंगे वा उन का दृढ विश्वास ही किसपर होगा? जगन्नाथ गुलाब से विश्वम्भर का परिचय पाते और वह कौशलमयी गुलाब इस कौशलता के साथ जगन्नाथ से बात चीत करती कि जिससे जगन्नाथ का पुत्र स्नेह विश्वम्भर के प्रतिह्रास होनेपर भी गुलाब का प्रगाढ़ प्रेम प्रकाश पाता था। एक दिन गुलाब-ने दीवार के ताकपर विश्वम्भर को एक घड़ी रखनेके लिये कहा हठात् विश्वम्भर के हाथ से घड़ी गिरकर टूट गयी, विश्वम्भर ने अप्रस्तुत हो रोते रोते मैभाके निकट क्षमा प्रार्थना की। गुलाब ने सान्त्वना करके सब के सामने कहा "हठात् गिर पड़ी तब

क्या दोष है? " विश्वम्भर पिता का भय करता था जिस से पिताजी यह बात न सुनें माता से अनेक प्रार्थना की । किन्तु सन्ध्या समय जब जगन्नाथ आये उसी समय गुलाब ने दाई को उच्चस्वरसे पुकार कर कहा—ओदाई ! विश्वम्भर ने जो घडी आज फोड़दी है उसे छिपा रखना जिस में बाबू आकर देख न लें."

वाबू ने वह बात सुनली, उस के देखने की अब कोई जरूरत न रही अभी वह आफिस से आये हैं हाथ मुँह भी नहीं धोया है उसी समय विश्वम्भर ने घड़ी फोड़ दी सुनकर जगन्नाथ क्रोधान्ध होगये । तत् क्षणात् विश्वम्भर को बुलाकर यतपरो नास्ति भर्त्सनाकी बल्कि एकाध थप्पड़ भी लगाये । विश्वम्भर ने निस्तब्ध होकर सब सह्य किया नीरव हो नेत्रकर पोंछते २ शङ्कर के निकट जाकर अपने मन का कष्ट उससे कहा । विश्वम्भर के कष्ट का कारण यही है कि वह माताही के आदेश से ताक़पर घड़ी रखने गया था.

उस जगहपर दूसरे ही किसी को घड़ी रखने के लिये कहना उचित था उस की आज्ञा का असम्मान होगा इसी भय से वह घड़ी रखने गया किन्तु दैव क्रम से घड़ी गिरपड़ी । शङ्कर ने सब समझा इस क्षुद्र बालक के विपक्ष में षड़यंत्र चलरहा है उसे भी वह जानता था शङ्कर ने विश्वम्भर को बहुत तरह से समझाया किन्तु गुलाब के विपक्ष बाबू से कोई बात कहने का उसे साहस नहीं हुआ.

विश्वम्भर की आजी भी पतोहू का सब व्यवहार जानती और सब बात समझतीथीं; किन्तु वह बड़ी बुद्धिमती थीं हठात् कोई बात कहकर पतोहू वा पुत्र से अपमानित होने की इच्छा उन्हें नहींथी इसीसे वह सर्व्वदा गोपनीय स्थानपर अश्रुविसर्ज्जन और मनही मन मृत्यु कामना से इष्ट देव की प्रार्थना करतीथीं.

अष्टम परिच्छेद ।

छोटा लड़का ललितकुमार इस समय आठ बर्ष का होगया है. इतने ही में उसके दोर्द्दण्ड प्रताप से पृथ्वी कम्पायमानहै !

कुमार जगन्नाथ के बड़े आदर का पुत्र है और इस आदर ही से ललित कुमार की इतनी प्रतापवृद्धि हुई है. गुलाब भी ललित को इतना प्रश्रय देती थी कि ललित कितना ही अत्याचार क्यों न करे उसके विरुद्ध किसी को चूँ करने की क्षमता न थी. ललित का अत्याचार केवल दास दासी वा जगन्नाथ के आत्मीय स्वजन ही नहीं सहते स्वयम् जगन्नाथ को भी यह अत्याचार सहन करना पड़ता था. इस अत्याचार की इतनी वृद्धि हुई थी कि ललित की लाठी जगन्नाथ पर भी पड़ने लगी किन्तु जगन्नाथ को रोने का अधिकार नहीं था. दुःख से अस्थिर हो यदि जगन्नाथ रोते हों गुलाब के क्रोध की सीमा नहीं रहती. और वह रूठ जाती सुतरां गुलाब के क्रोध की अपेक्षा ललित का प्रहार सह्य करना जगन्नाथ की आँख में श्रेयस्कर था. क्योंकि गुलाब के क्रोध से पृथ्वी के रसातल चले जाने पर भी जगन्नाथ को उतनी क्षति नहीं थी. जितनी क्षति गुलाब के रूठने से होती.

आठ वर्ष के बालक ललित कुमार ने एक दिन "बाबा, तुम घोड़ा होवो मैं तुम्हारी पीठपर चढ़ के मुख में लगाम देकर घोड़ा दौड़ाऊँगा."

जगन्नाथ पुत्र के इस अन्याय पूरित हठ की रक्षा करने में किसी प्रकार सहमत नहीं हुए तब ललित कुमारके रोनेसे गुलाब का आगमन हुआ आतेही बोली "बुड्ढेकी अकल तो देखो ! मेरे दूध के लड़के ने एक बात का हठ किया है इसे क्या नहीं करना चाहिये? क्या पीठपर बिठाने और मुहँ में लगाम लेकर दौड़ने से घोड़े हुए जाते हो !

जगन्नाथ ने विरक्त होकर कहा "लड़का जो हठ करेगा उसे क्या हमे पूराही करना पड़ेगा?"

गुलाब विचित्र मुँह बना के बोली "लड़के का हठ नहीं रखना होगा तो क्या तुम्हारे ऐसे बुड्ढे का हठ रखना होगा?"

इसी समय ललित कुमार ने अपना रोना दूना किया तब गुलाब क्रोध कर के बोली "आमर बुड्ढा ! लड़का चिल्ला रहा है इस वक्त

खड़े होकर सोचते क्या हो रुलाकर लड़के को क्या दिक करोगे"

जगन्नाथ तौ भी टालमटोल करने लगे. गुलाब के विरुद्ध और कुछ उन के कहने का उन को साहस नहीं हुआ. गुलाब ने बीररस परित्याग करुणारस की अवतारणा की. आँख के जल से वक्षस्थल भिगोकर बोली "मेरे लड़केपर कोई कुछ भी दया नहीं करता लड़का रोते २ लाल हो गया तौ भी तुम ने उस की बात एक बार नहीं रक्खी यह दुःख मेरे जीवनतक याद रहेगा."

इस समय जगन्नाथ और क्या स्थिर रह सकते हैं? पुत्र के मनोरञ्जनार्थ बकइयाँ होकर घोड़ा हुए। ललित महा आह्लादित होकर हँसते २ पिताकी पीठपर चढ बैठा एक लगाम और चाबुक भी साथ थी। ललित कुमारके एक नेत्र में हँसी और दूसरे में रुलाई! गुलाब के आनंदकी सीमा नहीं है.

इधर जगन्नाथ का प्राण ओष्ठागत है! पीठ में जगह जगह चोट लगगयी है उन जगहों से बड़े जोर से खून बहरहा है। तथापि उन को स्त्रीके विपक्ष में कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। इधर जोर से नहीं दौड़ने पर पुत्र के प्रहार की व्यवस्था है, फिर प्रहार ऐसा कि दुःख से जगन्नाथ को रोने का अधिकार नहीं! जगन्नाथ ! तुम क्या वही जगन्नाथ हो? और गुलाब! तुम क्या वही गुलाब हो?

जगन्नाथका ऐसा परिवर्तन कैसे हुआ यह समझाना नहीं पड़ेगा. गुलाब के संसर्ग से उनका सब कुछ हो जाना सम्भव है. किन्तु उस ने इतनी जलदी क्यों अपनी मूर्ति धारण की है यह हम समझते हैं. गुलाब ने पहले मोहनीमूर्ति से जगन्नाथ का मनोहरण किया। गुलाब के बाह्य सौन्दर्य्य का अभाव नहीं था। विधाता ने उसे सौन्दर्य्य दिया था उस के बाद गुलाब ने पहले ही प्राणपन से जगन्नाथ की प्यारी होने की चेष्टा की थी। जगन्नाथ जिसे प्यार करते गुलाब उसे प्राण से भी अधिक प्यार करती. जगन्नाथ जिसे नहीं चाहते गुलाब भी उसे तनिक नहीं चाहती कैसे जगन्नाथ

की प्रिया प्यारी हूँगी गुलाब का ध्यान ज्ञान पहले उसी में था । इसके पश्चात् इस पुत्ररत्न को प्रसव करके वह कुछ गर्व्वित हो उठी थी उसी गर्व्व ने बढ़कर गुलाब के हृदय में इस प्रकार परिवर्तन किया है. जगन्नाथ पहले तो गुलाब के रूप से मुग्ध हैं फिर उस के गुण ने भी उन्हें मुग्ध किया.

जगन्नाथ ने देखा गुलाब का बाहर भीतर सभी सुन्दर है इसीसे उसके वशीभूत हुए । पहले वशीभूत, फिर क्रमशः दासानुदास गुलाम हुए ! अब मेहरचेर जगन्नाथ की जो दशा है वह पाठक देखही रहेहैं.

नवम परिच्छेद ।

ऊपर की तरह अनेक घटनाओं में जगन्नाथ अपनी अवस्था अनेक समझते बूझते हैं गुलाब उनके ऊपर अन्याय प्रभुत्व करती है यह बात भी कभी २ इनके मनमें आती है परंतु तो भी जगन्नाथ उसके प्रतिकारकी कोई चेष्टा नहीं करते । और चेष्टा करने की कोई क्षमता भी उन्हें नहीं थी ! गुलाब की अनुपस्थिति में जगन्नाथ के हृदयमें जो भाव उदय होता, उसके देखतेही वह दूर होजाता था । जगन्नाथ के घरमें इस समय गुलाबही सर्व्वमयीमालकिन है गृहिणीका कोई वशनहीं है. तो भी उनके बुद्धिमती होनेसे उनके साथ पतोहूसे कुछ झगड़ा नहीं होता हम सब बात सच्ची कहेंगे—गुलाब कलहप्रिया स्त्री नहीं है वह प्रकाश रूपसे किसीको अप्रिय बात नहीं कहती उसकी प्रकृति भी वैसी नहीं है । जो उस की आँख के काँटे हैं वह उनके साथ ऊपरी प्रेम बढ़ाकर भीतर ही भीतर उनका सर्व्वनाश करती है । इस वक्त गुलाब बाहर देवी है भीतर राक्षसी विशेषतः जगन्नाथ के सन्मुख वह सबके साथ जैसा व्यवहार करती है उसे देखकर जगन्नाथ मोहित हो जाते हैं । सास की जैसी भक्ति और आदर सन्मान करना चाहिये जगन्नाथ के घर रहने पर गुलाब उसमें कुछ कोताही नहीं करती बल्कि हद्दसे ज्यादा प्यार करती हैं लेकिन पीछे तो

विश्वम्भरके अनिष्ट साधन में यथाशक्ति चेष्टा करती । दास दासी प्रभृति प्रायः सबही इस समय गुलाबके मायकेसे आये हैं सुतरां वे लोग उसीके पक्ष के हैं केवल वही वृद्ध शङ्कर विश्वम्भर के पक्ष में है इसी कारण वह भी गुलाबकी आँखका काँटा है किन्तु इस जगत में एक मात्र विश्वम्भर ही गुलाब का शिकार है गृहिणी और शङ्करने जो विश्वम्भर का पक्ष लिया है इससे ये दोनों भी उसके चक्षुशूल हैं दोनों गुलाब का मर्म्म अच्छीतरह जान गये हैं इस कारण बड़ी सावधानीसे विश्वम्भर की रक्षा करते हैं.

बालक विश्वम्भर ने गुलाब का कोई अपराध नहीं किया था तौ भी उसके पुत्र होतेही सब तरहसे अपराधी बनाहै.

हम पहले कह चुके हैं कि विश्वम्भर लिखने पढ़ने में बड़ा मिहनती था उस की मिहनत को देखकर सब कोई उसकी प्रशंसा करते थे किन्तु गुलाबके प्यारे ललितके पढ़ने लिखने का कुछ बन्दोबस्त नहीं था लोग उसके दुष्टपने से भी असन्तुष्ट थे गुलाब मनही मन इसके लिये बड़ी डाह करती और विश्वम्भरके लिखने पढ़नेमें बाधा देनेके लिये वह बहुत चेष्टा करती थी । गुलाबने ललित की शिक्षाका भार विश्वम्भर के ऊपर सौंपा था उसका फल यही हुआ कि नतो ललित आप पढ़ता न विश्वम्भरको पढ़ने देता यदि विश्वम्भर कभी ललित का शासन करता तो गुलाब जगन्नाथ के निकट उसे खूब घी गुड़ लगाकर कहती जिससे उसका अकृत्रिम प्रेम उथल उठता । विश्वम्भर के पढ़ने में बाधा देने के लिये एक दिन गुलाबने जगन्नाथ के सामने उसको आदर के साथ कहा "विश्वम्भर तुम इतनी मिहनत मत किया करो बेटा ! तुम्हारा शरीर अच्छा नहीं है इतना परिश्रम करने से तुमको तकलीफ होगी देखते नहीं बहुत मिहनत करने से शरीर कैसा होगया है?"

वास्तविक नानारूपकी चिन्तासे विश्वम्भर का शरीर क्षीण होता जाता था । किन्तु जगन्नाथ के मन में दूसराही ख्याल है । विश्वम्भर के चले जानेपर जगन्नाथने गुलाबसे कहा—"वह क्या लिखने पढ़ने से

ऐसा कातर हुआ है कि तुम सोच करती हो? वह केवल दाहसे कातर हुआ जाता है तुमको यदि ललित पैदा नें होतातब उसको सुविधा होती."

तब गुलाब दीर्घ निश्वास त्यागकर बोली"वह ललित का डाह करेगा यह मैं नहीं जानती वह क्या अब बचेगा? मा कहती हैं ललित नहीं बचेगा मैं तो विश्वम्भर को अपना बड़ा बेटा मानती हूँ मैं तो कभी विश्वम्भर से डाह नहीं रखती."

जगन्नाथ भी दीर्घ निश्वास छोड़के बोले-"अगर संसार में सब का मन एक रंग का होता तो फिर दुःख क्यों होता ?"

गुलाब-"विश्वम्भर मेरे दूध का लड़का है उस के मन में डाह कहाँ से आयी ! आहा ! बेटे को अच्छी तरह खिलातीपिलाती हूँ तौ भी-वह सूखा जाता है वह लड़का यह सब बात क्या जाने ? निश्चय कोई दूसरे हिंसक का काम है !

जग०-"दूसरों का जो भला नहीं देख सकते उन्हीं लोगों ने विश्वम्भर के मनमें डाह पैदा किया है."

जगन्नाथ-"उसे यह सब कुमंत्रणा कौन देता है ! पहले तो वह बहुत अच्छा था."

गुलाब-"भगवान जांने। किसी के मन की बात कैसे जानूँ ! रात दिन तुम्हारा बुड्ढा शंकर न जाने उसके साथ क्या फुसर फुसर करता रहता है."

जगन्नाथ-"हम भी देखते हैं। पांड़े ही ने उसको बहकाया है। यह बात बहुत ठीक है मगर वह पुराना नौकर है हमारे ही यहाँ रहकर बूढ़ा हुआ है इसी से हम उसे कोई बात नहीं कहते। एक बात तुमसे पूछते हैं पाँड़े तुमसे इतनी दुश्मनी क्यों रखता है"सुनतेही गुलाब ने एक सुदीर्घ निश्वास त्याग कर के कहा "वह हमारी भाग्य है। मैं उसको नौकर की तरह नहीं समझती बहुत ज्यादा मानती हूँ और केवल विश्वम्भर ही क्यों ! ललितभी कभी २ दुखाया जाता है इसका कारण भी-वही बूढ़ा है"

"मैं उसका बहुत आदर मान करती हूँ तौ भी वह बूढ़ा अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता हमने ललित से सुना है कि वह उसे दुष्टाचार सिखलाता है और इसीसे पीछे ललित तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा."

जग०—"सो हो सकता है लेकिन शंकर ऐसा क्यों हमारा अनभल चेतता है पहले तो वह बहुत अच्छा था."

गुलाब—"बुड्ढा होनेपर क्या बुद्धि पहलेही की तरह रहती है बहुत दिनोंका नौकर है अब कितने दिनतक रह सकता है अब उसको बिदा करना ही अच्छा है."

जगन्नाथ—"अब यही करना होगा हम आज ही उससे यह बात कहेंगे."

गुलाब—"लेकिन वह बेचारा बूढ़ा है कुछ दुख होगा, नहीं हो तो कुछ पेन्शन् कर देना"

जगन्नाथने स्वीकर किया और गुलाबकी शत्रु के प्रति भी दया देखकर मन ही मन प्रशंसा करने लगे.

दशम परिच्छेद।

उसीदिन सन्ध्या को जगन्नाथ ने शङ्कर को बुलाकर कहा "पाँड़े! तुम हमारे पुराने नौकर हो अव बूढ़ेभये और ज्यादा तुम्हें कष्ट देना मैं नहीं चाहता बतलावो घर बैठने पर कितने रुपये मासिक से तुम्हारा गुजर होगा?

जगन्नाथ को विश्वास था कि शङ्कर पेन्शनकी बात सुनकर बहुत खुश होगा इसी सबब से जगन्नाथ ने यह बातें बड़ी प्रसन्नता से कही थीं. किन्तु यह बात सुनकर शङ्कर का प्रसन्न मुख विषन्न हो गया। अकस्मात् किसी विपद का संवाद पाने से लोगों का चेहरा जिस तरह बिगड़ जाता है ठीक उसी तरह शंकर पांड़े का भी चेहरा मलीन हो गया। जगन्नाथने समझा कि इस आशातीत शुभ संवाद से विस्मित होगया है सुतरां उन्होंने फिर कहा "तुम्हारे चले जानेसे

हम लोगोंको कष्ट होगा सही लेकिन इस सबबसे हम तुम्हें और कष्ट देना नहीं चाहते, तुम बूढ़े हुए मरने का किनारा आया अब घर जाकर निश्चिंत हो भगवान का नाम जपना शुरूअ करो ताकि तुम्हारी गति होजाय."

वृद्ध पांड़ेके मुहँसे इस बार बात इतनी निकली "मुझसे क्या कुछ अपराध हुआ कि जिससे आप जवाब देते हैं?"

पांड़े की बात सुनकर जगन्नाथ आश्चिर्य्यित और मनमें विरक्त हुए हठात् एक आशासे नैराश्य प्राप्त होनेपर मनुष्यके मनका भाव जैसा होजाता है इस समय जगन्नाथ का मन भी ठीक उसी प्रकार का होरहा है। जगन्नाथ कुछ विरक्त भावसे बोले "जवाब देना कैसे हुआ? तुम अब बूढ़े हुए अब तुम्हें नौकरी करना उचित नहीं है इसीसे घर जानेके लिये कहते हैं और ऐसे भी नहीं, कुछ पेन्शन् का भी बंदोवस्त किये देते हैं। क्या इसको जवाब देना कहते हैं?"

शङ्कर कुछ अप्रस्तुत होकर बोला—"मालिक! मैं उस भावसे नहीं कहता। मैं इस समय आप के यहाँ नौकरी करताहूँ यह मेरे मनमें नहीं आता मैं समझताहूँ कि मेरा घरद्वार यही है आपके जैसे विश्वम्भर और ललित हैं उसी भाँति मैं भी आपके एक लड़के ही की गिन्तीमें हूँ इसी से हठात् यह बात सुनकर मन को कुछ कष्ट हुआ था."

जगन्नाथ—"तो क्या यहाँ से जाने की तुम्हारी इच्छा नहीं है?"

शङ्कर—"अब मैं कै दिन बँचूगा? मरनेके समय गङ्गा के तीर मरूँ यही मेरी बड़ी इच्छा है अपने देशमें गङ्गा माई नहीं हैं वहाँ मरनेपर तो हमारे भाई बिरादर हाथ पैर जलाकर उधर फेंकदेंगे."

जगन्नाथ—"वहाँ तुम्हारे लड़के बाले हैं इस वृद्धावस्थामें वह तुम्हारी सेवा शुश्रूषा करेंगे."

शंकर—"किन्तु विश्वम्भर और ललित को छोड़कर मैं स्वर्गमें भी सुखी नहीं होऊँगा विश्वम्भर को कुछ ज्यादा प्यार करनेका कारण यह है कि उसकी मा नहीं है."

"उसकी मा नहीं है" यह कहते २ पाँडेकी आँखमें जल न थम्हा किन्तु जगन्नाथके मनमें पाँडे की इस बात तथा आँख के जलका कुछ आघात नहीं हुआ। इस समय क्षण मात्रके लिये भी जगन्नाथके मनमें विश्वम्भर की मा का ध्यान नहीं हुआ मनुष्य का हृदय क्या इतना परिवर्तनशील है ? जो जगन्नाथ पहले अपनी प्रथम स्त्रीके वियोग में अधीर होकर पागल होगये थे उन्हीं जगन्नाथ का मन इस समय ऐसा बदल गया है कि सती सावित्री भाग्यवती की बात किसीके याद दिलानेपर भी उन्हें याद नहीं आती ! जगन्नाथ की विस्मृतिके अतल जलमें वह सब पहली बातें डूबगयी हैं। यह क्या वही जगन्नाथ है ? मनुष्यके हृदय का क्या विश्वास किया जा सकता है?

जगन्नाथ उस समय सोचने लगे कि शंकर सचमुच केवल विश्वम्भर को प्यार करता है ललित को कुछ भी प्यार नहीं करता एक नौकर का इस प्रकार पक्षपाती होना किसी प्रकार उचित नहीं है सुतरां पाँड़ेकी बातसे जगन्नाथ के मुख पर अधिक असन्तोष का चिह्न दिखाई देने लगा.

बुद्धिमान शङ्कर बात ताड़ गया और अपने पेन्शन् पाने का भी कारण समझा। शंकर ने कहा "आप मालिक हैं आपकी जो इच्छा हो कर सकते हैं। तौभी मैं केवल चाकरी के मोहसे हूँ सो न समझियेगा मैं ने आपका नमक खाया है विना तनख्वाह के भी नौकरी करने को राजीहूँ."

जगन्नाथ मन ही मन सोचने लगे "केवल विश्वम्भर ही के मोह से तुम्हारा रहना है। क्यों क्या ललित हमारा लड़का नहीं है? ऐसा अन्याय हम नहीं करसकते हैं हम अब ऐसे चाकर को अपने घर मे नहीं रहने देंगे."

जगन्नाथ ने प्रकाश रूपसे कहा "तुम जो हमारे हितैषी हो उसे मैं जानताहूँ और इसीलिये आदर के साथ तुम्हें विदा करना चाहता हूँ."

शंकरपाँडे ने फिर नहीं दुहराया धीरे २ अपने शयनागारमें जाकर सो रहा। शरीर अस्वस्थ है यह जताकर उस रातको कुछ आहार भी नहीं किया सारीरात नाना चिन्तामें कटी आँखसे आँसू की धारा भी बही सबेरे आजीसे उसने सब बातें कहीं मगर विश्वम्भर से कहने का साहस नहीं हुआ.

मालकिन इस समय नाम को मालकिन हैं पुत्रके विपक्षमें कोई बात कहने का उन्हें साहस नहीं होता। सुतरां उन्होंने भी अपने वस्त्रसे अपनी आँख के दो तीन बूँद जल पोंछे। उसी दिन जगन्नाथ के आफिस चले जानेपर शंकर पाँडे स्त्रीके भारी रोगग्रस्त के समाचार पानेका बहाना करके अपने घर चलागया। जाने के समय रोते रोते विश्वम्भर से बिदा हुआ। विश्वम्भर ने उस समय यह लेश मात्र भी न समझा कि शंकरपाँड़े अब जन्मभरके लिये बिदा होता है। पाँड़े का अविश्रांत अश्रु जल देखकर भी उसने कुछ नहीं समझा लड़की के पीड़ासंवाद से पाँडे ऐसा अस्थिर होगया है यही विश्वम्भर की भावना हुई थी.

शंकरपाँड़े ने घर पहुँचते ही विश्वम्भर को एक पत्र लिखा इसमें सब हाल लिखदिया। शंकरके इस पत्रको पढ़कर विश्वम्भर बड़ा मर्म्माहत हुआ। अपने प्राण की यंत्रणा किसी से भी नहीं कही। विश्वम्भर को इस समय ज्ञान हुआ है अब वह समझता है अपनी आजी को इस दुःखका भागी नहीं करना चाहता; फिर इस मर्म्मान्तक दुःखकी बात किससे कहे? पाँडेके पत्रको पढ़कर विश्वम्भर ने मन ही मनस्थिर किया कि इतने दिनों के बाद हमारे जीवन का सुख, आशा, भरोसा सब समाप्त हुआ.

एकादश परिच्छेद।

इस निरानन्द पुरीमें हठात् एक दिन हमारे सदानंद छेदीलाल का शुभागमन हुआ। बहुत दिनोंतक यहाँ छेदीलाल के न आनेपर भी वे यहाँ का सब हाल जानते थे। छेदीलाल दो पहरको जगन्नाथ के

घर आकर उपस्थित हुए हैं घरके भीतर जाते समय पहले ही गुलाब से साक्षात् हुआ। उसने केवल उन्हें विवाहके समय देखा था आज कैसे पहचान सकती है? एक अपरिचित पुरुष को घरके भीतर आते देख दाई को बुलाकर उच्चस्वर से कहा "ओ दाई! वह कौन एक आदमी एकबारगी घरके भीतर आया है उस से कहो इस समय बाबू घर पर नहीं हैं दूसरे वक्त आवे यह बैठक नहीं है अंदर महल है। यह आदमी पागल है क्या.?"

मालकिन की आज्ञा से दाई एकदम छेदीलालसे गरजके बोली "अरे! कैसा ढीठ आदमी है? एक बड़े आदमीके घरमें इस तरह घुसा जाता है भाँग खाया है?"

छेदीलालने उस गर्जनके बदले कुछ असन्तुष्ट भाव नहीं प्रकाश किया बल्कि हँसते २ धीरे २ बोले "दाई! हमने भाँग नहीं खायी है भाँग खाते तो इतनी दूर चलकर तुम्हारे घर कैसे आते? मालूम होता है भाँगका नशा तुम्हीं लोगों पर है अच्छा अब हमें इस जंजालसे छुट्टी दो। हमारा सिर न खाओ बाल बहुत हैं इसे हजम नहीं करसकती हो बल्कि इस सिरके लिये थोड़ा सा तेल दे दो कि हम स्नान करके जी ठंढा करें."

गुलाबने कहा "अरे दाई! भाग, भाग, यह आदमी पागल मालूम होता है."

"हम पागल कैसे हुए मेरा माथा गोल है इसीसे जान पड़ता है इतने गोलमें पड़ा हूँ खैर दाई! तुम्हें कोई डर नहीं है मैं तुम्हें निडर करताहूँ अगर अत्याचार करूँगा तो इस बहू ही के ऊपर करूँगा."

यही कहकर छेदीलालने गुलाबकी ओर उँगली दिखलाई। गुलाब डरकर आड़में जा खड़ी हुई। मगर दाई निडर हुई और छेदीलालके आगे जाकर बोली "तुमकौन हो?"

छेदी०—"हम आदमी हैं। भूत प्रेत नहीं हैं,नहीं तो अब तक तुम लोग अचेत हो पड़ती। दैत्य दानव नहीं हैं नहीं तो अबतक तुम्हारी सुन्दरी को हरण कर अंतर्द्धान हो गये होते। देवता भी नहीं हैं नहीं तो सुन्दरी अब तक "बर दो, बर दो करके हमारा माथा चाट जाती" छेदीलाल की बात काटकर दाई बोली अच्छा तो बहुत मत बको यहाँ क्या काम है सो कहो"

छेदीलाल—"अब पाहुना स्नान भोजन चाहता है."

दाई. "अरे बापरे जामा जोरा पहन के पाहुना बनता है.?"

गुलाब उसी आड़से बोली "इस शहरमें कितने लोग किस बेष में किस मतलब से आते हैं सो कौन कह सकता है ! पाहुने ओहुने का यहाँ काम नहीं."

छेदी०—"सो कहना नहीं होगा जिस दिन से स्वयं लक्ष्मी ने इस घर में बास किया है उसी दिन से हम जानते हैं कि पाहुने का अब इस घर में काम नहीं है। गृहिणी इतने वक्तक एक घर में बैठी थीं हठात बाहर निकलते ही छेदीलाल की बात सुनी झटपट बाहर आकर अंदर के आँगन में छेदीलाल को देखा उन्हें देखते ही बच्चा बेटा कह चिल्ला उठीं। गुलाब ने विस्मृत नेत्र से गृहिणी की ओर देखा। दाई भी अवाक हो गयी. छेदीलाल ने कहा "अहो भाग्य ! कि तुम घर ही में थी नहीं तो आज हम पर मार पड़ चुकी थी. अब उसका डर नहीं हैं अब प्रहार के बदले आहार का बंदोबस्त करना चाहिये इस दुपहरी बेला में भूख के मारे रहा नहीं जाता."

गृहिणी बड़ी प्रसन्नता से आदर पूर्व्वक छेदीलाल को बिठाकर अपने हाथसे पंखा करने लगीं। तब छेदीलाल ने कहा "तुम पंखा क्यों करती हो बीबी को बुलाती क्यों नहीं। कब मरेंगे कब नहीं यदि एक बार बीबीके हाथ का पंखा खाकर मरते तो कुछ अफसोस भी नहीं रहता."

गृहिणीने प्रसन्न होकर गुलाब को बुलाया लेकिन वह लज्जा वश आ नहीं सकी। दाई वहीं पर खड़ी थी उसने कहा "बाबू मैं पंखा करूँ."

छेदीलाल कुछ मुँह बनाकर बोले "नहीं २ तुम क्यों पङ्खा करोगी? इस घर की दाई का पंखा खानेसे हमारी जात जायगी! हम बीबी के हाथ का पंखा खायँगे."

किन्तु वह सुख छेदीलालके भाग्य में नहीं घटा। उन्हों ने स्नानाहार किया। जगन्नाथकी माता ने कहा "बहुत दिन बाद दुःखिनी को याद किया है?"

छेदीलाल ने कहा "यह सब बातें तुम्हारे साथ नहीं होंगी जगन्नाथ अभी आफिस में हैं उनके आनेपर वह बातें कही जायँगी हम इतने दिन वहूके ऊपर अभिमान करते थे। लड़के के अन्नप्रसान में हमको एक बार तो बुलाना उचित था। मनमें सोचा था फिर उपनयन वा विवाह क्या होगया है उसी में मनको शोध लेंगे मगर रहा नहीं गया घरमें एक फसाद होगया है इसी से आया हूँ."

गृहिणी—"फसाद कैसा? घर पर सब अच्छे तो हैं"!

छेदी०—"सब अच्छीतरे हैं लेकिन दूसरा फसाद हुआ है"

गृहिणी—"दूसरा फसाद क्या?"

छेदीने हँसकर कहा—"एक लड़का हुआ था वह मर गया बस घर के सब लोगों ने रोना आरम्भ किया है मैं इसी से घर छोड़कर भाग आया हूँ."

छेदीलाल ने जिस भावसे कहा उससे तो एक सामान्य घटना प्रतीत हुई। किन्तु गृहिणी उस बात को सुनकर रोने लगीं यह देख छेदीलालने कहा "जिस ज्वाला से भाग कर यहाँ आया हूँ वह आगे आना चाहती है."

गृहिणी दामाद को पहचानती थीं। उन के कोमल प्राणको दुःख

की आँच न लगे यह बात भी चाहती थीं सुतरां उस दुः अपने और न बढ़ाकर कहा "अच्छा तो आये हो अच्छा किया है ६ दिन तक तुम्हें नहीं देखा था। एक बार अपने घर ले चलो."

इस के बाद इधर उधर देखकर सायँ सायँ स्वर से कहने लगीं "मैं तो बड़ी ज्वाला में पड़ी हूँ दो दिन तुम्हारे घर जाकर ठण्ढा होना चाहती हूँ."

छेदीलाल तत्क्षणात् अल्हाद के साथ उन्हें घर ले जानेको राजी हुए जगन्नाथ के आफिस से आनेपर उनसे भी प्रस्ताव किया गया उन्हों ने पहले कुछ नाहीं की फिर रात को गुलाबके साथ सुख भवन में भेट होनेपर छेदीलाल के साथ माता के जाने में वह भी स्वीकृत हुए। सबेरेही वह उनको घर ले जावेंगे उसी रातको यह बात स्थिर हुई इसे सुनकर सब प्रसन्न हुए केवल एक विश्वम्भर के मुखपर दुःखकी छाप लग गयी.

द्वादश परिच्छेद ।

गृहिणी के छेदीलाल के साथ जानेका तो सब ठीक हुआ लेकिन उसी रातको भयङ्कर ज्वर ने उन्हें पकड़ा बहुत दिनोंतक उनको ज्वर नहीं आया था.सुतरां ज्वर की करालता देख सब भयभीत हुए.

उसी दिन दामादके घर जाना बन्द हुआ। छेदीलाल भी अपने घर न जा सके। दूसरे दिन सबेरे वैद्यराज बुलाये गये चिकित्सा आरम्भ हुई। ज्वर की प्रबलता देखकर चिकित्सक को भी भय हुआथा। दूसरे दिन अकबक करना शुरूअ हुआ उस अकबक में विशेषतः मर्म्मान्तक बातें थीं; जगन्नाथ उस दिन आफिस नहीं गये। उस दूसरे दिन दो पहर को गृहिणी इस असार संसारकी सब यंत्रणा स्वर्गको गयीं। अपनी मृत्यु एक प्रकार गृहिणी चाहती ही परिवार की अवस्था देखकर उन्हें बहुत दुःख होता था सब यंत्रणा त्याग मृत्यु के लिये देवताओं से बारबार

गृहिइस आकस्मिक मृत्यु से और किसी को दुःख हो या न हो वशकिन्तु विश्वम्भर तो अथाह दुःख सागर में पड़गया.

विश्वम्भर को चारों ओर अन्धकार दिखाई देने लगा उसका प्रिय पात्र शंकर जिन्दगी भरके लिये बिदा हुआ है अब उसकी आजी छोड़कर परलोक गयी विश्वम्भर का जीवन अब क्या है.

अब आजीके साथ विश्वम्भरके जीवनकी अवशिष्ट आशाभी गयी जब विश्वम्भर अपने पिता तथा स्वजन परिवारके साथ शवदाह करके घर आया उसवक्त मालूम हुआ कि मानोवह एक श्मशानसे लौटकर दूसरे में आया है विश्वम्भर का घरही इस समय स्मशान है.

जगन्नाथ अब श्राद्धके आयोजनमें व्यस्त हुए गुलाबने इस समय निजमूर्ति धारण की है सासके मरनेसे उसके आनन्द की सीमा न थी । किन्तु बाहरी शोक प्रकाश करनेके लिये कभी २ गुलाब का चिल्ला उठना उसे भूला नहीं था । इस श्राद्धमें बहुत से नेवतहरि आये थे उनमें पन्दरह आने गुलाबके मयकेके थे और गुलाबही इस समय सर्व्वमयी मालकिन है । अन्य सम्पर्कीय आत्मीय जनका कोई भी आदर नहीं करता । सुतरां और लोगों का आना एक मकार विपद ही था गुलाब अपने माय के मामा की मौसी के लोगोंको ही लेकर व्यस्त हुई थी उन लोगों को यत्नके साथ खिलाकर अपना ऐश्वर्य्य दिखानेही में उसका दिन बीतताथा सुतरां अपने स्वामी के स्वजनों का आदर मान करने का समय ही उसे कहाँ था? और फिर उस के मायकेवाले उसे कोई कामही नहीं करने देते और कहा करते " आहा हमारी राम दुलारी प्राण मतीसारी गुलाब को इतनाभारी काम काज है हमारी बेटी अफसोस के देख छेदी जाती है."

आगे आना

उस समय मारे आदर के फूल उठती कभी मुर्च्छा का भी गृहिणी दा॰गी वह अब दूसरे का आदर क्या कर सकती है?

और लोगों ने खाया कि नहीं यह कुछ भी वह नहीं जानती अपने मायके के लोगों को दुःख न हो उसका इसी पर ध्यान था.

इसके बाद श्राद्ध के दिन की एक बात सुनने योग्य है। जगन्नाथने इस श्राद्ध में दो षोड़शी और पिण्डदान किया था उनकी इच्छा थी कि एक वह स्वयम् उत्सर्ग करें दूसरा उत्सर्ग विश्वम्भर से करावें किन्तु इस षोड़शोत्सर्ग के पहले ही ललितने उसे न होने देनेका बीड़ा उठाया और स्वयम् करने पर मचल गया। निस्सन्देह किसीने इस बालकको यह पढ़ा दिया था नहीं तो वह क्या जानता था.

ललित ने अब इसका प्रणकिया है फिर कहाँ कुशल है! इसी समय वाद विवाद पर यह स्थिर हुआ कि विश्वम्भर अन्न जल उत्सर्ग करे ललित कुमार यह षोड़शोत्सर्ग करेगा.

यह विधान हमारे उन्हीं पूर्व्व परिचित पुरोहित ठाकुर उपाध्या का था। अब वह सदा गुलाबको प्रसन्न रखने की चेष्टा करते हैं। इसी कारण उसकी इच्छानुसार यह व्यवस्थाकी है। स्वार्थ सिद्धि के लिये यह धुरन्धर पुरोहित लोग जो न करें वही आश्चर्य है.

सभा में सब लोगों के आगे जब ललितने षोड़शोत्सर्ग किया और विषन्न मनसे विश्वम्भर केवल अन्नजल उत्सर्ग करने बैठा तब सब ने ललित को ही जगन्नाथ का पुत्र समझा। किसी २ ने ललितसे विश्वम्भर का पता पूछा तब उसने बतलाया कि उसका नाम विश्वम्भर है.

उस समय छेदीलाल वहीं खड़े थे उन्होंने सभा के लोगों को सम्बोधन पूर्वक विश्वम्भरको लक्ष्य करके कहा—"यह जगन्नाथ का बड़ा लड़का और आप के ललित का बड़ा भाई है."

बड़ाभाई तृतीयखण्ड समाप्त.

चतुर्थ खण्ड ।

प्रथम परिच्छेद ।

पूर्वोक्त घटना के बाद छः वर्ष बीत गये हैं, छः ही वर्ष में जगन्नाथ का घर सचमुच एक श्मशान होगया । गुलाब के बन्धु बान्धव के सिवाय और किसी का वहाँ आना नहीं होता । जगन्नाथ का बैठकखाना जो पहले बन्धु बान्धवोंसे परिपूर्ण रहता जिनके उच्च हास्य व आनन्दध्वनि से गृह सर्व्वदाही कम्पित होता था वही बैठकखाना आज जन मानव शून्य है सुतरां सर्व्वदाही बंद रहता है जगन्नाथका बैठकखाना इस समय उनका शयन गृह बना है । आफिस से होकर घर आनेपर उन को उसी घर में बंद होना पड़ता । गुलाब की अनुमति बिना जगन्नाथ को घर से बाहर निकलने का अधिकार नहीं है अब जगन्नाथ का कोई बन्धु बान्धव वा हित मित्र नहीं है इस समय मायाविनी गुलाबीने सब पूरण किया है । जगन्नाथ की घराऊ बातों से उन के आत्मीय बन्धु तथा पड़ोसी लोग अनभिज्ञ नहीं थे । वे सब विश्वम्भर के लिये दुःखी हैं । वे लोग विश्वम्भर को प्राण की तरह प्यार करते हैं इसी कारण गुलाब मनही मन उन से भी घृणा करती एवं जगन्नाथ को उन लोगों के साथ भेट नहीं करने देती पहले जगन्नाथ के घर हर महीने कुछ न कुछ ऐसा काम होता कि वे सब लोग निमंत्रित किये जाते किन्तु अब वह सब काम एकबारगी बन्द करादिया गया है तो फिर निमंत्रण कहाँसे होगा? अधिक क्या भिखारी द्वारपर आनेसे भिक्षा भी नहीं पाते उनके दरवाजेपर सँझवत नहीं दी जाती । जगन्नाथ जो कुछ कमाते सब गुलाब के ही चरण कमल में अर्पण करते वह जो चाहती वैसे खर्च व्यौहार करती जगन्नाथ को कुछ कहने की क्षमता न थी इसीसे कहतेहैं कि जगन्नाथका घर श्मशान हुआ है श्मशान और उनके घरमें भेद ही क्या है? इस श्मशानके

पिशाच पिशाचिनी स्वयं जगन्नाथ और उनकी सहधर्मिणी वही गुलाव हैं.

एक दिन जगन्नाथ आहार करने को बैठे हैं गुलाब उनको खिलाती है क्योंकि उसके रहेविना जगन्नाथ का आहार नहीं होता आज जिस यत्नसे वह आहार करा रही है उसे देखकर बोध होता है कि उसके मनमें कोई बुरी कामना है.

गुलाब चिरागकी बत्ती उसकाकर बोली "सब बात तुम्हें कैसे कहें? लेकिन कहे बिना भी नहीं बनता रंज न होतो कहें."

जगन्नाथ गुलाव की बात सुनकर स्तम्भित हुए हाथका कवर हाथ ही में रहगया एक टक गुलाव की ओर देखने लगे जगन्नाथ ने अँ-जोरेमें गुलाव का सौन्दर्य्य देखकर मन में कहा क्या अद्वितीय रूप है.

जगन्नाथ का यह भाव नया नहीं है जब जगन्नाथ गुलाब का रूप सतृष्ण नेत्रसे देखते उसी समय यह बात उनके मनमें उदय होती तौभी गुलाव इस समय यौवन सीमासे पार हो चुकी है इसी से हमने इस बात का पुनरुल्लेख किया है । सौन्दर्य्य मोहके कटने पर जगन्नाथ ने कहा "रञ्ज की वात न कहोगी तो रंज क्यों कर होगा? बात क्या है?"

गुलाब कुछ इतस्ततः होकर बोली "तुमसे सब बात कहते बड़ा डर लगता है । तुम सुनोगे तो बड़ा बखेड़ा हो जायगा."

जगन्नाथ तुरत बोले "तो बोध होता है कि वह विश्वम्भर की बात होगी उस ने क्याकिया है जल्द कहो."

गुलाव–"देखो विश्वम्भर अब लड़का नहीं है लड़के बड़े होनेपर और कुछ कहने के लायक नहीं रहते । क्या वृद्धावस्था में लड़के ही के हाथ प्राण गँवाना होगा?"

जगन्नाथ–"वह तो हमारे भाग्य में लिखाही है बाँस की कोख में धमोइ जन्मा है."

गुलाब"ललित को क्या समझते हो एक तो वह लड़काहै फिर हमार

बच्चे को किसीने पढ़ने नहीं दिया इससे उसका मिजाज कुछ कड़ा हो गया उस के मन में जो आता है सोही मुँह में है कुछ दूसरा नहीं है मगर विश्वम्भर का तो सिद्धान्तही अलग है लिख पढ़के बी. ए. भी पास किया लेकिन उस की द्वेष हिंसा न गयी! हमारे दश पांच लडके भी तो नहीं हैं कि बाँट बखरे में उसका अंश कम हो जायगा केवल दो भाई हैं जो कुछ है सो दो भाग करके बाँट लेंगे तो फिर इतनी हिंसा क्यों? हिंसा करके विश्वम्भरने शरीर माटी किया इतनी हिंसा करी कि शादीतक भी नहीं की हमने उसके लिये कमाक्षा जी को सवा रुपये का प्रसाद माना है अगर हमारे विश्वम्भर के हृदय से हिंसा दूर कर दें तो मैं उन को जोड़ा पट्टा चढ़ाउँगी मेरे विश्वम्भर और ललित दोनों समानही हैं दोनोंके लिये हमें बराबर मोह है.

जगन्नाथ तुम तो सिर्फ विश्वम्भर २ करके मरती हो और वह तुम्हारी निन्दा सबसे करता फिरता है बड़ा चतुर है बी. ए. पास किया सब तीन चार हजार रुपया मिलेगा सो हमारे हाथ में आवेगा यही न व्याह करनेका कारण है.

जगन्नाथको आहार खतम करके जल्दीसे जाते देखकर गुलाब चिल्लाकर बोली "है यह क्या अभी पान खाना है."

जगन्नाथ ने उसके उत्तर में कहा "अब और कुछ खानेका काम नहीं है अब भूखही कहाँ है उस हतभागे विश्वम्भरकी बात याद पड़ने पर हमारा पेट गुस्सा से ही भर जाता है."

इसके बाद मुँह हाथ धोकर फिर बाहर आकर जगन्नाथ ने देखा कि गुलाब विषन्न मन बैठी है उसे ऐसा देख जगन्नाथ ने कहा—"अब उस बातको सोचने की क्या जरूरत है तुम लोगोंमें न जाने किस साइतमें देखा देखी हुई थी कि इतना करके तुम उसे संतुष्ट नहीं कर सकती."

गुलाब एक दीर्घ निश्वास त्यागकर बोली "वह बात नहीं सोचती वह सोचहीके क्या करूँगी अब मेरा काला मुँह कहीं दिखाने योग्य

नहीं है हमारी निन्दा केवल इसी शहरमें क्यों जहाँ जहाँ तुम्हारे आत्मीय बंधु हैं वहाँ वहाँ निन्दाहा निन्दा हुई है लेकिन मैं उस निन्दासे नहीं डरती । वे लोग तो भीतर का कुछ हाल जानते नहीं तुम तो सब रात दिन देखते जानते ही हो और तुम्हारे जानने ही पर खतम है हम किसीसे बड़ाई नहीं चाहती आदमीके करनेसे क्या नेकी बदी तो भगवान देखते हैं."

"फिर मैं सोचतीहूँ कि कहाँ के कहाँ हमारे मुँहसे बात निकलगयी कि जिससे तुम्हारा खाना भी नहीं हुआ."

यह कहते २ गुलाबके नेत्र छल २ करने लगे, उसे देख जगन्नाथ का प्राण व्याकुल हो उठा । उन्होंने तुरंत पूछा "सुनो इस लिये तुम दुःख न करो मेरा आहार अच्छी तरहसे हुआ है."

जगन्नाथ का आहार तो यथेष्ट हुआ ही है और न होनेसे भी गुलाब को उतना दुःख नहीं जितना एक दूसरे कारण से है वह कारण यही है कि गुलाब का आज का उद्देश अभीतक सफल नहीं हुआ एक भूमिका बाँधके कुछ कहा भी था उसे जगन्नाथ ने अब एकदम भुलादिया है इसी सबबसे उसने कहा "हमारा मुँह जारने योग्य है हमने तो पहले ही गुस्सा करने से मना किया था एक बात कहने को थी सो भी न कहने पायी और तुम्हारा" जगन्नाथ ने बात काटकर कहा "हाँ हाँ अच्छी याद दिलाई, वह कौनसी बात कहने को थी कहो तो."

गुलाब "अब जब खाये ही नहीं तो कहने में क्या है बात यह है कि विश्वम्भर को अगर आईन पढ़ाओगे तो एक तोहिं-सारखताही है आईन जाननेपर हमारे ललित को कुछ बाँट खरा नहीं देगा सुनती हूँ कि आईन पढ़नेसे लोग बड़े धूर्त हो जाते हैं ललित एक तो लड़का है लिखा पढाभी नहीं फिर ऐसे सीधे को झटकार देना क्या बड़ी बात है और ललित ही का क्यों विश्वम्भर ऐसे लोग अगर आईन पढ़ेंगे तो बहुतोंका सर्व्व नाश

करेंगे तो फिर घर का पैसा खर्च करके अपनी खुशी से दूसरे के सर्व्वनाश कराने का यत्न करना क्या अच्छा है?"

जगन्नाथ कुछ सोचकर बोले "ठीक कहती हो । वह तो अब हमारी बातही नहीं सुनता हम ने उस से कहा कि आफिस में नौकरी लगा देंगे तौ भी उसने लिखना पढ़ना न छोड़ा अब आईन पढ़ने को पैसा कौन देगा? हम घर का पैसा खर्च करके ठग नहीं बनावेंगे तुम्हारे कहने से ख्याल आया अब कलही उसका आईन पढ़ना बंद होगा."

गुलाबके आनन्दकी सीमा नहीं जब ललितने लिखा पढ़ा नहीं तो विश्वम्भर का पढना लिखना उस का आँख का काँटा था वह इतनी चेष्टा करने पर भी कृतकार्य्य नहीं होती थी क्योंकि विश्वम्भर की शिक्षापर गुलाब वा जगन्नाथका कुछ जोर न था । गुलाब केवल हिंसानल में जला करतीं उसकी ज्वाला इतनी प्रबला थी कि यदि प्राण दण्डका डर न होता तो विश्वम्भरका खून कर के ज्वाला निवारण कर डालती.

द्वितीय परिच्छेद ।

दूसरे दिन सबेरे जगन्नाथने विश्वम्भर को बुलाकर कहा "अब और तुम्हारे आईन पढ़नेका काम नहीं है उसके बदले यदि चाकरी करो तो अच्छा है."

विश्वम्भर स्तम्भित होकर बोला " दो वर्ष पढ़ा अब एक बर्ष और पढ़ना है बंद कैसे करूँ ?"

जगन्नाथ विरक्त होकर बोले"आईन पढ़कर ठग बनोगे ? उससे तो एक नौकरी करलेना अच्छा है."

विश्वम्मर ने बाप से कहा "बापूजी ! आजकल नौकरी मिलना मुश्किल है किसकी खुशामद करें आपही कहिये ? इसीसे तो आईन परीक्षा पास करने की इच्छा है चाकरी करनेसे क्या स्वाधीन व्यवसाय अच्छा नहीं है?"

जगन्नाथ इस बार और विरक्त होकर बोले "हम जो कहेंगे वह तुम्हें नहीं अच्छा लगेगा और जिसके लिये मना करेंगे वही तुम्हारे लिये अच्छा है?"

बिना अपराधके पितासे ऐसा तिरस्कृत होकर विश्वम्भर बहुत दुःखी हुआ तथापि वह कष्ट छिपाके कहा "आप हमें ऐसा अबाध्य समझते हैं ? मैं क्योंकर अवाध्य हुआ ?"

जगन्नाथ फिर क्रोध प्रकाश करके बोले "अब और अवाध्य क्या होगे ? हमने तुम्हारी शादीका बंदोबस्त किया तुमने एक वारगी शादीही न करनेकी प्रतिज्ञा ठान दी हम आईन न पढ़ने को कहते हैं तुम हमारा कहना न मानकर तर्क वितर्क करते हो हमने इतना खर्च करके पढाया लिखाया उसका फल यही है?"

इस बातसे विश्वम्भर को बड़ाही कष्ट हुआ विश्वम्भर क्या उत्तर देगा सोचते २ कुछ भी स्थिर न कर सका लेकिन जगन्नाथ ने फिर कहना शुरुअ किया "हम क्या समझते नहीं हम सब समझते हैं। सिर्फ लिखा पढ़ी सीख लेने से क्या होगा? तुम्हें लिखा पढ़ाकर जो फल देखताहूँ उससे तो और किसीको पढ़ाने की इच्छा नहीं होती। इतनी हिंसा ! इतना द्वेष ! तुमने क्यों शादी नहीं की? यह क्या हम नहीं समझते? तुम्हारी शादीपर ललित की भी शादी होगी छोटेभाई से इतना डाह करते हो?"

विश्वम्भर भी अवाक है दूसरा कोई नहीं है जिससे विश्वम्भर ने जगत् देखा है जो इस पृथ्वी का स्वर्ग जो इस पृथ्वी के साक्षात् धर्म्म जो इस पापमयी पृथ्वी के एक मात्र मुक्तिके उपाय जिनके संतुष्ट होनेसे स्वर्गके सब देवता संतुष्ट हो सकते हैं विश्वम्भर के उसी परमाराध्य पिताके मुख से यह बातें। यह सभी विश्वम्भर के भाग्य के दोषसे घटता है नहीं तो विश्वम्भर का अपराध ही क्या है शिर नीचे कर नीर बहाकर यही सब सोचने लगा । बूँद बूँद अश्रुजलभी गिरने लगा । जगन्नाथ की दृष्टि इधर नथी, वे

फिर भी भर्त्सना करने लगे मुझमें सह्य शक्ति ज्यादा है इसी से यह सब सह्य किया है दूसरा कोई होता तो ऐसे लड़के का मुँह नहीं देखता हम तुम्हारे आईन पढ़ने के लिये अब एक पैसा भी नहीं देंगे जो तुम्हारी इच्छा हो सो करो."

इस बार विश्वम्भरने विनीत भाव से कहा "यदि खर्च के लिये पढ़ाने में आप को आपत्ति है तो हम आप से एक पैसाभी नहीं चाहते इस के लिये जहाँ से होगा वहाँ से हम बंदोबस्त करेंगे."

जगन्नाथ ने और कुछ न कहा उस वक्त क्रोधके मारे कहने की शक्ति न थी । मनही मन कहने लगे "इतनी ढिठाई इतना तेज! इतना अहंकार! हमारा एक पैसा भी नही चाहता! यह बात हमारे सामने कहनेका साहस हो गया."

जगन्नाथ अधिक क्षणतक वहाँ नहीं रहे क्रोध में सदर दरवाजाके निकट आये । इसी समय उपाध्या से साक्षात् हुआ । उन्हों ने जगन्नाथ को देखते ही कहा "एक बहुत अच्छी खबर है मैंने तुम्हारे लड़के का बढिया सम्बन्ध स्थिर किया है वह कन्या परमा सुन्दरी है मानो साक्षात् भगवती है और तिलक की कमी न होगी तीन चार हजार तक मिलेगा और आप के मत से ही विवाह हो जायगा."

जगन्नाथ ने तत्क्षणात् पूछा "हमारे किस लड़के की शादी के बारे में कहते हो? "

उपाध्या—"क्यों आप के ज्येष्ट पुत्र विश्वम्भर बाबूकी?"

जगन्नाथ—"उस का सम्बन्ध इस समय रहने दीजिये क्या आप ललित की शादी उस के साथ स्थिर कर सकते हैं?"

उपा०—" क्यों बड़े बाबूके विवाह का सम्बन्ध कहीं स्थिर हो गया है क्या?"

जग०—नहीं वह हमारे कहने से बाहर है हमारे स्थिर करने से वह शादी नहीं करेगा तो फिर हम क्यों उसके लिये ठीक करें लोगोंसे अपमानित होने से क्या लाभ. "

उपा०—"हूँ ! ऐसा ! हम लोग तो बाबू को खूब शिष्ट शान्त जानते हैं ऐसा विद्वान् ऐसा बुद्धिमान् इस तरहसे "

जग०—"वह बात इस समय जाने दीजिये आप से एक बात पूछते हैं यदि विश्वम्भर शादी न करे तो हम ललित को नहीं व्याह सकते?"

उपाध्या ने कुछ देरतक सोचकर कहा "जब सौतेला भाई है और एक पेट का नहीं है तो क्यों नहीं व्याह सकते? और एक पेटके होने से भी अनुमति लेकर बड़े को छोड़कर छोटे को व्याह सकते हैं शास्त्र पुराण में भी वह विधि है और लोकाचार में भी लोगों को ऐसा करते हुए देखा गया है."

जग०—"तो फिर आप ललित का व्याह स्थिर कीजिये इसे क्या ललित के लिये नहीं स्थिर कर सकते?"

उपाध्या ने कुछ सोच समझ कर कहा " हाँ वह चेष्टा की जायगी लेकिन जानते हैं आज कल कन्याके बाप पासही देख ते हैं जबकि कन्याही ने दो तीन सर्टीफिकेट हासिल किये हैं तब फिर पास बर न मिलने से कैसे व्याहेगा? आपही कहिये तो अच्छा अगर यह सम्बन्ध न हो तो दूसरा सम्बन्ध ललित के लिये स्थिर कर सकते हैं."

जग०—"जहाँ हो एक अच्छी पत्नी देखकर सम्बन्ध स्थिर कीजियेगा."

उपाध्याय—" इस में आश्चर्य्य क्या है? तुम्हारे पुत्र को कन्या अर्प्पण करे यह तो उसका सौभाग्य है.

कुलमें शील में मानमें धनमें फले फूले हुई हैं लेकिन हमारे बबुआका कुछ उद्धत स्वभाव है अब भी दंगा फसाद करते रहते हैं."

जग—"न वह सब दोष आजकल नहीं सुनते बालावस्थामें वैसाही होता है और फिर बड़े होनेही पर सुधर जाता है."

इसी प्रकार कुछ देरतक बात चीत होती रही पीछे पुरोहित अपने घर चले गये और जगन्नाथ ने तुरंत घर में जाकर गुलाबसे

कहा "विश्वम्भर व्याह न करे नहीं सही हम ललित को व्याह देंगे यही स्थिर किया है"

गुलाब के आह्लादकी सीमा न रही। उस असीमानंदके कुछ कम होनेपर उसने पूछा "और विश्वम्भरके आईन पढनेका क्या हुआ."

जगन्नाथ विरक्त भावसे बोले "पत्थर पड़े उसे मत याद दिलाओ."

गुलाबने मनमें कहा—"लेकिन मैं तो सदा उसे याद रक्खूँगी."

तृतीय परिच्छेद।

एक निर्जन गृह में बैठकर मा बेटे परामर्श करते थे इसी समय बेटे ने कुछ जोर से कहा "मा ! उसे डरो मत हम चाहें तो इस घरसे क्या इस पृथ्वी से जन्म भरके लिये निकाल दे सकते हैं."

माताने तुरंत पुत्रको धीरे बोलने का इशारा किया "इस वक्त वैसा करने की जरूरत नहीं है धर पकड़ होने पर बडी विपद होगी."

बेटेने इस बार धीरे से कहा "धर पकड़ क्यों होगी हम खुद इस काम को नहीं करेंगे हमारे पास ऐसे लोग हैं कि एक बार बता देने हीसे सबका ठीक हो सकता है।

मा बोली "ना! बच्चा इस वक्त यह साहस हमें नहीं होता तौभी इन लोगों को तो बतलाना अच्छा है जरूरत पर काम आवेंगे हठात् तुम्हें किसी फसाद में जाने को नहीं कह सकती इस घड़ी सिर्फ घर से निकालने का उपाय करो उसको न निकालने से तुम्हारी शादी में बाधा है। जो सम्बन्ध करने आता है वह उसी को लड़की देना चाहता है। इस वक्त उसके खेदने का क्या उपाय है?"

लड़के ने कुछ देर तक सोचकर कहा "क्यों मा ! विष खिला-देने से काम न चलेगा."

माने भी कुछ सोचके कहा "नहीं, नहीं यह बात इस वक्त नहीं. कोई काम जल्दीसे करना ठीक नहीं है केवल घरसे निकाल दो."

बेटा तुरंत उद्धत भावसे बोला "उसके लिये सोच क्या है? विश्वम्भर क्या हमसे जोरावरहै? हम उसे मारकर खेद दे सकते हैं."

माता ने कहा "नहीं! नहीं मारकर निकालना ठीक नहीं ऐसा कहनेसे लोग क्या कहेंगे? चतुरतासे निकालना होगा."

बेटा जब कुछ भी स्थिर न करसका मातासे विरक्त होकर कहा "लोग क्या कहेंगे? हमारे सामने जो बोलेगा उसे हम टुकड़े २ नहीं कर डालेंगे? किसका इखतियार है कि जरा चूँ करसके?"

माता दुःखी होकर बोली "तुम्हारी गँवार बुद्धि अब तक नहीं गयी तुमको इतना समझाया बुझाया तौ भी कुछ न समझ सके इस गँवार पनेमें क्या बहादुरी है? मनकी किसीसे क्यों कहोगे? जो हमारा परम शत्रु है उससे ऊपरसे खूब मीठी २ बात करनी। ऐसा नहीं करनेसे क्या शत्रु जल्दी जीता जासकता है? गँवारीके बदले कौशलतासे काम जल्द होसकताहै इस घड़ी उसे क्योंकर खेदूँ?"

पाठक इतनी देरतक बात चीत सुन चुके अब हमें इन दोनों का परिचय नहीं देना होगा! माता वही जगन्नाथ की नव परिणता और पुत्र वही ललित कुमार है ललित ने इस वार कहा "हम तुम्हारी कौशलता नहीं जानते मा! हम जोर को समझ सकते हैं जोर के आगे और क्या है?"

गुलाब बहुत देरतक चुप चाप रही फिर कहा "तुम एक काम करसकते हो? दूसरी चामीसे बाकस खोलना तो तुम अच्छी तरहसे जानतेही हो विश्वम्भर का बाकस दूसरी चाभीसे खोलसकते हो? अगर वह इस घरमें रहता तब तो मैंही खोललेती."

ललित आह्लादित होकर बोला—"हम बहुत खूबीसे यह काम करसकते हैं."

तब गुलाबने आस्ते २ कहा "हमारे सोनेका चंद्रहार उसके बक्स में रखकर फिर चामी बंद करसकते हो!"

ललित ने इस वार भी महाआह्लादके साथ कहा "बहुत मजेमें."

फिर उसी दिन रातको उसी प्रकार काम किया गया दूसरे दिन सबेरे गुलाब के चन्द्रहार चोरी जानेकी खबर फैली। गुलाब व्याकुल

है उसके चीत्कारसे घर काँप रहा है । पहले दास दासियोंपर सन्देह हुआ किन्तु इस समय ललित गुलाब को रोते देखकर मुस्कुराता था; उसे इस तरह हँसते देख जगन्नाथ का सन्देह एक बार उसीपर हुआ था लेकिन गुलाबसे उसके लिये डाँट पानेके डरसे वह सन्देह कोसों दूर भाग गया.

गुलाब चन्द्रहार के शोक से एक वारगी धराशायी हुई । उस दिन जगन्नाथ का आफिस जाना तक बंद रहा दासीदास बहुत पीटे गये लेकिन किसी प्रकार चन्द्रहार का कुछ पता न मिला तब जगन्नाथ ने थानेमें चोरी की इत्तिला दी। पुलिस इन्स्पेक्टर व जमादार तहकी-कात में आये जब जाना गया कि चोरी होने के एक ही घंटा पीछे हाल जाना गया है उस वक्त से कोई आदमी घर से बाहर नहीं गया है यह चोरी घरके लोगों ही द्वारा हुई और चुराया माल घर ही में है पुलीस ने यही सिद्धान्त स्थिर किया जगन्नाथ का सन्देह किसीके ऊपर न हुआ तब पुलीस के लोगों ने पहले उसी घरकी खाना तलाशी ली । भीतर से चोरी गयी है और दासदासियों में किसीन किसीने लिया ही होगा । सुतरां एक एक करके भीतर के सब घरों को देखा लेकिन कहीं चन्द्रहार न मिला । सदर घरके किसीघर-का भी अनुसंधान किया गया कुछ पता न मिला तब हताश होकर पुलीस चली जाने की चेष्टा करती थी इसी समय ललित कुमार ने आकर विश्वम्भर का घर तलाश करने को कहा । उसकी आलमारीकी किताबों को जमादार ढूँढने जाते थे किन्तु ललित ने उसका बकस ढूँढने को कहा। उस बकस के खोलते ही ऊपरही चन्द्रहार देखा गया।उस समय एक भयानक हल चल मचा । पुलीस इन्स्पेक्टर ने पूछा "यह बक्स किसका है."

विश्वम्भर भी वहीं खड़ा था तुरंत निडर होकर बोला "यह बक्स हमारा है"

पुलीस इन्स्पेक्टरने कहा "आपके बक्स में यह चन्द्रहार कहाँ से आया?"

विश्वम्भर ने कहा "सो मैं कुछ नहीं जानता मुझे मालूम होता है कि किसीने मुझे दुःख में डालने के लिये यह वस्तु हमारे बक्स में रख दी है."

पुलीस इन्स्पेक्टर बोले "बक्स की चामी तो आपही के पास थी फिर बक्स खुला कैसे?"

जगन्नाथ इतनी देरतक स्तम्भित होकर वहीं खड़े थे, इस बार उन्होंने कहा "आप तो जावेहीगा साथ साथ दूसरेको भी कैद में डालेगा! मालूम होता है इसी तरह आईन पढ़नेके लिये रुपया जमा करता था!"

विश्वम्भर के शिरमें मानो वज्राघात सा लगा! पिताके मुहँ से यह बात सुनकर विश्वम्भर के मुँहसे और कोई बात न निकली। उसी जगह मृतवत् खड़ा रहा तब इन्स्पेक्टर ने और कुछ न कहकर एक चौकीदार से कहा "इस को पकड़कर थानेमें ले चलो."

वहीं एक चौकीदारने तुरंत आकर विश्वम्भर का हाथ पकड़ा। विश्वम्भर ने उस समय चारों तरफ अंधकार देखा!

चतुर्थ परिच्छेद।

आज चार दिन हुए विश्वम्भर बिना दोषके पुलीस के हाथ में पड़ाहै। विश्वम्भर को पुलीस के हाथ से कैसी यंत्रणा भोगनी पड़ती है सो कहने योग्य नहीं है। उसके मन की अवस्था भी सहज ही अनुमान की जा सकती है इस चोरी में विश्वम्भर चोर है इस बात का पुलीस को भी संदेह था सुतरां विश्वम्भर उसी दिन पुलीस के हाथसे अव्याहति पाता लेकिन इधर गुलाब ने ललित के द्वारा पुलीस को हस्तगत किया और इस मुकद्दमें में विश्वम्भर दोषी साबित होकर दण्डित किया जावे इसकी तदबीर की अंतमें जबकि पुलीस का इखतियार नहीं इस समय जगन्नाथने चाहे लोक लज्जाके भय से हो वा पुत्रस्नेहसे ही हो इस मुकद्दमा को उठा लेने की चेष्टा की

थी किन्तु चोरी के मुकद्दमे में ऐसा राजीनामा नहीं चलता सुतरां उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई.

तौभी विश्वम्भर के एक मित्रने उसके अनुरोध से पहले ही दिन छेदीलाल व उसी वृद्ध शंकर पांड़े इन दोनों आदमियों के पास टेलीग्राम द्वारा यह भयंकर संवाद भेज दिया था। उसके दूसरे ही दिन वे दोनों उस जगह आउपस्थित हुए और मुकद्दमे की तदबीर करने लगे। बहुत चेष्टा से दश हजार रुपये की जमानत देने पर विश्वम्भर हवालात से छोड़ा गया था।

आज पुलीस कोर्ट में विश्वम्भर के मुकद्दमे का विचार होने वाला है कचहरी लोगों से भर गयी है जगन्नाथ के बहुत से आत्मीय अपना २ काम छोडकर इस मुकद्दमे का फल जाननेके लिये उपस्थितथे विश्वम्भरकी ओर से एक प्रसिद्ध व्यारिस्टर नियत किये गये हैं इस मुकद्दमे में विश्वम्भर की ओर से छेदीलाल ही अपना व्यय करतेथे उनके चिरानंद हृदयमें भी विश्वम्भर का विषन्न मुख देखकर विषादका तरंग उठता था। लेकिन उस गाम्भीर्य्य पूर्ण विचारालयमें आकर भी छेदीलाल विश्वम्भर को उत्साहित करनेके लिये एकाध रहस्यकी बातें कहना नहीं चूकते थे। तौ भी छेदीलाल को दुःख यही है कि आज अदालतमें जगन्नाथ नहीं आये हैं.

दोपहरके बाद विश्वम्भर के मुकद्दमेकी पुकार हुई पहले पुलीसके जमादारकी गवाही लीगयी। इस गवाही में इन्स्पेक्टर नहीं थे जमादारने विश्वम्भरके विपक्षमें गवाही दी तौ भी व्यारिस्टर की रायसे यह बात उठी कि ललित पुलीसको विश्वम्भर का घर तलाश करनेके लिये लिवा गया और पहलेही बक्स ढूँढनेको क्यों कहा.

इस मुकद्दमे में दूसरा गवाह ललित कुमार है ललित की जबान वन्दीका पहलाभागतो विश्वम्भरके विपक्ष में हुआ उसके बाद व्यारिस्टर ने पूछा "जब इस चोरी की बात तुमको पहले मालूम हुई तब विश्वम्भर बाबू पर तुम्हारा संदेह हुआ था कि नहीं."

ललित—"संदेह क्यों नहीं हुआ था.?"

ब्यारिस्टर—"तो यह बात पुलीससे पहलेही क्यों न कही ?"

ललित—"पहले पकड़े न जाने से कहने से क्या फायदा है?"

ब्यारिस्टर—"इसी से लोगों को दिखानेके लिये पहले भीतर घर की तलाशी कराई थी?"

ललित—"अन्दर से चोरी गयी है इससे पुलीस ने भीतर ही से तलासी करना शुरुअ कियाथा."

ब्यारिस्टर—"तुम अगर चोरी हो जानेपर जानतेथे कि वह चन्द्रहार विश्वम्भर बाबूके बक्स में है तो पहलेही पुलीस को वह बक्स क्यों नहीं दिखलाया? पहले बे फायदा पुलीस को तकलीफ दी जब खाना तलाशी करके निराश होकर पुलीस फिरी जातीथी तब उस बक्स को क्यों दिखाया?"

ललित—"अगर हम उस बक्स को न दिखा देते तो पुलीस माल-बरामद नहीं कर सकती थी"

ब्यारिस्टर—"सो हम जानते हैं तुम भला कहो तो दूसरी चाभी से बक्स खोलकर उसमें चन्द्रहार रख दिया था कि नहीं?"

इस बार ललित का मुँह सूख गया थां भयसे उस का हृदय काँप उठा उस समय हठात् ललितके मुँहसे यह बात निकल गयी "बक्स—में हमने—चन्द्रहार—रक्खा था सो किसने देखा था?"

ब्यारिस्टर साहब कुछ थमकर बोले "उस का प्रमाण तो हम इसी वक्त अदालत में देंगे पहले तुम तो बताओ रक्खा था कि नहीं झूठ साबित होने से तुम्हें जेल होगा" ललित बहुत डर गया और सहम बोला "हमने भूल से रख दिया था"

ब्यारिस्टर ने और कोई प्रश्न नहीं किया न्यायालयनिस्तब्ध है किसीके मुँह में बात नहीं है सब कोई एक बार ही स्तम्भित हो गये ! कुछ देरके बाद विश्वम्भर ने ब्यारिस्टर के कान में कुछ कहा तब ब्यारिस्टर ने अदालत को कहा "विश्वम्भर बाबूके अनुरोध से

अब हम इस साक्षी से और कुछ पूछना नहीं चाहते क्योंकि अब प्रश्न करने से परिवारिक गोपनीय रहस्य प्रकाश हो जावेगा। विश्वम्भर बाबू के समान एक शिक्षित व्यक्ति के प्रति उनके पिताकः र्तृक इस तरह अन्याय दोषारोप बड़े दुःख का विषय है । इस समय उनके मैभाके बेटे ललित हीने विश्वम्भर को विपदमें डालने के लिये उनके बक्समें चन्द्रहार रक्खा था । जिनं को विपद में डालने के लिये ऐसा भयंकर षड़यंत्र हुआ था जब कि वही विश्वम्भर बाबू सांसारिक बात अदालत में प्रकाश होने के भयसे साक्षी को प्रश्न करने से निषेध करता है तब हम और प्रश्न नहीं करैंगे। अब अदालतकी क्या आज्ञा है ! ”

तब विचारपतिने कहा “यह अभियोग झूठा है यह हम को अच्छे प्रकार से विश्वास हो गया है । मुकद्दमा डिसमिस किया जाता है लेकिन ऐसे षड़यंत्रकारियों की उपयुक्त शास्ति मिले यही करना चाहिये । असामी के आईनज्ञ ब्यारिष्टर से हमारा अनुरोध है कि वे उपयुक्त धारा के अनुसार इस भयानक षड़यंत्र कारियों के विपक्षमें नालिश करैं ? ”

उसी समय विचारालय एक आनंद ध्वनिसे परिपूर्ण हो उठा अदालतके शान्तिरक्षक धीरे २ कहकर चिल्लाने लगे । छेदीलाल आनंदसे अधीर होकर बोले “आनंद भी धीरे २ होताहै.”

शंकर पाँड़ेने दौड़कर विश्वम्भर को आलिङ्गन किया वृद्धके आँसूसे उसकी छाती भीजती थी किन्तु विश्वम्भर षड़यंत्र कारियों के विपक्ष में मुकद्दमा चलाने को सहमत न हुआ अदालत से फिरकर विश्वम्भर अपने घर नहीं गये । छेदीलाल के साथ उनके घर जानेको कहा । छेदीलाल की अवस्था इस समय बदल गयी है । अपनी माता के मरने पर वह अपने विपुल अर्थ के उत्तराधिकारी हुए हैं

उन्हों ने शंकर को भी नहीं छोड़ा वृद्धको मृत्यु तक पालन के लिये प्रतिज्ञा बद्ध हुए। विश्वम्भर और शंकर को साथ लेकर घर पहुँचते ही छेदीलाल ने अनुपमा को बुलाकर कहा "लड़का लड़का कहके मरती हो अब तुमको हमारा माथा न खाना पड़ेगा एक बारगी जोड़ा लड़का लाया हूँ एक युवा और एक बूढा देखना उसी रक्त का ढेला है छोटे लड़के की साध न करना."

विश्वम्भर को देखकर अनूपमा के आल्हाद की सीमा न रही। जब शंकर और विश्वम्भर ने अनूपमा को प्रणाम किया तब अनूपमा आल्हाद से गद्गद होकर मनही मन बोली "अब क्या मैं इन की मा हूँ?"

पञ्चम परिच्छेद।

मुकद्दमे के दिन अदालतमें न जानेपर भी जगन्नाथ उस रोज आफिस में नहीं गये थे। आफिसमें भी यह सम्बाद प्रचारित हुआ था तौ भी जगन्नाथ के बड़ा बाबू होनेसे उन्हें कुछ बात कहनेका किसीको साहस नहीं हुआ। उस दिन जगन्नाथ को कुछ सुख न था क्योंकि जगन्नाथ को निश्चय विश्वास था कि विश्वम्भर को जेल होगा चाहे जो हो लेकिन पिताके मनमें इसके लिये दुःख न होगा यह असम्भव बात हम किसी प्रकार कहसकते हैं?

जगन्नाथ विषन्न मनसे सोचते थे "कहाँ का कहाँ तो हमने एक चन्द्रहारके लियेथाने में इत्तिलादी लड़का जन्म भर को खराब हुआ."

इसी समय वहाँ गुलाब आकर बोली—"तुम सोचमें क्यों पड़े हो? भगवानने कञ्चनमें काई नहीं लगायी हमने काली माई को जोड़ा चद्दर चढानेको माना था और ललित को इजहार बदल देनेके लिये कहा था उसीसे काली माईने प्रार्थना सुनी है ललितके एकही इजहारसे

हमारा विश्वम्भर बेकुसूर हुआ है तुम्हारा सूखा मुँह देखकर हमने कुछ उठा नहीं रक्खा था हमने भीतरही भीतर यह सब किया था."

मायाविनी गुलाब के मुखसे शिकार छूट गया है जब यह सम्बाद उसको मिला तब उसने स्वामीसे यह बनावटी बात कही थी। इससे जगन्नाथके आनंद की सीमा न थी। कालीको प्रणाम करते २ गुलाबही को प्रणाम किया। जगन्नाथने कहा "तुम्हारी इतनी बुद्धि तो मैं नहीं जानता था। मैं अपने लिये नहीं सोचता; विश्वम्भरको कैद होनेसे तुम्हारी भी निन्दा होती। इस घड़ी भगवानने हम लोगों के मुँहमें चन्दन लगाया."

गुलाबने कहा "हमने निन्दाके डरसे यह काम नहीं किया है प्राणके भयसे किया है नहीं तो किसकी छाती कड़ी है कि अपने लड़केके मुँहसे कहवावे कि विश्वम्भरने चोरीनहीं की है हमारे ही लड़के ने भूलसे वह चन्द्रहार उसके बक्समें रख दिया था विश्वम्भरको बचानेके लिये ललितने ऐसा कहा था."

जगन्नाथ सिहर कर बोले "हैं! ललित जो बिपदमें पड़ तो?"

गुलाब—"इस समय वह हमने समझा है लेकिन उस समय यह ज्ञान न था, केवल विश्वम्भर को रक्षा पानेकी चेष्टा की इसीसे ऐसा किया था."

जगन्नाथ मन ही मन बोले—"हमारी तरह भाग्यवान् और कौन है जो गुलाबकी निन्दा करते हैं उनका मुँह हम नहीं देखेंगे। निश्चय यह कोई देवी है."

इस घटना के आठ महीने बाद महासमारोहसे ललित कुमार का शुभ विवाह सम्पन्न हुआ। छेदीलाल को निमंत्रण पत्र भेजा गया था किन्तु उन्होंने निमंत्रण रक्षा नहीं की। विश्वम्भर ने उनके जाने के लिये वार २ जिद्द किया था किन्तु छेदीलाल ने हँसते २ कहा, हम गुलाब के मुँहसे शिकार काढ लाये हैं इस बार हमको पाने से

एक वारगी खूनी मुकद्दमा का असामी बना देगी हमारा जो निमंत्रण हुआ है वह केवल मायाविनीके कौशल से है । बच्चा एकठो वाण है हमें वहाँ जाकर निश्चयही प्राण गँवाकर लौटना पड़ेगा."

विश्वम्भर हँसकर बोला "आपको प्राण का डर होगा किन्तु हमें प्राणका डर नहीं है अगर हमारी परीक्षा का दिन निकट न होता तो हम अवश्य जाते."

छेदीलाल बोले "तुम्हें तो निमंत्रण नहीं आया है बिना निमंत्रण के जाकर क्या दक्षयज्ञ करोगे ? और इस समय तुम्हारे जी का तुम्हें मोह ही क्या है? हाँ जब तुम्हारे लिये एक बहू लाऊँगा तब देखूँगा कि प्राणका मोह होता है कि नहीं रमेश भाई की लड़की के साथ तुम्हारा व्याह स्थिर किया गया है वहू को कौन २ गहना देना होगा इसी के लिये अनूपमा रोज रात को झगड़ा करती है ललित का व्याह सुनकर वह तुम्हारे व्याह के लिये धराशायी हो पड़ेंगी

विश्वम्भर यहाँ आकर अनूपमाको ;'मा' कहकर पुकारता है सुतरां छेदीलाल उसके पिता तुल्य हैं ! तौ भी वह विश्वम्भरके साथ आमोद करनेसे कुंठित नहीं होते इस समय विश्वम्भर बड़ी लज्जामें पड़ा । छेदीलाल के ऐसे प्रश्नका क्या उत्तर देगा विश्वम्भर कुछ भी स्थिर न करसका छेदीलाल फिर बोले "बहू को देखनेसे तुम नापसन्द नहीं करोगे वह औरत नहीं परीकी बेटी है."

और चुप रहना उचित न समझकर विश्वम्भर बोला "आप मा को कहियेगा हमारी शादीके लिये इतना व्यस्त न होवें हम अपने उपाय क्षम न होनेसे विवाह न करेंगे."

छेदी—"यह बात कहनेसे तो वह माथा खा डालेंगी. वह जानती है कि, तुम उसीके पेटके लड़के होतो जब उसके हाथ इतना रुपया है तो वह बहूको खिला नहीं सकेंगी!"

इसी समय अनूपमा स्वयं आकर उपस्थित हुई विश्वम्भर अनूपमाको देखकर धीरे २ वहाँसे चले गये । तब छेदीलालने अनूपमासे

कहा "आज रानीजी दरबार करेंगी क्या ? हमारे हाथ में बहुत सी अर्जियाँ हैं."

अनूपमा हँसकर बोली "मंत्रीबर ! तुम्हारे अनुरोधसे हम आज" अनूपमा और न बोलसकी हँसते २ लोट पड़ी तब छेदीलालने कहा "यह रानीगिरी तुम्हारा काम नहीं है इतना हँसके रानीगिरी करोगी? "

अनूपमा बहुत कष्टसे हँसी रोककर बोली "उस समय रोते २ जलती थी अब हँसते २ पेट फूल जाता है."

छेदी०—"हाँतो राज कार्य्य छोड़कर केवल हँसनाही होगा?"

अनूपमा । "तो मंत्री किस लिये रक्खा है ?"

छेदीलाल इस समय हाथ जोड़े खड़ेथे कहने लगे "जिस राज्यकी रानी इतना हँसती है उस राज्यका मंत्री यह दास नहीं होसकता मैं मंत्रित्वसे जबाब देताहूँ । हम सब सह्य करसकताहूँ इस अपराधके बदले कारावास सहने को भी तैयार हूँ लेकिन रानीजी की हँसीका अत्याचार नहीं सह सकता."

तब अनूपमा उस गाम्भीर्य्य को नष्ट करके छेदीलाल की दाढी और अपनी गर्दन हिलाते२ बोली "तो तुमने हँसना क्यों सिखलाया?"

छेदीलाल इस बार नाकसे बोले "तो एक बार रोवो तुम्हारा रोना सुननेको बहुत मन चाहता है बहुत दिनतक नहीं सुना. "

अनूपमा हँसते २ बोली " मैं क्या तुम्हारे हुक्मी नौकरहूँ कि जब कहोगे तब हँसूगी और जब कहोगे तब रोऊँगी ? "

छेदीलाल जीभ काढ़कर बोले "बापरे मैं क्या तुम्हें ऐसा कह सकताहूँ ? तुम हमारे हृदय राज्यकी रानी हो."

अनूपमा इस बार दोनों आँखें छल छल करके बोली "अगर तुम मंत्री गिरी से जवाब दोगे तो मैं राज्य शासन कैसे करूँगी?"

अनूपमाके छलछल नेत्र देखकर छेदी चिल्ला उठे "कौन कहता है कि तुम रोना भूल गयी हो यह देखो यह देखो तुम्हारी आँखें छल २ कर रही हैं तुम्हारे पाँव पडताहूँ एक बार रोओ रोओ-रोओ."

अनूपमा फिर हँसते २ लोटपड़ीं । छेदीलाल-रोओ २ कहके जितना चिल्लाते थे अनूपमा उतनाही हँसती थी । अन्तमें अनूपमा ने हाथ जोड़कर हाँफते २ कहा "अब मैं नहीं हँस सकती । हँसते २ पेट दरद करने लगा तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ अब और हमेन हँसावो."

छेदीलाल ततक्षणात बोले "मैं तो तुम्हें रोनेके लिये कहताहूँ हँसती हो क्यों?"

इस बारभी अनूपमा हाँफ कर बोली-"तुम्हारे रोनेका नाम लेने ही से हमें हँसी आती है."

छेदीलाल इस बार ईषत् हास्य करके शिरहिलाते २ बोले "हम भरसक तुम्हें विधाता की अपूर्व्व सृष्टि कहते हैं!"

षष्ठ परिच्छेद।

विश्वम्भरनाथ ने आईन परीक्षा पास करके पिताको एक पत्र लिखा था लेकिन जगन्नाथने कुछ उत्तर न दिया तौभी विश्वम्भर की पितृभक्ति कम न हुई । जिस समय उसके पिताके बखिलाफ कोई कुछ कहता उसी समय विश्वम्भर मनही मन सोचता-

"पिताधर्म्मः पितास्वर्गः पिताहि परमन्तपः।
पितरि प्रीतिमायान्ते प्रियं तेसर्व्व देवताः" ॥

जगन्नाथके आत्मीय स्वजन सभी पिता होकर पुत्रके प्रति इस प्रकार व्यवहार करने से जगन्नाथकी निन्दा करते और उन लोगों को यहाँतक घृणा हुई थी कि यदि कोई जगन्नाथ का नाम उत्थापन करे तो लोगों के मन में ऐसी धारणा होती कि आज अमंगल न घटे । जगन्नाथभी इस जन्म में सुखी नहीं थे.

गुलाब की स्त्री और ललित की तरह पुत्र पाकर इस जन्म में कौन सुखी होगा? तौभी जगन्नाथ यह नहीं समझते कि गुलाब उनके दुःखकी जड़ है नाना भाँति की चिन्तासे जगन्नाथ का शरीर क्षीण होने लगा। इस समय जगन्नाथ का शरीर और मन दोनों अस्वस्थ

क् इसी समय हठात् एक दिन जगन्नाथ को बुखार आया वही ज्वर क्रमशः उनका सांघातिक होने लगा । सातवें दिन उनकी ऐसी दशा होगयी कि जगन्नाथ के इस बार उठ खड़े होने का भरोसा न रहा.

जगन्नाथके पास नकद व कम्पनी कागज (नोट) मिलाकर—प्रायः दो लक्ष रुपया था, यह बात केवल गुलाब ही जानती थी । इसी कारण वह अपने एक लौते पुत्र ललित कुमारको लेकर प्राणपणसे स्वामी की सेवा करती । मरनेके वक्त जगन्नाथ दूसरे को कुछ दे जावेंगे इसी डरसे गुलाब किसीको रोगीके निकट नहीं जाने देती। इस प्रकार अर्थ रहनेपर गुलाब और ललितकुमार की तरह स्त्री पुत्रके निकट सेवामें क्या त्रुटि होसकती है ?

जगन्नाथके किसी एक आत्मीयने विश्वम्भर को उसके पिताके सांधातिक रोगका संवाद भेजा था.

विश्वम्भर वह संवाद पाकर स्थिर न रह सका तुरंत अपने पिताके पास आउपास्थित हुआ.

विश्वम्भरने सोचा था कि इसी समय पिताकी सेवा करके जीवन सार्थक करूँगा । किन्तु विश्वम्भरके भाग्यमें वह बात न घटी । उसकी मैंभाने जगन्नाथके साथ भेटतक नहीं करने दिया और वैमात्र भ्राता ललितने उसको 'यत् परोनास्ति' अपमान करके घरसे निकालदिया विश्वम्भर आंसू पोंछते २ घरसे बाहर चला गया दश दिनके बाद गुलाबने स्वामीसे रोते २ कहा "बोध होता है इस यात्रामें तुम्हारी रक्षा न करसकूँगी."

यदि एकदम ऐसा वज्र गिरा तो मेरी क्या दशा होगी ललित रोजगार करके संसारमें दिन नहीं काट सकता तुम्हारे जाने से हमारी क्या दशा होगी?"

गुलाब के करुणा पूरित स्वर को सुन और दोनों आँखों से जल गिरते देखकर जगन्नाथ की आँखमें भी आँसू आया हम को शीघ्र ही यह पृथ्वी त्यागकर जाना पड़ेगा" यह बात जगन्नाथ के मनमें

उसी वक्त उदय हुई जगन्नाथ ने धीरे २ स्त्री से कहा "उसके लिये कुछ डर नहीं है हमारे पास जो कुछ है उससे तुम लोगों को कुछ कष्ट न होगा."

गुलाब भी सिसककर बोली " सो तो जानती हूँ लेकिन जो तुम एक बिलका बंदोबस्त न कर दोगे तो विश्वम्भर क्या ललित को कुछ छूने देगा? वह खुद ही इस समय वकील हुआ है तुम्हारी बीमारी के बारे में कई पत्र लिखे गये एक बारभी नहीं आया कुछ बुरा भला होने पर कमर बाँधकर दौडा हुआ आवेगा और तुम्हारे जाति शत्रु भी उसके साथ मिलकर एक बार गी धूम धाम मचा देंगे। इतने पत्र लिखे एक बार भी देखने नहीं आया !"

जगन्नाथ के उसी दुर्बल शरीर में क्रोध का लक्षण दिखाई दिया, जगन्नाथ क्रोध से बोले "हम उस लड़के का मुँह नहीं देखना चाहते."

गुलाब फिर रोते २ बोली "तुमतो पुण्यात्मा हो स्वर्ग चले जावोगे मैं अभागिनी इस पाप पृथ्वी में पड़ी रहूँगी । मुझे कष्ट नहो इसका कुछ उपाय किये जाव."

जगन्नाथ धीरे २ बोले "तुम्हारे समान सती लक्ष्मी स्त्रीके लिये अगर हम उपाय न किये जायँ तो हमारे ऐसा नराधम कौन है. अपने बहनोई को बुलाऊँगा जो हाईकोर्ट के एक अच्छे वकील हैं हम उन्हीं के [illegible] वसीयत लिखवावेंगे उस में विश्वम्भर को त्याज्य [illegible] जगन्नाथको [illegible]र तुमको अपना सब रुपया और नोट सौंप-देंगे और घर द्वार माल असबाब सब जो कुछ है वह ललित को दिये जायँगे !"

गुलाब चीत्कार करके बोली "ओफ़ वसीयत का नाम मत लो वह बात सुनते ही हमारे शिर में वज्राघात सा लगताहै."

इतना कहकर चिल्लाना बंदकर वहांसे उठी और तुरत वसीयत का बंदोबस्त किया । सबेरे ननदोई शिवध्यान सिंह को बुलाया वह आये किसी से कुछ न कहकर चुप चाप एक वसीयत तैयार

हुई। अन्यान्य आत्मीय स्वजन वा प्रतिवासी इत्यादि किसीको इसकी बात मालूम न हुई। वही वकील गवाही में गुलाब के मामा और दो भाई लिखे गये.

सप्तम परिच्छेद।

गुलाब का काम होगया अब जगन्नाथ के जीवन से क्या प्रयोजन है? वसीयत के तैयार होते ही जगन्नाथ की मृत्यु क्यों न हुई? उस के बाद ही गुलाब ने चिकित्सा करना बंदकर दिया। औषध बंद, पथ्य बंद शुश्रूषाबंद जब कि सब ही बंद तब भी जगन्नाथ की मृत्यु क्यों न हुई? गुलाब प्रतिक्षण जगन्नाथ की मृत्यु कामना करतीथी लेकिन् जगन्नाथकी मृत्यु नहीं हुई?

गुलाब दिनरात देवताओं के निकट स्वामी की मृत्यु के लिये प्रार्थना कर रही है तौ भी जगन्नाथ की मृत्यु नहीं हुई! ललित कुमार मृत्यु का उपाय जानता है? किन्तु गुलाब का यही दोष है कि जगन्नाथ को अभीज्ञान है कहकर उसने ललित को वह उपाय अवलम्बन नहीं करने दिया। अगर कोई जगन्नाथ को देखने आता तो गुलाब एकाध विन्दु आँसू गिराकर कहती "उनका कष्ट अब देखा नहीं जाता इतनी सेवा की जब कुछ नहीं हुआ तब छाती पर तवा बाँध के बैठी हूँ यह यंत्रणा क्या आँख से देखी जाती है? इस समय गङ्गा माई भीख दें तभी रक्षा है." ... पश।

जब कोई कहता "कुछ डर नहीं है अब भी यात्रामें तुम्ह... पावें तो पासकतेहैं." उसी वक्त गुलाब का मुँह डर से विषन्न होजाता और जब कोई कहता "अब अधिक देर नहीं है सब शेष हुआ जाता है" उसी वक्त उसके आनन्द की सीमा न रहती आंख का आँसू पोंछ कर कहती "मैं सब जानतीहूँ सब समझतीहूं तौभी बड़ा कठिन कलेजा है मानता नहीं."

जगन्नाथ को ज्ञान अभी पूरा था किसी इन्द्री की शक्ति भी कम नहीं हुई थी। वसीयत पर दस्तखत के दिन ही उस रातको जग-

न्नाथ को ज्ञान शून्य वा निद्रित समझ कर मा बेटे ने उनके शय्या के निकट बैठकर परामर्श किया था जगन्नाथ अपने ही कानसे सुनकर स्तम्भित हुए थे। जिस गुलाबको वह देवी समझकर इतने दिन तक उसकी पूजा करते आते थे वही उनकी शीघ्र मृत्यु के लिये क्या २ उपाय करना होगा यही विषय पुत्र के साथ परामर्श करती है? अपने कान से सुनकर भी जगन्नाथ को चेत नहीं हुआ.

जगन्नाथ को गुलाब का विश्वास अभीतक इतना है कि वह अपने कानसे सुनकर भी उस बातपर विश्वास न करसके। जगन्नाथ ने सोचा यह निश्चय विकार का कार्य्य है। दूसरे दिन सबेरे ही उन परामर्शानुयायी कार्य्यों को एक २ करके सम्पन्न होते देखकर उनको चेत हुआ। अब कोई जगन्नाथ की सेवा नहीं करता। मलमूत्र तक कोई नहीं साफ करता तृष्णा से छाती फटने परभी कोई एक बूँद पानी नहीं देता! जगन्नाथ को मृत्यु यंत्रणा से यही यंत्रणा अधिक कष्टकर हुई। कि वही गुलाब वसीयत दस्तखत होने के दूसरे ही दिन से उनकी मृत्यु के लिये उपाय कर रही है जब यह बात जगन्नाथ के मन में उदय होती तब हजार विच्छूके डंक मारने का कष्ट अनुभव करते उस भयङ्कर यंत्रणा के साथ इस मृत्यु यंत्रणा की तुलना नहीं हो सकती जगन्नाथ की मृत्युपर नरक यंत्रणा भी उनकी इस यंत्रणा के आगे तुच्छ है.

किन्तु जगन्नाथको अब कुछ क्षमता नहीं है; उनके अतिक्षीण कंठका मृदुस्वर कौन सुन सकता है? कौन उनकी इस बातको सुनकर उसका प्रतिकार करेगा? कौन उनकी स्त्री पुत्रके हाथसे रक्षा करेगा? कौन उनके अनुतापका दृश्य अपनी आँखसे देखेगा! क्रमशः उनका सब शरीर शिथिल होने लगा आँखकी वह ज्योति नहीं है कानकी श्रवण शक्ति नहीं है जिह्वामें वह वाक् शक्ति अब नही है किन्तु ज्ञान सम्पूर्ण रूपसे था। जगन्नाथ की इन्द्रियाँ रोग यंत्रणाके सिवाय तीन दिनसे बिना पथ्य शुश्रूषाके शिथिल

हो चली थीं किन्तु साथ २ उनका ज्ञान क्यों नहीं लोप हुआ ? उनके पापके प्रायश्चित में कुछ और बाकी है क्या.!!

आज इसी अंतिमकालमें जगन्नाथके मनमें भाग्यवती की बात याद आयी है । कुहकिनी राक्षसी गुलाब की माया भी उन्हें समक्ष पड़ी है । विश्वम्भरके लिये भी जगन्नाथ का प्राण रोरहा है किन्तु ललितके डरसे जगन्नाथ इस मृत्यु शय्या पर भी सशंकित हैं ! और प्रभु भक्त शंकर की बात भी नहीं भूलती । इन सब स्मृतियोंमें जगन्नाथ यम यंत्रणामें दग्ध होने लगे । जगन्नाथ की शेष प्रार्थना ईश्वरके निकट यही है कि एक बार विश्वम्भर और शंकरके साथ अन्तिम कालमें भेंट हो जाय ?

जगन्नाथ आँख मूँद कर मृतकी तरह पड़े थे इसी समय कौन उनका मल मूत्र यत्नके साथ परिष्कार करता है जगन्नाथने धीरे २ आँख खोली । यह क्या ! ईश्वरने जगन्नाथके समान पापीकी प्रार्थना पर ध्यान दिया है क्या ? जगन्नाथने आँख खोलकर देखा सामने विश्वम्भर शंकर; और छेदीलाल ! वेही सजल नयनसे यत्नके साथ उनका मल मूत्र परिष्कार करते थे उसी समय न जाने कहाँसे जगन्नाथके दोनों नेत्रोंसे अश्रुधारा बह चली.

जगन्नाथने कुछ सुस्थिर होकर इङ्गित द्वारा आहारकी इच्छा जतायी । सामने रोगीके लिये कुछ आहार न देखकर सभी विस्मित हुए तुरंत थोड़ासा दूध लानेके लिये कहा गया किन्तु कोई नहीं लाया । विश्वम्भर दूधके लिये बहुत छट पटाया । शङ्कर दूधके लिये बाजारकी ओर दौड़ा । इसी समय गुलाब एक बर्तनमें थोड़ासा गङ्गाजल लाकर बोली "इस समय दूध खिलाने को भूलते हो ! थोड़ासा गङ्गाजीका जल देदो परलोकमें काम आवेगा."

विश्वम्भर दुग्धके अभावसें कम्पित हाथसे रोते २ गङ्गाजल देने लगा । अनेक क्षण पर जगन्नाथ हृदयके मर्म्म स्थलसे बोले—"आः."

उसके बाद शङ्करपांडेने पासकी एक दुकानसे दूध लाकर दौड़ा हुआ आया। विश्वम्भरने धीरे २ वही दूध खिलाया जगन्नाथ बहुत सुस्थ हुए। तब धीरे २ क्षीण स्वरसे कहा—"विश्वम्भर पांड़े! तुम लोग आये हो इस नराधमको देखने आये हो। इतने दिनके बाद मैंने मायाविनी की माया समझी है पिशाचिनी का काण्ड कारखाना सब समझाहै किन्तु बड़े कुसमय में समझा है विश्वम्भर! बेटा! तुमको यह पापी बाप पथ का भिखारी बनाकर जाना है एक वसीयत बना याहै अगर उसे इस वक्त पाते तो फाड़कर फेंक देते उसके पहले कितनी सेवा की है और उसके बाद एक बार भी देखने को नहीं आती हमने अपने कानसे सुना है हमारे मारने के लिये परामर्श-थोड़ा जल."जगन्नाथ की आँखें क्रमशः स्थिर होने लगीं यह देखकर विश्वम्भर उच्च स्वर से रोउठा। शंकर ने जल्दी २ जगन्नाथ के मुँहमें कुछ जलदिया। जगन्नाथ ने फिर कहना शुरूअ किया "राक्षसी और ललित हमको मार डालने का परामर्श करते थे आज तीन दिन वसीयत को तय्यार हुए हुआ उसी दिनसे हमारे मुँहमें कोई जल नहीं देता अनाहार से—प्यास से—कष्ट—यंत्रणा—विश्वम्भर ने फिर जगन्नाथ के मुँहमें थोड़ासा दूधदिया इस बार दूध पीने में उनको बड़ा कष्ट हुआ। जगन्नाथ ठकठकाते २ बोले तुम लोगों को देखकर हमें—जीने की बड़ी श्रद्धा हुई है—तुम लोग हमको बँचावो."

यह कहते २ पुनः जगन्नाथ के गाल उनकी अश्रुधारासे डूबगये। विश्वम्भर व शंकर उस मर्म्मान्तिक बात को सुनकर चीत्कार कर रो उठे। छेदीलाल इतनी देरतक चुप चाप शिर नीचा करके बैठे थे इस बार उन्मादकी तरह उठ खड़े हुए यह क्या! विश्वम्भर और शंकरने एक बार विस्मित नेत्र से छेदीलाल की ओर देखा—अश्रुधारा से उनका वक्षस्थल डूबा जाता है। अश्रु पोंछकर छेदीलाल बोले "इस जीवन में जो कभी नहीं हुआ धन्य है पिशाच पिशाचिनी का काण्ड कारखाना! आज वही असम्भव घटना भी घटी है जगन्नाथ की

अवस्था देखकर और उनकी मर्म्मान्तिक बात सुनकर आज हमारी आँख में भी आँसू आया है । अब मैं यहाँ नहीं ठहर सकता बल्कि एक डाक्टर बुलाने की चेष्टामें जाता हूँ"

यही बात कहकर छेदीलाल भाग गये । किन्तु इधर जगन्नाथ की अवस्था क्रमशः भयंकर होने लगी । दोनों नेत्रस्थिर होने लगे । उनके दो तीन निश्वास जो बड़े वेग से हुई जगन्नाथ ने उसी में दो एक बार मुँह बिगाड़ा, उसके बाद यह क्या ! जगन्नाथ की साँस नहीं चलती । विश्वम्भर और शंकर "बाबू हो" कहकर एक मर्म्मभेदी चीत्कार कर उठे । इसी समय न जाने कहाँ से गुलाब दौड़ी आयी और पछाड़ खाकर गिरी और चीत्कार से चारों ओर कम्पित करने लगी उसकी देखा देखी दास दासी भी वहाँ आकर रोने लगी. केवल ललित कुमार ही इस समय तक बैठक खाने में बैठकर बंधु बान्धवोंके साथ आमोद आल्हाद कररहाथा.

अष्टम परिच्छेद ।

कुछ देरके बाद गुलाबने ललितको बुलाकर कहा "अब क्या आमोद करनेका वक्त है ? श्मशान में जाकर चिताका बंदोबस्त करो । और देखना जिसमें विश्वम्भर तुम्हारे साथ न जावे । वह त्याज्य पुत्र है उसको मुखाग्नि व श्राद्ध न करने देना । नहीं तो वैसा करनेसे वह विषय का भागी होसकता है."

यह कहकर गुलाब फिर आकर रोने लगी उस समय उसके मनमें उस बिछौने (जिसपर जगन्नाथकी लाश थी) के नष्ट होजाने का दुःख था इधर शव दाहके बारेमें एक बिभ्राट हो उठा ललित कुमार न जाने कहाँसे बहुतसे गुण्डोंको लेकर उपस्थित हुआ और विश्वम्भर शङ्कर और छेदीलाल को वहाँसे चले जानेका हुक्म दिया ऐसे शोक समय में इस प्रकारका भयानक अत्याचार उन लोगोंके हकमें बड़ाही मर्मांतक हुआ । भयसे और प्रतिवासी वा और आत्मीय

स्वजन कोई इस विपदके समय वहाँ नहीं आये सुतरां इस अत्याचार का प्रति विधान कौन करेगा ? विश्वम्भर शङ्कर और छेदीलालने वहाँ रहना उचित न समझा; चुप चाप रोते २ वहाँसे चले गये। इसके बाद ललित अपने दलके साथ महानंदसे जगन्नाथ का शव लेकर सत्कार करने को श्मशानको चला। किन्तु श्मशानमें पहुँचते २ इतना मात गये कि उन लोगों के द्वारा शव दाह न हो सका. लिखने में लज्जा आती है, ललित कुमार भी उस दलके साथ सुरापान करके पशुवत् उन्मत्त होगया था. चितापर शव रखकर ही कौन कहाँ चलागया इसका कुछ पता न मिला हम जानते हैं दूसरे दिन ग्यारह बजे ललित कुमार ने दश रुपया जुर्माना देकर पुलीस के हाथसे छुटकारा पायाथा.

उस श्मशान के निकट ही विश्वम्भर शंकर और छेदीलाल थे. ललित के चले जानेपर उन्हीं लोगों ने शव दाह किया इस में जो कुछ विधि करने की आवश्यकता थी विश्वम्भर ने सजल नयनसे सब किया था.

इधर ललितने अपने घर 'पुतरा पुतरी' बनाकर उसका श्राद्ध किया, और उधर विश्वम्भर नाथने छेदीलाल के घर यथाविधि शास्त्र श्राद्ध किया। विश्वम्भर के कार्य्य में उसके सब आत्मीय स्वजन उपस्थित हुए थे और ललित के कार्य्य में केवल उसके मामा के सम्बन्धी आये थे। 'पिता खाने विना मरे हैं' यह बात जब विश्वम्भर के दिलमें आती तब उसका हृदय फटजाता इसी कारण से विश्वम्भर ने अपने पितृ श्राद्धमें अनेक कंगालों को भोजन कराके तृप्ति लाभ किया था.

विश्वम्भर की आय इस समय बहुत सामान्य है तौभी अन्याय नूतन वकीलों की अपेक्षा बहुत अधिक है इस श्राद्धके उपलक्षमें जो कुछ व्यय हुआ था सो सब छेदीलाल ने अपने घर से बेखटके दियाथा

पितृ श्राद्धके बाद लोगोंने विश्वम्भरको पितृ सम्पत्ति ललित और गुलाब के हाथसे उद्धारके लिये ज़िद किया शङ्कर और छेदी-

लाल पर्य्यतने यह परामर्श विश्वम्भर को दिया था कि पिताने बिना कुछ सोचे विचारे वसीयत करके अन्तमें सबके सामने अनुताप किया है और उस वसीयतके नष्ट करनेके लिये मृत्युशय्यापर व्याकुल हुए थे तब वह वसीयत किसी कामके लायक नहीं है। मगर विश्वम्भरने किसी प्रकार पिताकी वसीयतके विरुद्ध सोतेलेभ्राता और मैभाके साथ मुकद्दमा करने का इरादा नहीं किया इसके बारेमें बहुत से तर्क वितर्क हुए तौ भी विश्वम्भर अपनी पर्व प्रतिज्ञापर अचल रहा । उसका कहना यही था कि जब एकबार पिताने अपनी इच्छासे एक लड़के को अपना सब धन देदिया है तो फिर जीवन तक उसका विरोध न करूँगा । धन्य विश्वम्भर ! धन्य तुम्हारी पितृभक्ति !

पितृ वियोगपर एक वर्षतक जिस नियमसे रहना चाहिये विश्वम्भरने उस नियम का पालन किया। एक वर्षके बाद विश्वम्भरने विवाह किया। पात्री वही अनूपमा की मनोनीता सुशीला है। पाठक सुशीला को जानते हो ? हमारे पूर्व्व परिचित छेदीके जाति भाईके बेटे सुधीर की भगिनी है। जो सुधीर पाठशाला जानेमें उस प्रकार का दौरात्म्य करता था वही सुधीर छेदीलालके एक दिनकी क्षुद्रघटनासे अब विश्वविद्यालयका एक उज्ज्वल रत्न हुआ है.

आज अनूपमाके आनंदकी सीमा नहीं है आज मानो यथार्थ ही उसने अपने साध की पुत्र वधूका मुँह देखा । वह पुत्र वधूको कहाँ रक्खेगी क्या खिलावेगी, कौन २ गहना देगी कौन कपड़ा पहनावेगी, आज यह सब सोचकर कुछ स्थिर नहीं करसकती। मानो कुछ उसके मनके नहीं हैं। दास दासी सभी व्यति व्यस्त हैं स्वयं छेदीलाल तक काभी प्राण ओष्ठागत है ! एक अलङ्कार की दूकान में उनको सात बार दौड़कर जाना पड़ता है एक बजाजके यहाँ बारंबार जाना पड़ता है तौ भी पुत्र वधूके लिये वस्तु अनूपमाके पसंद लायक नहीं मिलती। अन्यान्य द्रव्यादि खरीद करनेका भार जिसके ऊपर था उन लोगोंकी तो मानो प्राण पर खींचा खींची होरही है.

विवाहके दिन शङ्कर का आनंद कौन देखता है ? वृद्ध आपेमें नहीं है उसको घूमनेकी शक्ति नहीं है किन्तु आज तो मानो उसके यौवनका वल फिर आया है वृद्ध आनंदमें पागलहो रहा है कभी हँसता है और कभी आज आनंदके दिन उसी स्वर्गीया भाग्यवतीको स्मरण करके रोता है.

विवाहोत्सव शेष होजानेपर छेदीलालने एक दिन अनूपमासे कहा "क्यों याद है एक दिन तुमने दुःखित होकर कहा था इस संसार में अव हमें सुख क्या क्या है ? एक लड़का हुआ वह भी नहीं जिआ । उसके वाद जबकि आठ वर्षमें भी लड़का वाला नहीं हुआ तव और इस जगतमें रहकर क्या होगा ? कहो तो उस दिनकी बात याद है ! हमने उसी दिनसे इसको यादकर रक्खा है उससे एक काम था इसीसे एक वारगी वड़ा लड़का लाकर हाजिर करादिया भला अव इन लड़के वहू को छोडकर काशी जावोगी ?"

अनूपमा हँसकर वोली "अव काशी किस दुःखसे जाऊँगी ?"

छेदीलाल—"और अगर हम जायँ ?"

अनूपमा गरजकर वोली—"हमें छोड़कर तुम्हें क्या कोई और काशी है ?"

छेदीलाल ने तत्क्षणात् कहा " नहीं । मगर तौ भी गला खसखसाता है. "

अनूपमा—"वह करकराखाने से भाग जायगा."

छेदीलाल—"नहीं अव काशीजाकर क्या करेंगे?"

शास्त्रमें कहा है—'पञ्चाशोर्द्धं वनं व्रजेत्' इस वक्त हम पचास से ऊपर हो गये हैं । काशीके बदले वनमें जाना चाहिये.'

"सोतो तुम्हारे यहाँ रहने हीसे निश्चय वन हो जायगा."

अनूपमा के मुखसे हठात् यह बात निकल पडी "तो हम क्या तुम्हारा वन हैं."

छेदीलाल चौंक कर बोले "दूर हो मुँह करिखही." उसके बाद अनूपमा का शिर भी लज्जा से अवनत हुआ । और छेदीलाल ने उस लज्जा कुञ्चित चिबुकपर श्वेत कृष्ण मुच्छ शोभित ओष्ठ द्वारा बार २ स्पर्श करना आरम्भ किया था । उस समय वही स्पर्श छेदीलाल का काशीवास हुआ."

नवम परिच्छेद ।

अब हम ललित कुमार की बात कहेगे । ललित कुमार पिता की मृत्यु होनेपर भयानक अत्याचारी होगयाथा । उसके अत्याचार से उसके प्रतिवासी तक भी व्यति व्यस्त थे । बहुतसे गुण्डे ललित के साथी हुए थे । ललित किसी का डर नहीं करता उसके दोर्दण्ड प्रताप से आबाल वृद्ध बनिता सभी थरथर काँपते हैं ! जिस गुलाव ने पुत्र को प्यार करके उसका पर काल नष्ट किया है वही इस समय उसका फल भोग कर रही है.

ललित कुमारने पिता की कोई सम्पत्ति नहीं पायी सुतरां रुपये की आवश्यकता होने पर उसे ऋण लेना पड़ता, पहल पहले ऋण मिलने में ज्यादा कष्ट नहीं हुआ; किन्तु पीछे किसी ने ऋण देना स्वीकार न किया तब ललितने घर बंधक रखकर लिया किन्तु इसके बाद और रुपये की आवश्यकता होने पर मिलनेका और कोई उपाय न रहा । ललित जानताथा कि माके पास बहुत सा रुपया है अब ललितने रुपये के लिये माता को पीड़ा देनी आरम्भ की माँगने पर रुपया न देनेसे माताको प्रहार करने से भी नहीं चूकता गुलाब को पुत्र से दुर्दशा की सीमा न थी । इसके सिवाय अलंकार प्रभृति कोई बहुमूल्य द्रव्य सामने पाने पर ललित उसे तुरत चुरा लेता और विक्रय वा बंधक रख कर आवश्यकीय अर्थ संग्रह करता.

एक दिन ललित कुमार को पांचसौ रुपये की आवश्यकता पड़ी, रुपया न पाने से उसका काम किसी प्रकार नहीं चलेगा । ललित नें

गुलाव के निकट जाकर कहा—"आज हमें पाँचसौ रुपया चाहिये रुपया न देनेसे खून होगा."

गुलाव पुत्रके भयसे सर्व्वदा सशंकित रहती। पुत्रके भय से नकद रुपया घर न रख कर मायके में रख आती। उसने कहा "हमारे हाथ में एक पैसा भी नहीं है, तुमको पाँचसौ रूपया कहाँ से दूँगी? और तुम इतना रुपया लेकर क्या करोगे?"

ललित आग होकर बोला "हमको जो इच्छा होगी सो करेंगे तुम्हारे बाप का क्या?"

गुलाव "मैं तुम्हें और रुपया नष्ट न करने दूँगी देखती हूँ कि तुम सर्व्वनाश कर डालोगे । इतनी चतुराई से सब हस्तगत कियाहै क्या तुम्हारे ही नष्ट करने के लिये?"

ललित "हमारे वापका धन है हम उड़ावेंगे तुम्हारा क्या? हमारी जो खुशी सोई करेंगे."

गुलाव "तुमको जो देगये हैं वह नष्ट करो इसके वाद तुम्हारी दुर्दशा से स्यार कूकुर रोवेंगे। मुझे जो देगये हैं उसमें से एक पैसा भी न दूँगी."

गुलाव ने क्रोध करके यह कहा था माता का क्रोध देखकर पुत्र का क्रोध और भी दूना हुआ.

ललित माता पर प्रहार करने लगा माता चीत्कार करने लगी दास दासी पासही में थे किन्तु ललितकुमार के डरसे किसी को कुछ कहने का साहस न हुआ.

गुलाव का आर्तनाद सुनकर किसी ने उसकी सहायता न की। अन्त में जब प्रहार से वह वेदम होगयी तब माकी कमर से चाभी निकाल उसका बक्स खोला और उसमें जो कुछ था वह सब लेकर वहाँ से जानेका उद्योग किया। गुलाव को उठने की शक्ति न थी उसने ललित का पैर पकड़ा ललित माताको पैर के जोर से मारकर वहाँ से भाग गया.

इस प्रकार की घटना प्रायः घटती । केवल माता ही के ऊपर अत्याचार होता सो नहीं । माताको तो पाप का प्रायश्चित्त मिलनाही चाहिये यह बात हम स्वीकार करते हैं किन्तु और एक निरपराधिनीबालिका के ऊपर ललित भयंकर अत्याचार करता । वह बालिका ललित की स्त्रीहै वह अति कोमल स्वभाव की है स्वामी के भयसे सदा चकित रहती । स्वामीके शयन गृह में रहने पर बालिका को उस रातको नींद नहीं आती.

स्वामी की भर्तसनासे चूँ नहीं करती मार खाने पर भी चिल्लाकर रोना नहीं जानती । ऐसी बालिका के ऊपर वह निष्ठुर स्वामी क्यों अत्याचार करता है सो हम समझा सकते हैं किन्तु किस पाप से उस सरला बालिका को इस अवस्था में अत्याचार सहना पड़ता है उसके समझाने की क्षमता हमें नहीं है बालिका का इस जन्म में न हो, पूर्व्व जन्म का कोई पाप था क्या?

ललितके निकट न्याय अन्याय का कुछ विचार म था सबके ऊपर अत्याचार करनेके लिये ही उस को जन्म ग्रहण करना पड़ाहै सुतरां वह निरपराधिनी स्त्रीके ऊपर अत्याचार करेगा इसमें आश्चर्य ही क्या है.

एक दिन संध्या समय ललितने शयनगृहमें एक दासीसे स्त्रीको बुलवाया । स्वामीकी आज्ञा पालन न करनेसे रक्षा न थी सुतरां बालिका भयसे धीरे २ स्वामीके निकट आ उपस्थित हुई । ललितने उससे गरज कर कहा "अपना सब गहना तू हमें उतार दे."

गर्ज सुनकर आतङ्कसे बालिका काँप उठी । क्या करेगी कुछ सोचकर स्थिर न करसकी । ललित से देर सही न गयी तुरंत बोला "अगर गहना न दोगी तो खून होजायगा."

बालिका का प्राण भयसे उड़गया । इधर सासके भयसे अपने हाथसे गहना निकाल स्वामीको देने का साहस नहीं होता । और मुँहसे स्वामी को कुछ कहनेका भी साहस नहीं चुप चाप भयसे

काँपने लगी। ललितकुमार अब देर नहीं सहसकता बालिका के समस्त अङ्ग प्रत्यंग में क्षत विक्षत करके सब गहना उतार लिया उसके बाद उसी निष्ठुर स्वामीने उसी निरपराधिनी को लात मारकर वहां से भाग गया.

इसके बाद उसी दासी से यह खबर पाकर गुलाब उसी गृह में आ उपस्थित हुई । पुत्र वधू की ऐसी शोचनीय अवस्था देखकर भी गुलावको उस बालिका पर दया न आयी।वह भी क्रुद्ध होकर वालिका को नाना प्रकार से भर्तसूना करने लगी । बालिका का अपराध यही है कि उसने अपने स्वामी को गहना क्यों निकाल लेने दिया? गुलाब केवल भर्तसना ही करके शान्त नहीं हुई इसी अपराध पर प्रहार भी किया था इस प्रहार से भी वालिका को चिल्लाकर रोनेका अधिकार न था उच्चस्वरसे रोनेपर फिर वही प्रहार !

हा विधाता ! तू क्या वालिका के भाग्य में मृत्यु लिखना भूलगया ऐसी यंत्रणा सह्य करने की अपेक्षा मृत्यु सहस्र गुणा श्रेय है इस जीवन में उस क्षुद्र वालिका की और कोई कामना नहीं है दिनरात केवल देवताओं के निकट अपनी मृत्यु प्रार्थना करती है.

दशम परिच्छेद।

पापीके पापकी सीमा नहीं हैं ! एक बारगी पाप स्रोत में शरीर बोर देने से कहाँ जाकर निकलेंगे सो कौन कहसकताहै?

पाप प्रवृति की सीमा नहीं होती वह अपना प्रचार जिस प्रकार सहजमें वृद्धि करसकता है अन्य प्रवृत्ति उतनी सुगमतासे नहीं होसकती। शुष्क तृण अग्निके साथ मिलनेपर जिस प्रकार भभक उठता है भीगा तृण वैसा नहीं.

ललित कुमार की पाप प्रवृत्ति क्रमशः वृद्धि पाने लगी । तौ भी पाप लालसाकी परितृप्ति नहीं हुई । अग्निमें घृत सिञ्चन की तरह लालसा क्रमशः बढ़ने लगी। सुतरां ललित का अत्याचार कम

नहीं हुआ। तब उसने मन ही मन एक उपाय स्थिर किया। पति इस प्रकार झगड़ा तकरार करके अर्थ संग्रह करना सुविधा जनक न समझा। पिता समस्त, नकद रुपया माताही को देगये हैं इसीसे ललित को इतना अभाव है वैसा न होनेसे उसको कोई अभाव न होता इसी कारण जननी के ऊपर ललित का बड़ा क्रोध जन्मा। ललित अनेक सोच विचार कर आखिर में माता की हत्या करके पितृधन के अधिकारीहोने को कृतसंकल्प हुआ। इस भयंकर कार्य्य के लिये एकबारगी प्रस्तुत हुआ.

ग्रीष्मकाल में एकादशी के दिन गुलाब उपवास करके कातर होकर छतके ऊपर सोयी हुई है.

बहुत छट पटानेपर आधी रातको नींद आयी थी इसी समय ललित कुमार एक अस्त्र हाथमें लेकर चुप चाप अपने शयन गृहसे बाहर हुआ। इस प्रकार पाप कार्य्य में बाहर आकर भी ललित के मनमें किसी प्रकार का भय न हुआ। ललित को डर सिर्फ यही है कि पीछे से कोई इस काम को न देख ले नहीं तो बाधा देगा और बाधा होने से आज काम पूरा न होगा। ललित बहुत दिनों से कार्य्योद्धार की चेष्टा में है मगर उसकी मा किवाँड़ बंदकर सोती है सुतरां कार्य्योद्धार कैसे होवे? और दिन दोपहर को इस काम में उसे साहस नहीं होता उस समय कैसे इस पापकार्य्य को गोपन करने में समर्थ होगा? आज संध्या के समय अनुसंधान करके माता का शयन स्थान जान लिया था; आधीरातके बाद और अपेक्षा न कर सका। शय्या त्याग करके सशस्त्र कार्य्योद्धार को चला.

धीरे, धीरे, धीरे—ललित धीरे; चारो ओर भीषण अंधकार है ललित धीरे; तुम्हारे पद भारसे पृथ्वी काम्पति हो रही है ललित धीरे तुम्हारे पापनिश्वास से सब कलङ्कित होते हैं—ललित धीरे, ऐसे पाप कार्य्य में कभी कोई प्रवृत्त नहीं हुआ—ललित धीरे; ऐसी अमानुषिक हत्या के उद्देश्य से कभी किसी ने अस्त्र धारण नहीं किया—ललित जरा

धीरे; ऐसे भयंकर पापकार्य्य की कल्पना का भी अतीत है—ललित जरा धीरे; फिर कहते हैं—धीरे, धीरे, धीरे;—ललित जरा धीरे.

ललित अंधकार में धीरे २ चलता है मुँह पर स्थिर प्रतिज्ञा का चिह्न झलक रहा है हाथमें तीक्ष्ण छुरी खूब दृढतासे पकड़ी है हृदयमें असीम साहस है। उसी अंधकार में धीरे २ एक २ करके ललित सीढीपर चढ़ा छतके ऊपर जाकर अपनी माताको निद्रिता वस्थामें देखा। तब धीरे २ उसके सन्निकट होने लगा। रोष पूर्ण नेत्रोंसे एक बार हतभागिनी माताकी ओर देखा। फिर जल्दीसे तीक्ष्ण छूरी माताके पेटमें खोभ दी! उस भीषण आघातसे गुलाबका निद्रा भंग हुआ; ततक्षणात् असह्य यंत्रणासे अस्थिर होकर गुलाब प्राण भयसे चीत्कार कर उठी। ललितने बायें हाथसे माका मुँह दबाकर दाहिने हाथसे फिर एक आघात किया। गुलाबने पुत्रसे अतिकातर कंठसे प्राण भिक्षा चाही पुत्रने तत्क्षण एक और आघात किया.

तब गुलाब निर्जीव होकर जमीन पर छटपट करने लगी निष्ठुर पुत्रने तो ऊपरसे कई एक अस्त्राघात किये। जब श्वास का कोई शब्दनपाया तब छतसे नीचे उतरनेके लिये सीढ़ीके निकट आया मगर सीढ़ी के निकट आते ही उसने किसीको ऊपर आते हुए देखा.

'मा! मा! कहके वह मूर्ति चिल्ला उठी कुछ क्षणके बाद ललित की तीक्ष्ण छूरी उस मूर्ति के ऊपर भी पड़ी। "तरङ्गिणी तरङ्गिणी" कहकर बिकट चीत्कारसे ललित ने दो तीन बार उस क्षुद्र बालिका पर भी भीषण आघात किया देखते २ बालिका भी संसार की सब ज्वाला यंत्रणा से मुक्ति पाकर हँसते २ स्वर्ग को चली गयी।

दो खून करके ललित उन्मत्त होगया है अब उसे पकड़ जाने का ज्ञान नहीं है। मुँहसे "जिसको पाऊँगा—खून करूँगा" चिल्लाता

हुआ सड़क में आ पड़ा। रास्तोंके दो एक लोगों ने उस भयंकर बात को सुन और रक्ताक्त शरीर की भीषण मूर्ति देख ऊर्द्धश्वास से पलायन किया। छूरी घुमाते २ ललित जल्दी २ चल रहा है उसकी आँखें भी रक्त वर्ण हो आयी हैं। कौन साहस करके उसके सामने जायगा? ललित क्रमशः दौड़त आता है। इसी समय चार पाँच पुलीस कर्म्मचारियोंनें पीछेसे आकर उसे पकड़ लिया;और उसके हाथसे अस्त्र छीनकर तत्क्षणात् हथकड़ी पहनायी। तब ललित को चेत हुआ। ललित पकड़ा जाकर पुलीसके कारागारमें बंद हुआ.

उसी रात को खून की तहकीकात शुरूअ हुई। जिस घर में खून हुआ था ललित के उस घरमें तुरंत पुलीस के प्रधान २ कर्म्मचारी भरगये। दूसरे दिन सबेरे किसी २ अंग्रेजी दैनिक पत्र में प्रकाशितभी हुआ। तीन बजे दिन को अदालत में संवादपत्र पढ़कर विश्वम्भरनाथ ने इस भीषण हत्याका संवाद पाया। संवाद के पाते ही तुरंत गाड़ीकर अदालत से घर फिर आये और छेदीलाल को साथ लेकर उसी दिन अपनी जन्मभूमि को चले। रातको दो बजे जन्म भूमि में उपस्थित हुए। पहुँचते ही उस भीषण हत्याकाण्ड की सब घटना सुनी। गुलाब व ललित विश्वम्भर के प्रति कैसाही अत्याचार क्यों न करें किन्तु विश्वम्भर समस्त घटना का हाल सुनकर भैया और भ्रातृपत्नी की ऐसी शोचनीय मृत्युसे रोकर व्याकुल हो उठे.

मगर छेदीलाल न तो रोये न हँसे समस्त घटनाको सुनकर कुछ गम्भीर हुए। तथापि दूसरे दिन जब विश्वम्भर ललित के उद्धारकी चेष्टा करने लगा, तब छेदीलाल और हँसीको रोक न सके हँसते २ बोले "जो मातृ हंता और स्त्री हंताका उद्धार करसके उसे तो मैं स्वयं पतित पावन भगवानहीं समझूँगा देखताहूँ कि तुम एकादश अवतार होने की चेष्टा कर रहे हो."

विश्वम्भर कुछ अमस्तुत होकर बोला "जो होनाथा सोतो होगया; ललितका मैं बड़ा भाई हूँ; इस समय मैं क्या निश्चित रह सकता हूँ?"

छेदीलाल बोले "देखो, ऐसे पापीके दण्ड लिये अङ्गरेज राज्य में कोई आईन नहीं है. इसके लिये हमारे जानमें एक नया आईन मस्तुत होना उचित है । इस विषयमें यदि कोई चेष्टा करनी हो तो हम चेष्टा करैंगे."

विश्वम्भर बोला—"पापी कभी दण्डके हाथसे निष्कृति पासकता है ? इस पृथ्वीपर विचार न भी होतो क्या इस विचारालयके ऊपर दूसरा विचारालय भी है तुम हम दण्ड देने वाले कौन हैं?"

छेदीलाल मनही मन बोले "विश्वम्भर मानव है या देवता?"

एकादश परिच्छेद ।

ललितने पुलीसमें सब अपराध स्वीकार किया था सुतरां इस खूनी मुकद्दमेंमें प्रमाणके लिये पुलीसको विशेष कष्ट नहीं सहना पड़ा जो कुछ प्रमाण का अभाव था सो सब पूर्ण करलिया एक हफ्तेके बाद मजिस्ट्रेटके यहाँ विचार हुआ । असामी के पक्षमें विश्वम्भरने उपयुक्त ब्यारिस्टर नियत किया था । मगर कुछ फल नहीं हुआ मजिस्ट्रेटने इस मुकद्दमे को सेशन भेजा । उस वक्त सेशन बैठने में डेढ़ महीने की देर थी सुतरां असामी हवा-लात में रक्खा गया.

ललित की अवस्था बड़ी शोचनीय है. उसने एक भयानक पाप किया है यह ललितने अब समझा हैं । साधारण खूनी अपराधी की अपेक्षा उसका अपराध लाख गुना अधिक है यह बात भी उसने समझी है. इसका प्राण अनुतापानलसे दग्ध होने लगा ललित मृत्यु के लिये प्रतीक्षा करता था इस समय मृत्यु को आलिङ्गन करने से

इस समय यंत्रणा से निष्कृति लाभ कर सकता. ललित की धारणा थी कि मांजिस्ट्रेटही के यहाँसे विचार होकर फाँसी का हुक्म हो जावेगा, मगर जब यह नहीं हुआ तब ललित निराश हो गया । ललित उच्च-स्वरसे रो उठा। अब डेढ़ महीने तक ललित इस भयंकर अवस्था में किस प्रकार रहेगा ?

भद्र संतान को असत और संग शिक्षादोषसे नष्ट होजाने पर चैतन्य होता है। ऐसी अवस्था में पूर्व कृत पाप कार्य्य के लिये उनके अनुताप की सीमा नहीं रहती । ललित का जन्म भद्र वंशमें है,केवल संग और शिक्षाके दोष से ऐसी गति हुई है;सुतरां जब उसको चैतन्य हुआ तब उसके अनुताप की सीमा न रही । ललित रातदिन अनुतापानल में दग्ध होने लगा । उस असह्य यंत्रणा को असह्य करने से उसके मष्तिष्क की विकृति हुई । ललित कभी २ प्राय अपनी माता की भयङ्करी प्रतिहिंसामूर्ति देखता था। उसे देख २ कर उसके देहका रक्त सूखजाने लगा । विशेषतः रात को उसे निद्रा नहीं आती । वह जिस क्षुद्र गृहमें आबद्ध रहता उसी घर में जिस ओर देखता उसी ओर भयंकरी उन्मादिनी प्रतिहिंसा की ज्वलन्त मूर्ति दिखाई देती । उस मूर्ति की आँखों से मानो अग्नि की किरणें निकलती थीं दंतों से दंत घर्षित आरक्त लोचना उसकी माता की भयङ्करी मूर्ति उसी की ओर देख रही है ! फिर यह क्या ? ललित आँख मूँद देने परभी वही मूर्ति क्यों देखता है ? ललित इतनी चेष्टा करने परभी उस मूर्तिके हाथ से रक्षा नहीं पाता और समय २ पर मूर्ति का परिवर्तन भी होता है.

यह आरक्त लोचना उग्र चण्डी मूर्ति थी अब फिर रक्ताक्त कलेवरा विषाद मूर्ति से हाथ जोड़कर जीवन भिक्षा करती है । उस वक्त ललित ने देखा तो चारों ओर मानो रक्त की नदी बह रही है, क्रमशः ललित जिस ओर देखता है उसी ओर मानो रक्तमय है । यह क्या ! ललित के हाथमें खून कहाँ से आया? उसका सब शरीर ही

मानो रक्तमय है। इतने दिन के बाद फिर रक्त क्यों? जिस रक्त को ललित ने अनेक दिन हुए धोकर साफ करदिया है फिर वह रक्त क्यों? यह सब स्वप्न है या सत्य? क्षणभर के बाद वही–वही–वही भयंकरी मतिहिंसा मूर्ति ! उस समय ललित "रक्षा करो, रक्षा करो" कहके चिल्ला उठा। एक सिपाही लालटैन लेकर ललित को देखने गया। वह मूर्ति इस बार खि खि खि खि करके हँस उठी। ललित जगा हुआ है सुतरां यह सब दृश्य कभी स्वप्न नहीं हो सकते। मगर ललित अंधकार में भी वह मूर्ति देखता है। और आँख मूँदनेपरभी देखता है ऐसा क्यों होताहै ललित कुछ नहीं समझता। आतङ्कसे उसका प्राण सदा सशङ्कित रहताहै और कभी उसकी वही माता भीति व्यंजक कालमूर्ति से हाथमें तलवार लिये हुए ललित का प्राण लेनेके लिये मानो दौड़ी आती है ! भय से ललित का प्राण ओष्ठागत हुआ उस क्षुद्र गृह में जीवन रक्षाके लिये ललित कहाँ छिपेगा?

इसी प्रकार हर रातको ललित बिताया करता। दिन को भी किसी २ वक्त अपनी माताको देखता।. मगर उस कोमल प्रकृति पत्नी की मूर्ति कभी दृष्टिगोचर नहीं होती। ऐसा क्यों होताहै सो हम नहीं कह सकते.

सेशनमें विचार के दिन ललित असामी की जगह खड़ा हुआ। उस समय उसे और किसीने न पहचाना इतने ही दिनमें उसकी आकृतिका ऐसा परिवर्तन कैसे हुआ कोई कुछ समझ न सका। ललित के व्यारिस्टर तो एक बारगी कह उठे कि यह हमारा असामी ललित नहीं है। मगर विश्वम्भर ने पहचाना और पहचान कर दोनों हाथसे अपना अश्रुजल पोंछता रहा दो दिनमें विचार शेष हुआ।यहाँ भी ललित ने सब सच्ची बातें कहीं थीं। विचारके पहले ही दिन ललित ने जज़ बहादुर से फाँसीके हुक्म की प्रार्थना की विश्वम्भर सजल नयनसे

कचहरी से बाहर चले आये । दूसरे दिन जूरिओं ने एक वारगी असामी को दोषी ठहराया । जजबहादुर की सम्मति भी जूरिओं के साथ मिलगयी । दो घंटे के बाद एक बड़ीराय लिखकर जजने फाँसी का हुक्म सुनाया । विश्वम्भरनाथ रोते २ घर चले आये.

द्वादश परिच्छेद ।

विश्वम्भर इस समय अपने पिताके घर आये हैं । नोट इत्यादि जो कुछ स्थावर पैतृक सम्पत्ति थी इस वक्त एक मात्र विश्वम्भरही समस्त विषयके अधिकारी हुए हैं । ललितने जो कुछ कर्ज्ज किया था विश्वम्भर ने सब का परिशोध किया है.

इसी वक्तसे विश्वम्भर हाईकोर्ट में वकालत करने लगे । और वही वृद्ध शंकर घरके सर्व्व मयकर्ता हुए.

छेदीलाल और अनूपमा अपना घरद्वार छोड़कर इस समय विश्वम्भरहीके घर बास कर रहेहैं आत्मीय स्वजन सभी विश्वम्भर का तत्वावधान करते हैं। अनूपमा घरकी गृहिणी हुई है.

छेदीलाल उसी प्रकार आनंद और उत्सवके साथ दिन बितारहे हैं । अब किसी प्रकार सांसारिक वा विषयिक काम नहीं करते । संध्यां समय बैठकखाना में तास पाशा खेलकी धूम होती है । छेदीलाल इन सब खेलों के प्राणस्वरूप हैं । खेलके साथ २ छेदीलाल की रसिकता से सभी हँस २ कर लहा लोट हो जाते हैं.

विश्वम्भर नाथ मनोमता पत्नी लाभ करके बहुत सुखी हैं । सुशीलाकी तरह बुद्धिमती और धीर व शांति प्रकृति का रमणीरत्न इस संसारमें दुर्लभ है अनूपमाके सुखकी सीमा नहीं हैं, सुशीला उसका अपनी सासकी तरह मान व भक्ति करती और अनूपमा पतोहू कहते २ दिनार्वता हैं.

एक दिन विश्वम्भर नाथ एक अखबार हाथमें लेकर विषन्न मनसे गृहमें बैठे हैं उसी समय वहाँ सुशीला आकर उपस्थित हुई और स्वामी को इस प्रकार देखकर आग्रह के साथ बोली—"क्या सोचरहे हो? तुम्हारा मुँह देख हमें बड़ा डर मालूम होता है."

विश्वम्भर नाथ एक सुदीर्घ निश्वास त्याग कर बोले "सुशीले, तुम अभी लड़की हो सब बात कहकर तुम्हारा प्रफुल्ल मन हम विषन्न क्यो करैंगे ?"

सुशीला आश्चर्य्यित होकर बोली "सो क्या ? तुम्हारी भावना की बात मैं नहीं जानूँगी ? तुम क्या हमे इतनी छोटी समझते हो क्या सोचते हो कहो हमारा मन नजाने कैसा करता है। कुछ अमंगल की बात तो नहीं हैन."

विश्वम्भर कुछ देरतक सुशीलाके मुँहकी ओर देखकर बोले "यह कुछ नये अमंगलकी बात नहीं है हम अपने उसी हतभागे भाईकी बात सोचते हैं कल उसकी फाँसी का दिन है."

इतना कहते २ विश्वम्भर रो उठे। उन्हें रोते देख सुशीलाकी आँखसे भी जल गिरने लगा.

विश्वम्भर तुरंत सुशीला के आँसू पोंछकर बोले "इसीसे तो तुम को बतलाता नहीं था सुशीले ! " सुशीला कुछ सुस्थिर होकर बोली—"तुम्हारे कष्ट से क्या हमें कष्ट न होगा? तुम्हारे दुःख से ही हम दुःखी और तुम्हारे ही सुखसे सुखी हैं। यह बात क्या कहकर तुम्हें जताना होगी ? "

विश्वम्भरनाथ सुशीला की यह बात सुनकर आश्चर्य्यित हुए। एक क्षुद्र हृदयमें ऐसा प्रेम छिप सकता है; विश्वम्भर यह बात पहले नहीं जानते थे। जिस विषादकी छाया ने इतनी देरतक उनके प्रफुल्ल मुख को मेघावृत होकर पूर्ण चन्द्र को आवृत किया था, हठात् वह विषाद मेघ धीरे २ मानो कहा चला गया। विश्वम्भर प्रफुल्ल मनसे बोले "सुशीले ! मैं जानता था कि तुम इस समय भी

बालिकाही हो; तुम्हें इतना ज्ञान हुआ है सो मैंने अनुमान नहीं किया था. ”

सुशीला शिर नीचा कर सलज्जभावसे बोली “तुम्हारे पास रहने से जो बड़ा मूर्ख है उसे भी ज्ञान हो जाता है । तो हमें यदि मूर्ख ही समझते थे तौ मैं तुम्हारे यहाँ रहकर ज्ञानी हुई हूँ. ”

विश्वम्भर इस बार हँसते २ बोले “तुमने यह सब कहाँसे सीखा सुशीले! विवाह के पहले तो तुम हमें देखकर ऊर्द्धश्वास से भाग जाती और उस सौभाग्य रात्री की बात याद है? मैं जब तुम्हारे मुँह की ओर देखता तब तुम किस तरह आँख मूँदती । देखा देखी होनेपर तो मानो एक बारगी लज्जावती लता हो जाती वह एक दिन था और आज एक दिन है क्यों सुशीले?”

सुशीलाभी इस बार ईषत् हंस कर बोली “ तुम बड़े यह हो तुमने तो हमें ऐसा बनाया है ” तब हम में ऐसा न होता; मन ही मन जानती कि तुम्हीं हमारे सर्वस हो तुम्हारा ही सुखी होना हमारा सुख है और तुम्हाराही दुःख हमें दुःख है. मगर वह केवल जाननाही भर था । लोगों के मुँह से सुनती कि लोग पोथी पढ़ते हैं कुछ जानने के लिये । मगर इस समय तुम्हारे सुखसे हमें सुख और तुम्हारे दुःखसे हमें दुःख कैसे—सो सब समझा है मगर वह हम ही समझती हैं तुम्हें नहीं समझा सकती ”

विश्वम्भरनाथ सुशीला की बात सुनकर एक बारगी मोहित होगये हैं। उस सरला बालिका की ऐसी बातों को सुनकर कौन नहीं मोहित हो सकता?

विश्वम्भरनाथ यह सब बातें सुनते २ जगत् संसार सभी भूलगये थे। अपने अस्थित्व की बाततक का उन्हें ध्यान नहीं था, सुतरां पहले जो मनही मन ललित के शोचनीय परिणाम को सोचकर विषाद सागर में डूबे हुए थे. उस विषाद की बातें क्रमशः भूल गये हैं हम इसके लिये विश्वम्भर वा सुशीला को दोष देंगे? इसी समय

हठात् उस अखबार पर फिर नजर पड़ी नजर पडतेही पहले की सब बातें याद आगयीं विश्वम्भर का मुख फिर विषन्न हुआ विश्वम्भर विषन्न मनसे क्या. सोचने लगे. इसी समय एक सेवकने एक सरकारी लम्बा लिफाफा मालिक के हाथमें दिया. विश्वम्भर ने सरकारी लिफाफा देखकर तुरंत उसे खोला. पत्र प्रेसीडेन्सी जेलके सुपरिन्टेण्डेण्ट के यहां से आयाहै.

उस पत्रमें ललित के साथ भेट करने का उसकी इच्छा बताकर कल सबेरे छः बजे के पहले विश्वम्भरनाथ को वहां जाने के लिये विशेष अनुरोध किया गया है.

विश्वम्भरने उस पत्र को पढ़ करके विषन्न मुख नीचे कर लिया और सुशीला कम्पित हृदयसे उसी अवनत विषन्न मुखको सतृष्णा नेत्रों से देखती रही.

त्रयोदश परिच्छेद ।

तीन बजे रातसेही मूसलधार वृष्टि आरम्भ हुई हैं; बीच बीचमें भीषण वज्रनाद भी चारों ओर कम्पित कर रहा था । उस भयङ्कर गर्जनकी शेष रात्रिमें और किसे नींद नहीं है हवाके हुंकारसे भी प्राण आतङ्कसे शिहर उठता है । आज मानो एकबारगी प्रलय उपास्थित है । प्रातःकालको वृष्टिक ह्रास हुआ था मगर बादलकी गर्ज्ज और टिपटिप बूँदें उस वक्त भी बंद नहीं हुई थी उस वक्त भी आकाश अंधकारमय था । सबेरे अंधकारकी कमी नहीं हुई । आज किसीने सूर्य्योदय नहीं देखा.

इसी दुर्य्योगमें बड़े तड़के विश्वम्भरनाथ प्रेसीडेन्सी जेल जाने को प्रस्तुत हुए; जिन्दगी भरके लिये ललितके साथ साक्षात् करने का सुयोग न छोड़सके आज विश्वम्भरके हृदयमें जो हो रहा था; उसे हम वर्णन कर पार नहीं पासकते । बाहरकी अवस्था जैसी शोचनीय है उनके हृदयकी अवस्था भी उसी प्रकार शोचनीय है बड़े कष्टसे एक गाड़ी भाड़ा करके प्रेसीडेन्सी जेलमें पहुँचे और

अपने नाम का एक कार्ड जेलखानेके बड़े साहबके निकट भेजा एक सिपाही आकर विश्वम्भर नाथ को पहले बड़े साहब के यहां लिवागया। वहां साहब के साथ दो चार बातें होने पर एक अंगरेज कर्म्मचारी उन्हें ललित के निकट ले चला। उस समय उनके मुँहमें और कोई बात न थी विषन्न मनसे साहब के साथ धीरे २ चले। कैदियों के सब घरों को पार करके अन्त में एक क्षुद्र गृह के सन्निकट वे दोनों आकर उपस्थित हुए। एक देशी डाक्टर भी वहाँ आकर खड़े हुए, साहब ने एक सिपाही को किवाँड़ खोलने की आज्ञा दी किवाँड़ तुरंत खोला गया उसके बाद भीतर से कैदी को बाहर आने का हुक्म हुआ तब धीरे २ शृंखला बद्ध ललित कुमार बाहर आया। ललित को देखते ही विश्वम्भर की रुलाई रुक न सकी उच्चः स्वर से रो उठे। ललित ने भी रोते २ दौड़कर विश्वम्भर को आलिङ्गन कर के पकड़ा। कुछ देरतक दोनों भाई इसी प्रकार रोते रहे फिर विश्वम्भर चिल्ला उठा "भैया-भैया-भैया हमने तुम्हारे ऐसे भाई को "भैया" कह कर नहीं पुकारा!इसी से कहते हैं भैया-भैया-भैया" विश्वम्भर और कुछ न कह सके। उनका कंठस्वर रुद्ध हो गया। तब ललित रोते २ विश्वम्भर नाथ के पैर पड़ लोट कर बोला-"भैया हमें क्षमा करो हमारा सब अपराध क्षमा करो तुम्हारे क्षमा न करने से हमें कुछ उपाय नहीं है। हमारे समान नराधम और कौन है? हमने अपने ऐसे भाई के अनिष्ट साधने की चेष्टा की है! हमें क्षमा करो २ हममें कोई गुण नहीं है तुम अपने ही गुणसे हमें क्षमा करो."

विश्वम्भर नाथ उच्चःस्वरसे रोते २ आदर पूर्व्वक ललित को छाती से लगाकर बोले-"तुम्हारा कोई दोष नहीं है तुमने जैसी शिक्षा पायी है वैसाही काम किया है अपने सम्बन्ध में तो तुम्हारा कोई दोष हम नहीं देखते भैया! हम मुक्तकंठसे कहते हैं तुम हमारे किसी प्रकार के अपराधी नहीं हो। तौ भी तुमसे हम कुछ कह न सके इसीके लिये हमारा हृदय फटता है! तुम ईश्वर के निकट भयङ्कर अपराध के

अपराधी हुए हो तुम्हारी मुक्ति के लिये हम उसके निकट प्रार्थना करेंगे। तुम ईश्वरसे क्षमा प्रार्थना करो; तुम हमारे निकट अपराधी नहीं हो । "

ईश्वरका नाम सुनकर ललित मानो सिहर उठा । उस पवित्र नामसे पापीके हृदय में भय सञ्चार हुआ ललितने पहले सजल नेत्र विश्वम्भर के मुँह की ओर देखा फिर डरते २ कहा "उनके यहाँ हमारे ऐसे पापी के लिये क्षमा है ! यह प्रार्थना क्या उनके निकट पहुँच सकती है ? "

विश्वम्भरनाथ दीर्घ निश्वास त्यागकर बोले "उनकी अनंत दया है असीम क्षमा गुण है । वे जब कि खुद अपने हाथ नित्य प्रति कोटि २ पापियोंको आहार जुटाते हैं तो उनके समान क्षमागुण और किसके पास है ?"

इसी समय जेलखानाके उसी साहबने पाकेटसे घड़ी देखकर विश्वम्भर बाबूसे अंग्रेजीमें कहा "बाबू हम और बिलम्ब नहीं कर सकते । ठीक साढे छः बजे फाँसी देनी होगी । इस समयसे एक क्षण भी इधर उधर नहीं होगा."

उसी समय और दो तीन देशी व अंगरेज कर्म्मचारी वहाँ आकर उपस्थित हुये उन लोगोंने भी ललित को लेजानेके लिये व्यग्रता दिखाई मगर उस समय भी ललित विश्वम्भर से लिपट करके रोने लगा और विश्वम्भर भी रोते २ उसको प्रबोध देने लगे इसी समय दो तीन आदमियोंने जबरदस्तीसे ललित को छुड़ा लिया और वहाँसे ले चले । विश्वम्भर सजल नयन होकर ललितकी ओर देखते रहे । इतनेमें डाक्टर बाबूने ललितसे पूछा "यह तुम्हारा कौन है?"

ललितने उच्च स्वरसे रोते २ चिल्लाकर कहा हमारा "बड़ाभाई."

बड़ाभाई चतुर्थ खण्ड समाप्त ।

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-(मुंबई.)